अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा का मुखपत्र

स्थापना : 1918

गोलापूर्व जैन

» वर्ष : 18 » अंक : 56 » फरवरी 2023 » मूल्य : 15 रु.

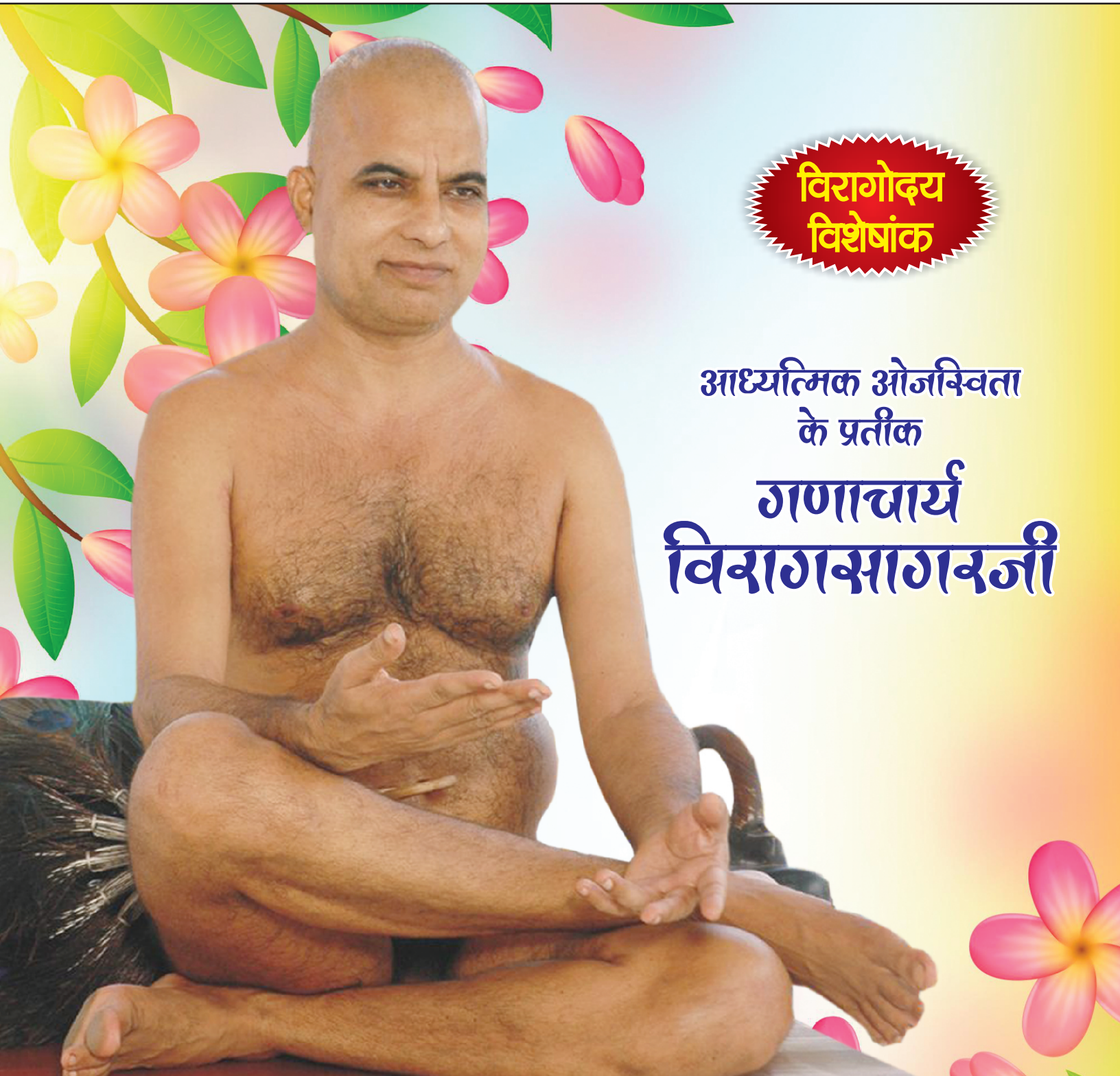

विरागोदय विशेषांक

आध्यात्मिक ओजस्विता के प्रतीक

गणाचार्य विरागसागरजी

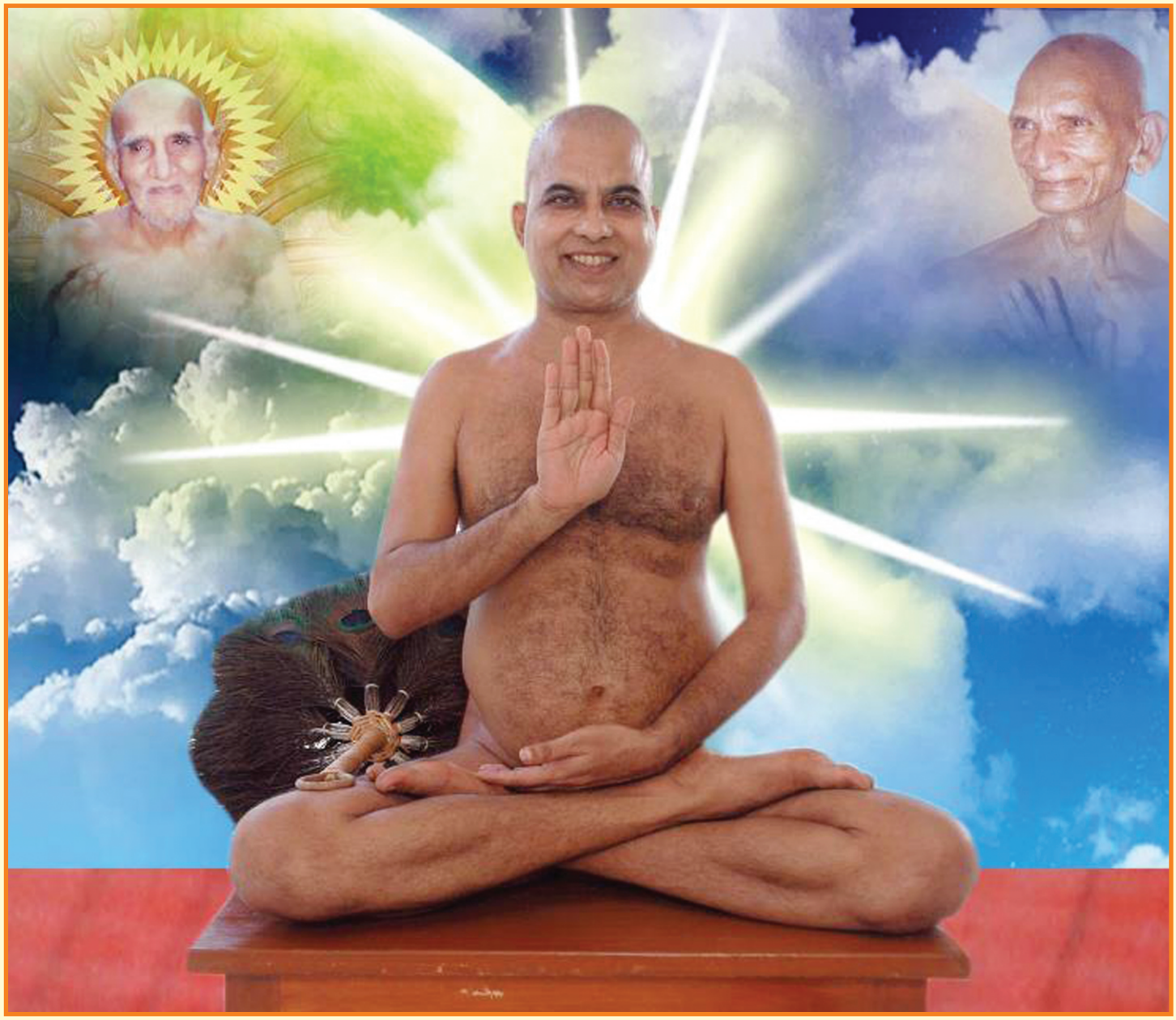

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा का मुखपत्र : 1918

गोलापूर्व जैन

(त्रैमासिक)

■ वर्ष : 18 ■ अंक : 56 ■ फरवरी 2023 ■ मूल्य : रु. 15 ■ आजीवन : रु. 501

संस्थापक संपादक

स्व. पं. मुन्नालालजी रांधेलीय न्यायतीर्थ

(1893-1993, सागर)

परामर्श प्रमुख

डॉ. शीतलचंदजी जैन

जयपुर (मो. 09414783707)

प्रबंध सम्पादक

राहुल जैन 'बरायठा'

(मो. 9630101717)

प्रधान सम्पादक (मानद)

राजेन्द्र जैन 'महावीर'

सनावद

(मो. 9407492577, 9826299568)

ई-मेल : rjainmahaveer@gmail.com

सह सम्पादक (मानद)

श्रीमती (डॉ.) रंजना पटोरिया

कटनी

(मो. 9827279009)

प्रकाशक एवं प्रधान कार्यालय

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा

(रजिस्ट्रेशन नं. 06/09/01/06188/07)

द्वितीय तल, तीर्थंकर परिसर, डॉ. पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य मार्ग

कटरा बाजार, सागर (म.प्र.), मो. 9977008089

ई-मेल : golapurvmahasabha@gmail.com

महासभा की सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक	:	1,00,000.00
परम संरक्षक	:	51,000.00
विशिष्ट संरक्षक	:	31,001.00
गौरव संरक्षक	:	21,000.00
संरक्षक	:	11,000.00
विशिष्ट सदस्य	:	5,101.00
सहयोगी सदस्य	:	2101.00
आजीवन सदस्य	:	501.00
वार्षिक सदस्य	:	240.00

अनुरोध

कृपया महासभा के उपरोक्तानुसार श्रेणी में सदस्य बनें एवं जिन सम्माननीय सदस्यों की सदस्यता राशि/विज्ञापन राशि बकाया है, कार्यालय में शीघ्र भेजकर सहयोग प्रदान करें।

आवश्यक : ● लेखक के विचारों से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ रचनाएँ कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर स्वच्छ हस्तलिखित अथवा टाइप की हुई आना चाहिए। समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भिजवाना आवश्यक है। आयोजनों तथा अन्य अवसरों के समाचार संक्षेप में भेजें। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएँ, लेख, कविता, कहानी, समाचार एवं समीक्षार्थ पुस्तकें **राजेन्द्र जैन 'महावीर', 217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.) 451111,** ई-मेल rjainmahaveer@gmail.com, पर भेजें।

(पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र सागर ही रहेगा।)

निवेदन पाठकों से

'गोलापूर्व जैन' पत्रिका के पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका को स्थायित्व प्रदान करने के लिए आजीवन रु. 500 या वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 50 कार्यालय में नकद या ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करते रहने की कृपा करें। घर में होने वाले मांगलिक कार्यों में घोषित दान भेजें। **-संपादक**

प्रकाशक : अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा, प्रधान कार्यालय : तीर्थंकर परिसर, नमक मंडी, कटरा बाजार, सागर के लिए अरिहंत ऑफसेट, सागर से मुद्रित। लेआउट/डिजाइन : नितिन पंजाबी, वी.एम. ग्राफिक्स, इंदौर (मो. 098931-26800)

संपादकीय

आध्यात्मिक ओजस्विता के प्रतीक

आचार्यश्री विरागसागरजी

राजेन्द्र जैन 'महावीर'

हिन्दी के शब्दकोश के अनुसार 'अरविंद' का अर्थ 'कमल' होता है। यदि कमल को हम देखें तो पाते हैं कि कमल हमेशा कीचड़ में ही खिलता है। लेकिन यह भी तय है कि वह सूर्य के प्रकाश के साथ ही उदित होकर सूर्य की आभा के साथ खिलता चला जाता है। उसके पत्ते पानी में रहकर भी पानी की एक बूँद भी ग्रहण नहीं करती है।

इसी प्रकार हम देखते हैं कि सांसारिक नाम को उन्होंने गुरु सान्निध्य में सार्थक किया और गुरुदेव ने भी नाम दिया 'विराग'। 1 दिसंबर 1983 को गुरुमुख से पाया नाम आज आध्यात्मिक ओजस्विता का प्रतीक बन गया है। उनकी आध्यात्मिक प्रतिभा को देखना हो तो उनके शिष्य मंडली में देखी जा सकती है। जैन दर्शन के प्रचार के लिए उन्होंने ऐसे अनुपम शिष्य गढ़े जो आज अध्यात्म के क्षितिज पर ध्रुव तारे के समान चमक रहे हैं। जब हम उनका जीवन परिचय पढ़ते हैं तो पाते हैं कि आपने मुनि दीक्षा के साथ थूकने का त्याग कर दिया जो एक बड़ा ही कठिन नियम है। हमने देखा है कि वे अपने नाखून नहीं काटते क्योंकि नेल कटर आदि सामग्री का उन्होंने त्याग कर रखा है। वे पत्थर पर अपने नाखून घिस लेते हैं। यह उनका गजब का दृढ़ संकल्प है। जिन्होंने आधि-व्याधि-उपाधि आदि सब कुछ का त्याग कर दिया है, जिन्हें राग-द्वेष से भी कुछ लेना-देना नहीं। वे स्वयं विराग हैं। सबको वीतराग मार्ग की शिक्षा प्रदान करते हैं।

उन्हें बुंदेलखंड के प्रथमाचार्य होने का गौरव प्राप्त है। लेकिन मेरा यह मानना है कि उन्हें एक ऐसे आचार्य होने का भी गौरव है जिन्होंने दिगंबर होने की कला को स्वयं सीखा और अन्य को भी इतना सिखाया व स्वयं के समान बना लिया। शताधिक साधु वृंदों का सृजन कर उन्होंने एक इतिहास रचा है। यह सब उन्होंने उस दौर में किया जब जैन धर्म को इसकी आवश्यकता थी। उनकी शिष्य मंडली उच्च शिक्षित होकर प्रवचन कला में इतनी माहिर है कि अनेक युवा जैन धर्म की

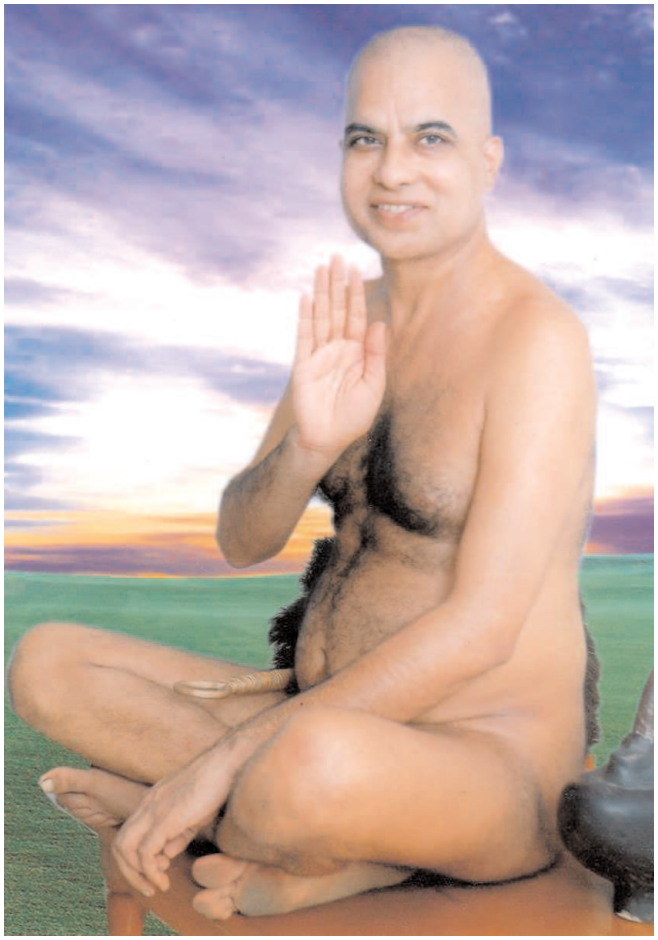

प्रासंगिकता को स्वीकार कर रहे हैं।

उनकी जन्म स्थली पर 'विरागोदय' तीर्थ का निर्माण होना व वहाँ यति सम्मेलन का होना एक ऐतिहासिक कार्य है। 'गोलापूर्व जैन' ने पूज्यश्री के प्रति अपनी विनयांजलि व्यक्त करते हुए विशेषांक समर्पित करने का निर्णय लिया है। इस कार्य में संघस्थ साधुगणों के साथ डॉ. आशीष जी जैन का सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनके आभार के साथ विज्ञापन दाताओं व पाठकों का भी हार्दिक आभार।

आशा है आध्यात्मिक ओजस्विता के प्रतीक पूज्यश्री के कार्यों को जन-जन तक पहुँचाने में यह विशेषांक पाठकों को पसंद आएगा।

■ निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य, श्रेष्ठ फल पाता है।

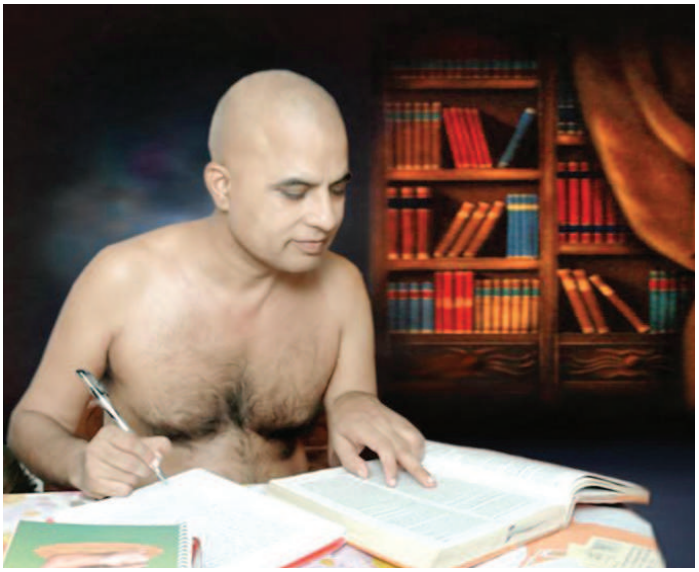

यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण

गणाचार्य विरागसागर महाराज

उक्त दोनों शब्दों को सुनते ही जिज्ञासा होती है कि यह सब क्या है? क्या है इसका अर्थ? इसे समझाने का एक लघु प्रयास हम करते है।

यति सम्मेलन

यति सम्मेलन यह दो शब्दों से मिलकर बना एक वाक्य है, जिसका अर्थ हुआ कि यतियों के सम्मेलन को 'यति सम्मेलन' कहते है, यद्यपि 'यति' का अर्थ है, बारहवें गुणस्थानवर्ती मुनि तथापि यहाँ रूढ़िवशात् जो रत्नत्रय की साधना का यत्न करते हैं उन्हें 'यति' कहते हैं।

आचार्य वीरसेन स्वामी लिखते हैं - सौराष्ट्र देश के गिरिनागर (गिरिनार) पट्टण की चंद्रगुफा में विराजमान अष्टांग महानिमित्त -पारंगत (वयोबृद्ध आचार्य धरसेन जी ने) ग्रंथ व्युच्छेद होने के भय से प्रवचन वात्सल्य से दक्षिण देशवासी आचार्यों के महिमा नगर में होने वाले ''यति सम्मेलन'' में एक लेख (पत्र) भेजते हैं। - धवला पु . 1-खण्ड 1-सूत्र 1-पृ. 98। यही बात षट्खण्डागम सिद्धान्त चिन्तामणि टीका में (1-1-1-पृ. 90) इस प्रकार लिखी है कि - सौराष्ट्र देश के गिरनार की चंद्रगुफा में ठहरे हुये - अष्टांग महानिमित्त पारंगत श्री घरसेन आचार्य ने एक दिन मन में विचार किया कि आगे अंगश्रुत का व्युच्छेद (नष्ट) हो जायेगा। अतः किसी भी उपाय से उस अंगश्रुत की रक्षा के लिये प्रयत्न करना चाहिये। तो पंचवर्षीय साधु सम्मेलन में सम्मिलित दक्षिण देशवासी आचार्यों के पास एक (पत्र) लेख भेजा।

इन दोनों प्रामाणों से यह बात सिद्ध होती है कि आज से लगभग वी. नि. स. 565 वि.स. 95 - तथा ई. सन् 38 में आचार्य अर्हद्बली हुये इंद्रनंदी श्रुतावतार में आपका दूसरा नाम पुण्यवर्धनपुरवासी गुप्तिसागर नाम था, आप अष्टांग महानिमित्त ज्ञानी तथा अंगांश के ज्ञाता थे आप प्रत्येक पाँच - पाँच वर्षों में यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण किया करते थे।

पांच वर्ष का एक युग होता है इसलिये इसे 'युग सम्मेलन' भी कहते है। इस सम्मेलन में सौ योजन (लगभग 1200 कि.मी.) दूर तक के दिगम्बर जैन श्रमणगण धर्म वात्सल्य भाव से आ - आकर सम्मिलित होते थे।

आचार्य विद्यानंद जी ने अपनी ''स्वानंद विद्यामृतम्'' पुस्तक में लिखा है कि उक्त सम्मेलन में लगभग एक लाख मुनिगण सम्मिलित हुये थे। यति सम्मेलन की परंपरा आज भी प्रचलित है - श्रवणबेलगोला में प्रत्येक 12 वर्षों में होने वाले बाहुबली महामस्तकाभिषेक में प्रायः सभी संघ परंपराओं के साधुजनों का सम्मेलन नियम से होता है, अन्य स्थानों पर भी यथासंभव यति सम्मेलन होते रहे हैं।

यति सम्मेलन की आवश्यकता

स्वतंत्र विचरण करते हुये पृथक-पृथक संघों में देशकाल परिस्थिति वश विभिन्न गुण दोषों की संभावनाएं बढ़ जाती है, विभिन्न प्रकार की जिज्ञासायें भी बढ़ जाती है जिनका प्रामाणित समाधान हुये बिना या तो वे तत्व संदेहता को उत्पन्न कर परिणामों में विकलता उत्पन्न करती है। अथवा अपने-अपने विचारानुसार चलने के लिये प्रेरित करती है जिससे आज के विचार भेद आने वाले समय में मतभेद और फिर मनभेद खडाकर स्वतंत्र मत, पंथ अथवा संप्रदाय का कारण बन जाती है। 'मैं' और 'मेरा' संघ, पंथ, परंपरा की संकीर्णता में व्यक्ति बंधा रह जाता है। इन सब बातों से आपसी वात्सल्य समाप्त होता हैं, मैं सत्य वह झूठा इत्यादि रूप से कलह खड़ी होती है साधु व समाज में विघटन होता है एकता संगठन समाप्त होता है। ऐसा न हो इसीलिये सम्मेलनों की अत्यधिक आवश्यकता है। यद्यपि प्रत्येक संघ, पंथ, परंपरा के साधुओं का सम्मेलन होना नितान्त आवश्यक है। समग्र जैनाचार्यों में कोई एक नायक होना आवश्यक है जो सभी को अपनी वाणी व्यवहार एवं दूरदृष्टि से बांध सके यद्यपि यह सब श्रमसाध्य एवं अर्थसाध्य कठिन जरूर है पर असंभव नहीं है। मेरा तो केवल लघु प्रयास है।

सम्मेलन की पात्रता

जो साधु सम्यग्दृष्टि हैं, रत्नत्रय सम्पन्न है, भय भीरू है, दूरदृष्टि वाले है, आत्मधर्म और व्यवहार धर्म के संरक्षक एवं संवर्धक हैं, निरहंकारी हैं, विनयवान हैं, मृदुभाषी हैं। समस्याओं को उलझने या उलझाने में नहीं, किन्तु सुलझने और सुलझाने में कुशल हैं। जो निश्चल प्रवृत्ति वाले हैं, अर्थात् प्रत्यक्ष और परोक्ष में एकता रखते है। जो अपने जिनेन्द्र देव, परम्पराचार्य एवं दीक्षा गुरु की आज्ञा व अनुशासन के सांचे में स्वयं ढ़लते हैं और अपने शिष्यों-भक्तों को ढालते हुये एकता का शंखनाद करते हैं। जो भावुक नहीं किन्तु सन्मार्ग दिखाकर सही आगमिक प्रकाश दे मोक्षमार्ग पर लगाते है। जो 'स्वार्थ की दुर्गन्ध से रहित हो स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या करते है'।

■ बैल चलते रहें तो बैलगाड़ी में सहजता से गति आ जाती है।

सम्मेलन में क्या होता है

''साधु सम्मेलन'' एक बोलता मूलाचार है जिसमें अच्छे और सच्चे साधुओं की वचन गुप्ति या भाषा समिति का परिचय होता है। उनके आगम ज्ञान की गहराई का ज्ञान होता है। उनकी आगमिक चर्चा का ज्ञान होता है। उनमें निःशंकितादि सम्यग्दर्शन के अष्टांगाचरण के दर्शन होते है। ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार के दर्शन होते हैं वे इनका कैसे पालन करते हैं तथा कैसे पालन कराते है इस कला का परिज्ञान होता है, उनके तात्विक, सामाजिक प्रवचनों का लाभ होता है, उनके पूजा, भक्ति, आहारदान, वैय्यावृत्ति का अवसर मिलता है साथ ही भगवत भक्ति के साथ विभिन्न कार्यक्रम के साथ जीवन भर के दोष प्रक्षालन हेतु प्रतिक्रमण सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

साधु सम्मेलन की महत्वपूर्ण विशेषता

साधु सम्मेलन के दो तरीके है -

1. मात्र उपस्थिति दर्ज कराके गुरु भक्ति आज्ञा अनुशासन सौहार्द्रता पूर्ण अपने विशाल व्यक्तित्व के साथ आपसी एकता व संगठन का परिचय देते हुये स्वयं प्रसन्न रहते हुये सभी को प्रसन्न रखना।

2. समय-समय पर उत्पन्न हुई समस्याओं को विनय एवं मर्यादा के साथ भक्तिपूर्वक प्रस्तुत कला तथा गुरु जो समाधान दे उसे सहर्ष स्वीकार करना।

क्योंकि प्रस्ताव रखने में सभी स्वतंत्र होते, किन्तु प्रस्ताव पारित करने में सभी स्वतंत्र नहीं किन्तु गुरु ही दूरदृष्टि से आगम एवं परिस्थिति को समझ अन्तिम निर्णय देते हैं। कभी-कभी वे बिना प्रस्ताव के भी यदि कहीं शिथिलता या स्वच्छंदता देखते हैं तो कन्ट्रोल करते आवश्यक नहीं कि वे अपनी बात शि'यों के सम्मुख रखे और शिष्यगण उसे पारित करें। अन्यथा निर्णायक का कोई महत्व नहीं रहेगा। इन सबमें बहुमत नहीं किंतु आगम व गुरु मत प्रधान होता है।

प्रस्ताव रखने की पात्रता

जो स्वयं आज्ञानुवर्ती एवं अनुशासनशील हो, जो सम्यक् रूप विनम्र हो, मर्यादाओं का ज्ञाता है और इतना धैर्य शील हो कि यदि उसके प्रस्ताव को मान्य न किया जाये तो उत्तेजित न हो और न ही अपनी श्रद्धा भक्ति को तोड़ गुरुपबाजी करने लगे, जो निर्णय दिया जाय उसे फिर पालन करे उनमें किन्तु परन्तु न करें।

समाधान का तरीका

प्रत्येक समाधान आगमिक होना चाहिये उसमें केवल युक्ति व तर्क नहीं होना चाहिये क्योंकि युक्ति व तर्क वही सही होता है जो आगम की पुष्टि करे, जिससे आगम खण्डित होने लगे वह युक्ति व तर्क प्रामाणित नहीं होते, मान्य नहीं होते।

दूसरी बात हम अपनी प्राचीन गुरु परंपरा को किसी के कहने पर या डर, भय, लालच या हंसी में उसे गलत न सिद्ध करें। क्योंकि गुरु, गुरु होते हैं, हम गलत हो सकते है किन्तु गुरु गलत नहीं होते। फिर पुरातन काल से चली आ रही परंपराएँ गलत कैसे हो सकती है?

यदि हमें उनमें कोई गलती दिखती हैं तो हम उनकी मर्यादा रखते हुये अलग से उन्हें स्मरण करा सकते हैं और इसका पूर्ण विश्वास रखते हैं कि हमारे गुरु विशाल हृदय वाले हैं। यदि कोई वास्तविक गलती है तो उसे वे स्वीकार कर संशोधन करते हैं। किंतु किसी के अहंकार के दबाव में अथवा आज्ञा विहीन, अनुशासन विहीन, कर्तव्य विहीन, छली, उद्दण्डी की बात को कभी भी स्वीकार नहीं करते हैं। यद्यपि सच्चे साधू इतने महान होते है कि वे स्वयं ही आत्मनिरीक्षण कर दोष प्रमार्जन करते हैं। सम्मेलन के अन्त में सभी एक साथ बैठकर भाव विशुद्धि के साथ युग प्रतिक्रमण करते हैं।

प्रतिक्रमण एवं युग प्रतिक्रमण -
जीवे प्रमाद जनिताः प्रचुराः प्रदोषः,
यस्मात्प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति।
तस्मात्-तदर्थ-ममलं मुनि-बोधनार्थं,
वक्ष्ये विचित्र-भव-कर्म-विशोधनार्थं।।

-'प्रतिक्रमण पाठ'

अर्थात् जीव में प्रमाद-आलस्य, क'ाय अज्ञानतावश बहुत सारे दोष उत्पन्न होते रहते हैं वे सभी दोष जिस प्रतिक्रमण से प्रलय को प्राप्त होते हैं इसलिये उन दोष-अतिचार-अपराध-गलतियों इत्यादि सांसारिक कर्मों से विशुद्धि को लिये मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविकाओं के लिये निर्मल प्रतिक्रमण कहूँगा।

प्रतिक्रमण विधि

पापिष्ठ, दुरात्मा, जड़बुद्धि, मायावी लोभी तथा राग द्वे'ा से मलीन मन के द्वारा जितने दुष्कर्म निर्मित हुए हैं - हे त्रैलोक्याधिपति जिनेन्द्र! आपके श्री पादमूल में आज मैं उन सब की आत्म निंदा (गर्हा) पूर्वक हमेशा के लिये त्याग करता हूँ। सत्पथ अच्छे-सच्चे पथ पर चलने की प्रतिज्ञा लेता हूँ।

सभी जीवों को मैं क्षमा करता हूँ, सभी मुझे क्षमा करें, मेरी सभी जीवों के प्रति मित्रता है, किसी के प्रति भी मेरा बैर नहीं है।

हाय। मैंने काय के द्वारा दुष्ट कार्य किये। हाय! मैने मन के द्वारा दुष्ट चिंतन किया। हाय! मैंने वचन के द्वारा दुष्ट भाषा बोली। उस सबको स्मरण करता हुआ, अन्तरंग में पश्चाताप की अग्नि वेदना में जल रहा हूँ।

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में जो मैंने अपराध किये है उन्हें संशोधित (दूर) करने के लिये मैं आत्म निंदा (गलती की स्वीकारता) गर्हा (पश्चाताप) से युक्त होकर मन -वचन-काय से प्रतिक्रमण करता हूँ।

एसो पडिक्कमण विहि, पण्णत्तो जिणवरेहिं सव्वेहिं।
संजम तवट्ठिदाणं, णिग्गंथाणं महरिसीणं।।

-'बृहद प्रतिक्रमण'

यह प्रतिक्रमण विधि संयम तप में स्थित निर्ग्रन्थ ऋषियों-गृहस्थों के लिये समस्त जिनवरों ने कही है।

प्रतिक्रमण के भेद

पडिकमणं देवसियं रादिय इरियापधं च बोधव्वां।
पक्खिय चादुम्मासिय संवच्छरमुत्तमट्ठं च।।

-मूलाचार, अध्याय 7, गा. 2

■ प्रकृति अपने साथ किए हर अपराध का बदला अपने विशिष्ट तरीके से लेती ही है।

दैवसिक, रात्रिक, ईर्यापथिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक, सांवत्सरिक तथा उत्तमार्थ ये सात प्रकार के बृहत् प्रतिक्रमण है।

यही प्रमुख सात नाम नियमसार टीका में गिनायें हैं। विशेषता यह है वहाँ पांचवर्ष के अंत में युगप्रतिक्रमण करना चाहिए। यह युगप्रतिक्रमण नाम वाला भी सांवस्सरिक प्रतिक्रमण होता है।

लुंचे रात्रौ दिने भुक्ते निषेधिकागमने पथि।
स्यात् प्रतिक्रमणालघ्वी, तथा दोषे तु सप्तमी।

-अनगार धर्मामृत अ .8, श्लोक.....

केशलोंच प्रतिक्रमण, रात्रिक प्रतिक्रमण, दैवसिक प्रतिक्रमण, गोचर प्रतिक्रमण, निषिद्धिका गमन प्रतिक्रमण, ईर्यापथ प्रतिक्रमण और अतिचार प्रतिक्रमण ये सात लघु प्रतिक्रमण है।

यद्यपि बृहद् तीन प्रतिक्रमण में लघु प्रतिक्रमण समाविष्ट हो जाते हैं, यथा- ईर्यापथ प्रतिक्रमण में - निषिद्धिका

दैवसिक प्रतिक्रमण में - ईर्यापथ, लोच, गोचर

रात्रिक प्रतिक्रमण में - अतिचार प्रतिक्रमण, गर्भित हो जाता है।

युग प्रतिक्रमण – पाँच वर्षों के समूह को युग कहते हैं। अतः पाँच वर्षों में होने वाले प्रतिक्रमण को युग प्रतिक्रमण कहते है। और पाँच वर्ष के अन्त में किये जाने वाला युग प्रतिक्रमण नाम वाला भी प्रतिक्रमण सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में समाविष्ट हो जाता है।

अतः पूर्व कथित - *दैवसिक-रात्रिकैर्यापथिक-पाक्षिक-चातुर्मासिक-सांवत्सरिको प्रमार्थिक-नामधेयाः सप्तैव प्रमुख वर्तन्ते। एवं पंचवर्षान्ते कर्तव्या युगप्रतिक्रमण- नामधेयापि सांवत्सरप्रतिक्रमणाया वर्तन्ते।*

-नि. सा. प्रा . स्याद्वाद चंद्रिका टीका गा. 82 पृ. 133

उक्तं आनगार धर्मामृत ग्रन्थे -

तथा पंच संवत्सरान्ते विधेयायौगान्तो
प्रतिक्रमणा संवत्सर प्रतिक्रमायामन्तर्भवन्ति ॥

-अध्याय 8 श्लोक 58 की टीका

अनगार धर्मामृत में भी यही कहा है -

''तथा पाँच वर्ष के अन्त में किया गया युग प्रतिक्रमण सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में अन्तर्भूत हो जाता है।

युग प्रतिक्रमण की परंपरा प्राचीन थी

नंदि संघ की पट्टावली में कथित आचार्य अर्हद्वली (गुप्तिसागर) के काल की उत्तरावधि वी. नि. स. 575 है तदनुसार यदि उक्त संवत में 5 का भाग दे तो यतिसम्मेलनों की संख्या 113 प्राप्त होती है। तथा श्री धरसेनाचार्य की उत्तरावधि वी. नि. सं. 633 निर्धारित की गई है। दोनों आचार्यों का काल एक होने पर भी 58 वर्ष का अंतर है।

यह इतिहास का विषय है इसमें मैं अभी नहीं जाना चाहता हूँ, यहाँ इतना ही जानना पर्याप्त है कि यदि समकालीन अर्हद्वली का काल 633 माना जाय तो (633ग5) 122 के लगभग यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण की संख्या का प्रमाण निकलता है। - सार संक्षेप (जै. सि. को. भा. 1 पृ. सं. 484)

''यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण का वर्णन धवला पु. 1-1-1, ध. पु. 9-4-1, 49-133 षट्खण्डागम सिद्धान्त चिन्तामणि टीका, आराधना कथा कोष, नियमसार टीका, जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष, इंद्रनन्दि श्रुतावतार आदि ग्रन्थों से सविस्तृत जानना चाहिये।

वर्तमान में सम्मेलन तो हुये हैं पर युगप्रतिक्रमण कभी कदाचित् हुये हैं जैसा कि ''गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी'' ने ''मेरी स्मृतियाँ'' ग्रन्थ में लिखा है कि - ''पुण्ड्रवर्धक पुरवासी आचार्य अर्हद्वली (गुप्तिसागर) ने आन्ध्रप्रदेश स्थित वेणा नदी के तट पर बसे वेणानगर-महिमानगर में वि. नि. स. 575, वि. सं. 105, ई. सन् 48 में 115 वाँ युगप्रतिक्रमण किया था, जिसमे सौ योजन (लगभग 1200 कि.मी.) दूर तक से कुल मिलाकर 1 लाख साधु-समूह उपस्थित हुआ था। संभवतः उनकी समाधि के बाद यह परंपरा यतिसम्मेलन तक मात्र सीमित रह गई। जिसका साक्षात् उदाहरण श्रवणबेलगोला में होने वाला बारह वर्षीय महामस्तकाभिषेक में दूर-दूर से चलकर मुनिसंघ सम्मिलित होते हैं पर वह केवल महामस्तकाभिषेक तक ही सीमित रहते हैं, पश्चात् बिहार कर जाते हैं। 1981 के महामस्तकाभिषेक में एक महत्वपूर्ण कार्य हुआ, वह यह कि परम पूज्य आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज की अध्यक्षता में तथा प. पू. आचार्य गुरुदेव विमलसागर जी की उपाध्यक्षता में तथा ऐलाचार्य विद्यानंद जी के दिशा निर्देशन में यतिसम्मेलन का वास्तविक रूप कुछ उभरा, किन्तु बाद में फिर वैसा नहीं हो सका। यति सम्मेलन की परंपरा अन्यत्र भी देखी गई। यथा

प. पू. गणाधिपति कुंथुसागर जी के सानिध्य में हुए सन् 2005 में कुंथुगिरि के पंचकल्याणक के अवसर पर। प. पू. आचार्य विद्यासागर जी के सानिध्य में सन् 2006 में कुण्डलपुर के बड़े बाबा की मूर्ति विस्थापित के अवसर पर। इसी प्रकार सन् 2006 में आचार्य श्री गुणधरनंदी की प्रेरणा से नवोदित तीर्थ नवग्रह क्षेत्र में पंचकल्याणक के अवसर पर। हमारे संघ में भी करीब आठ बार संघ सम्मेलन हुये, यथा -

1. सन् 1998 - 99 भिण्ड में
2. सन् 2002 श्रेयांसगिरी में
3. सन् 2003 बीना में
4. सन् 2003 ललितपुर में
5. सन् 2006 श्रवणबेलगोला में
6. सन् 2007 उदगांव में
7. सन् 2012 जयपुर में
8. सन् 2017 अ. क्षे. करगुवां जी (झांसी) में

जयपुर में युग प्रतिक्रमण की विलुप्त परंपरा को पुनरुज्जीवित किया गया। और बृहद् रूप में युग प्रतिक्रमण सम्पन्न हुआ। तदनुरूप इस व'ा 2023 में भी बुन्देलखण्ड के विरागोदय तीर्थ क्षेत्र (पथरिया) में समायोजित है।

सन् 1981 मे 2007 तक के यति सम्मेलन सामान्यतः अघोषित रूप से हुये। किन्तु ये सभी केवल यतिसम्मेलन ही हुये इनमें कहीं युग प्रतिक्रमण नहीं हुआ। मेरी इच्छा थी जब यतिसम्मेलन होते ही है तो फिर युग प्रतिक्रमण क्यों नहीं होता है? उस प्राचीन विलुप्त परंपरा का भी पुनरूद्धार होना चाहिए।

अतः जयपुर में आयोजित होने वाले हमारे स्वर्णिम जयन्ति को मैंने सभी को ''यतिसम्मेलन व युगप्रतिक्रमण के रूप में मनाने की प्रेरणा दी'' जिसे सभी ने स्वीकार किया और वर्तमान कालीन प्रथम युग प्रतिक्रमण अतिविशाल रूप में श्री मान् सेठ मालचंद्र जी रांवका द्वारा विरागनगर (भवानी निकेतन) जयपुर में प्रारंभ हुआ। द्वितीय यतिसम्मेलन युगप्रतिक्रमण सन् 2017 में (अतिशय क्षेत्र करगुंवा (झांसी) में क्षेत्र व समाज ने भी अत्यन्त ह'ा व उत्साह के साथ सम्पन्न कराया। जिसमें हमारे संघस्थ साधुओं के साथ अन्य दिगम्बर, ÷वेताम्बर व तारणतरण साधु भी सम्मलित हुये।

2022 में प. पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी के सानिध्य में भी श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के साथ उनके संघस्थ तथा कुछ अन्य भी संघ के साधुओं का यति सम्मेलन भी बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

यद्यपि हम लोगों का भी इस वर्ष यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण करना तय था। परन्तु कोरोना व कुंडलपुर महोत्सव के ध्यान में रखते हुये, उसे आगे बढ़ाया गया। जो कि 'विरागोदय तीर्थ पथरिया' में सन् 2023 में श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक के साथ तृतीय यतिसम्मेलन व युग प्रतिक्रमण युगपत् विशाल रूप से समायोजित किया जायेगा।

आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज व्यक्तित्व एवं कृतित्व

■ **डॉ . आशीष जैन आचार्य**

जैनदर्शन कर्म प्रधान है। यहाँ व्यक्ति की नहीं, गुणों की पूजा है। भक्त बनने की नहीं, भगवान् बनने की बात यहाँ है। यहाँ जिन अर्थात् जिनेन्द्र की पूजा का विधान है और उस पूजन का फल परम्परा से जिनेन्द्र बनना ही है। आचार्य उमास्वामी महाराज ने तत्त्वार्थसूत्र में लिखा है -

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां, वन्दे तद्गुण लब्धये॥

जो मोक्षमार्ग के नेता हैं, कर्मरूपी पर्वतों के भेदनकर्ता हैं, जो विश्व के समस्त पदार्थों को जानने वाले हैं, मैं उनको उन गुणों की प्राप्ति के लिए नमस्कार करता हूँ। जैनदर्शन कहता है आप नमस्कार करो तो चमत्कार हो जायेगा। आप चमत्कार को नमस्कार मत करो। जैनदर्शन सच्चे देव -शास्त्र गुरु य इन तीनों के मूल सिद्धान्त को प्रतिपादित कर जनसमूह में जिनेन्द्र द्वारा कथित वचन य जिनवाणी में लिपिबद्ध जिनेन्द्र वाणी और दिगम्बर साधु की चर्या में आचरणबद्ध प्रक्रिया, मानवीय संवेदनाओं को निष्ठा, ईमानदारी, नैतिक मूल्यों का पाठ आदि विशिष्ट विषयों के प्रतिपादन के साथ-साथ आत्मकल्याण की भावना से ओतप्रोत करता है। यहाँ हम ऐसे ही उत्कृष्ट दिगम्बरत्व की साधना करने वाले परम तपस्वी, वात्सल्य रत्नाकर, आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के परम आज्ञानुवर्ती शिष्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा कर रहे हैं।

जन्म - आपका जन्म भारतभूमि की पवित्र धरा धर्म परायण नगरी पथरिया में हुआ। पथरिया जिला - दमोह, म.प्र. में स्थित है। आप बचपन से ही प्रखर बुद्धि के धनी रहे। घर में आपको सभी टिन्नू के नाम से पुकारा करते थे। वैसे आपका नामकरण अरविन्द जैन हुआ। आपका जन्म वैशाख शुक्ला 9, संवत् 2020 अर्थात् 02 मई 1963, शुक्रवार के दिन हुआ।

माता श्रीमती श्यामादेवी जैन अत्यंत ही धर्मनिष्ठ एवं धर्मपरायणा गृहिणी थी। बाद में इन्होंने भी संसार शरीर भोगों से विरक्त होकर दीक्षा ग्रहण कर ली। आपका दीक्षा उपरान्त नाम आर्यिका विशान्तश्री माताजी दीक्षा गुरु आचार्यश्री विरागसागर महाराज द्वारा दिया गया। अपने परिणामों की निर्मलतापूर्वक आपने समाधिस्थ होकर अपना आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। आपके पिता भी श्री कपूरचन्द जी जैन के संस्कारों ने आपको मुनि मार्ग में आरूढ़ किया। वर्तमान में वे भी अणुव्रतों की सम्यक् आराधना करते हुये आचार्य संघ में आत्मकल्याण की भावना बलवती बनाये हुये हैं। लौकिक शिक्षा आपकी इण्टर, मध्यमा तक पथरिया के शांति निकेतन एवं श्री दि. जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी, म.प्र. में हुई। दो बहिनें श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन एवं श्री विजय कुमार, श्री सुरेन्द्र कुमार एवं बाल. ब्र. नरेन्द्र भैया जी हैं।

दीक्षा संस्कार - जब हृदय में वैराग्य बीजारोपण हुआ तो आप भी दिगम्बरत्व की साधना करने के लिए पहुँच गए दिगम्बराचार्य तपस्वी सम्राट् आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के चरणों में आपकी ज्ञान - संयम के प्रति अति सजगता देखकर दि. 20 फरवरी 1980 (फाल्गुन शुक्ल 5 सं. 2036) बुढ़ार, जिला - शहडोल, म.प्र. में क्षुल्लक दीक्षा हुई। आपका नाम क्षुल्लक श्री 105 पूर्णसागर जी महाराज रखा गया। आपको वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज द्वारा दिनांक 9 दिसम्बर 1983 मगसिर शुक्ल पक्ष 5, वि.सं. 2040) को औरंगाबाद, महाराष्ट्र में मुनि दीक्षा प्रदान की गई और आपका नामकरण मुनिश्री 108 विरागसागर जी महाराज हुआ। कार्तिक शुक्ल 13 वि. सं. 2049 दिनांक 8 नवम्बर 1992 रविवार को श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में सम्पूर्ण जैन समाज की उपस्थिति में आचार्य पद से सुशोभित किया गया। आपके व्यक्तित्त्व की गंभीरता, चारित्रिक निर्मलता, श्रेष्ठ नेतृत्व क्षमता को देखकर आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज की आज्ञा पूर्वक यह आचार्य पद प्रदान किया। आपकी नेतृत्व क्षमता ने जैन धर्म - दर्शन और जैन समाज को अमूल्य रत्नों का भण्डार प्रदान किया गया संयम - सृजन- आचार्यश्री ने लगभग 241 दीक्षायें प्रदान की है। जिसमें से 8 आचार्य, उपाध्याय, मुनि 206, आर्यिका 141, ऐलक 5, क्षुल्लक 26, क्षुल्लिका 15 एवं ब्रह्मचारी भाई - बहिनें हैं।

आपके द्वारा दीक्षित प्रमुख आचार्य हैं - आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज, आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज, आचार्य श्री विमदसागर जी, आचार्य श्री विनिश्चयसागर जी, आचार्य श्री विहर्षसागर जी, आचार्य श्री विशदसागर जी (आचार्य पद आ . भरतसागर जी महाराज ने भी दिया), आचार्य श्री विमर्शसागर जी, आचार्य श्री विनम्रसागर जी।

साहित्य सेवा - आपने हिन्दी, संस्कृत और प्राकृत तीनों भाषाओं में ग्रन्थों का सृजन किया। हिन्दी भाषा में आगमचक्खु, सप्तव्यसन, शुद्धोपयोग जैसी महनीय कृतियों का सृजन किया। संस्कृत भाषा में आचार्यश्री कुन्दकुन्द विरचित ''वारसाणुवेक्खा'' पर सर्वोदयटीका नाम से वृहत् टीका का सृजन किया। आपकी लेखन प्रतिभा एवं पद्यविधा के कौशल का परिचय भी प्राप्त हुआ है। रयणसार ग्रन्थ पर रत्नत्रयवर्धिनी संस्कृत टीका लिखी। पंचभत्तिसंगहो - आपने प्राकृत भाषा में पंचभत्तिसंगहो की रचना की। जो अभी अप्रकाशित है।

चातुर्मास - निरन्तर धर्मसाधना में बढ़ते हुए आपने सन् 1980 में सर्वप्रथम चातुर्मास दुर्ग, फिर कारंजा लाड, नागपुर, भावनगर, भिलाई, जयपुर, पथरिया इत्यादि में किये।

वाचनायें - श्री षट्खण्डागम व धवला की 16 वाचना, कसायपाहुड की चार पुस्तकों पर वाचना की।

षष्ठी पूर्ति वर्ष के षष्ठी सोपान

■ **श्रमणी विदक्षा श्री**

कदम-कदम संयमी जनों के धैर्य, साहस व सहिष्णुता की परीक्षा होती हैं परंतु जो धीर, वीर, गंभीर होते है वे विषमताओं के विष को समता की सुधा में बदल देते हैं। इस भारत की वसुन्धरा को गुरुवर के रूप में एक कोहिनूर की प्राप्ति हुई है। जो हम सबके लिए बेशकीमती है जिसे हम अपने हृदय की तिजोरी में संभाल कर रखते हैं।

पथरिया ग्राम की पावन पुण्य धरा जहाँ पत्थरों के बीच एक कमल खिला, जिसने अपनी सुगंधि से ना केवल पथरिया, न केवल बुंदेलखंड अपितु संपूर्ण भारत वर्ष को सुवासिन किया। जिनके आकर्षक, शांत, सहज व्यक्तित्त्व ने प्राणी मात्र के हृदय स्थान पर अपना निवास बना लिया, जिनके चित्त की गंभीरता शांत अम्बुज की भाँति चित्त मात्र को प्रभावित करती है। जिनकी निष्पृह वृत्ति आचरण की पवित्रता के दिग्दर्शन कराती हैं। जो सदा भक्तों के मानस पटल पर परमात्मा बन विराजते हैं। जिस प्रकार पुष्प अपनी सुगंधि विखेरने कहीं नहीं जाते, अपितु जहाँ से वह पुष्प विचरता है सुगंधि स्वयमेव सर्वत्र पहुँच जाती हैं।

पथरिया के पत्थरों में खिला कमल अरविंद नाम से पुकारा जाने लगा और उसके सद् आचरण की सुगंधि धीरे-धीरे पूरे गांव में फैल गई। यथा नाम तथा गुण अर्थात् गुणरूपी सुगंध को सर्वत्र फैलाने वाले अरविंद। यही से आपको नवीन संज्ञाए मिलना प्रारंभ हो गई। 2 मई सन् 1963 में जन्में अरविंद की सुगंधि उनके गुरुदेव तक भी पहुँच ही गई और 16 वर्ष की अल्पवय में सन् 1980, 20 फरवरी के दिन पूज्य गुरुदेव तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज ने क्षुल्लक की दीक्षा दे पूर्णसागर बना दिया। सागर-असीमता का द्योतक है वह भी पूर्ण। अर्थात् पूर्ण केवलज्ञान का दीप आपकी आत्मा को रोशन करें ऐसे आशीर्वाद के साथ मुक्ति की यात्रा प्रारंभ हो गई। 20 वर्ष की उम्र में 9 दिसंबर 1983 में औरंगाबाद की पुण्य धरा पर वात्सल्य रत्नाकर, निमित्तज्ञानी आचार्य विमलसागर जी महाराज के कर कमलों से आपको परम दिगम्बर मुद्रा धारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, गुरुदेव ने आपका नाम मुनि विरागसागर रखा। वैराग्य का निर्झर जिनके आत्म प्रदेशों से सदैव बहता रहता है। ऐसे सार्थक नाम को आपने पाया। सदैव शिष्यों को वीतरागता का पथ दिखाने वाले पूज्य गुरुदेव जब बरासो में विराजमान थे तब आपने प्राचीन तीर्थों के प्रति अपनी संवेदनाएँ व्यक्त करते हुए उनके जीर्णोद्धार के प्रति लोगों की सोयी हुई चेतना को जाग्रत किया और अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार किया।

सन् 1988 में बरासों समाज ने आपको एक क्रांतिकारी कर्मठ व्यक्तित्व का धनी समझ कर 'क्रांतिकारी संत' की उपाधि से विभूषित किया। आपकी अद्भुत क्षमताओं को देखते हुए वरिष्ठ विद्वानों ने आपको अनेक बार आचार्य पद ग्रहण करने का निवेदन किया परंतु मुनि विरागसागर जी सदैव टाल देते थे। पूज्य आचार्य गुरुवर विमलसागर जी के पास अनेक समाज जन विद्वत् वर्ग अपना आग्रह पत्र लेकर पहुँचे तथा प्रार्थना की, कि आप अपने सुयोग्य शिष्य को आचार्य पद प्रदान करें ऐसी हमारी विनम्र प्रार्थना है। तब परम पूज्य निमित्तज्ञानी आचार्य विमलसागर जी के आदेश व आशीर्वादानुसार द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र पर 8 नवम्बर सन् 1992 में पं. दरबारी लाल जी कोठिया आदि शताधिक विद्वानों व लगभाग 20,000 जनसमूह के मध्य आपको आचार्य पद से विभूषित किया गया। तब से आप आचार्य विरागसागर जी के नाम से विख्यात हुए।

आचार्य पद के गुणों से मंडित हो शिष्य समूह का निग्रह, अनुग्रह करते हुए जिनधर्म की ध्वज को फहराते हुए पूज्य आचार्य भगवन् गगन पर सूर्य की तरह शोभायमान नजत आते थे, बुंदेलखंड की धरा पर 29 वर्ष की अल्पवय में आचार्यत्व को धारण कर गौरवान्वित करने वाले आप प्रथम सूरि थे, अतः बीना की समाज ने आपको सन् 1994 में 'बुंदेलखंड के प्रथमाचार्य' की उपाधि से विभूषित करते हुए अपने आप को गौरवान्वित किया।

आज जहाँ दुनियाँ पद लोलुपी हो अनैतिक तरीको से भी पदलिप्सा में व्याप्त है वही दूसरी ओर पूज्य गुरुवर ने अत्यंत वैरागी, निष्पृही हो अपनी साधना को वृद्धिगंत करने का पथ चुना, उनकी इस निस्पृहता से प्रभावित होकर साहित्य मनीषी श्री 'सुरेश जी सरल' ने आपको 'निस्पृही संत' कहकर मात्र पुकार ही नहीं अपितु जबलपुर समाज के माध्यम से सन् 1995 में आपको 'निस्पृही संत' की उपाधि से विभूषित किया वा आपकी जीवन झांकी को 'निस्पृही संत' कृति का रूप दिया।

अध्यात्म का रस जिनके अंतस में समाहित है तथा जो सिद्धांत के मर्मज्ञ, ज्ञाता है। आपकी इस प्रज्ञा के दर्शन पं. सुमतिचंद्र जी शास्त्री ने किये और सन् 1995 में भिण्ड नगरी में समाज ने पूज्य गुरुवर को ''आध्यात्म

सिद्धांत वारिधि'' की उपाधि से अलंकृत किया।

आगम के हरपहलु गुरुवर ने स्पर्शित किये है न्याय के क्षेत्र में आपकी अद्भुत दक्षता का दर्शन पं. लक्ष्मण प्रसाद जी गया ने किया और पूज्य गुरुवर को ''न्याय मार्तण्ड'' की उपाधि 2001 में गया जी चातुर्मास के दौरान प्रदान की। श्रेयांसगिरि क्षेत्र पर जब पूज्य गुरुवर पहुँचे तो क्षेत्र व प्रतिमाओं की प्राचीनता को देख उन्होंने क्षेत्र का जीर्णोद्धार कराया वहाँ क्षेत्रीय दिगंबर जैन समाज गुरुवर के इस उपकार को अपने हृदय में अंकित कर 'तीर्थोद्धारक' की उपाधि देकर अपने भाग्य सराहे सन् 2022 में चातुर्मास के दौरान यह गौरव व सौभाग्य समाज को प्राप्त हुआ। साथ ही संतों में शिरोमणि की तरह शोभायमान गुरुवर को सभी समाज जनों ने ''संत शिरोमणी'' की उपाधि दे आकाश को गुंजायमान किया।

कदम-कदम संयमी जनों के धैर्य, साहस व सहिष्णुता की परीक्षा होती हैं परंतु जो धीर, वीर, गंभीर होते है वे विषमताओं के विष को समता की सुधा में बदल देते हैं। पूज्य गुरुवर की कर्मों ने परीक्षा ली और 2003 में भिलाई चातुर्मास के दौरान गुरुवर पर महाभयंकर उपसर्ग हो गया, उस संकट की घड़ी में अपने अदम्य साहस और गुरु मंत्र के प्रभाव से 36 घंटे की अविचल साधना कर आप उपसर्ग विजेता हुए, तब दुर्ग, भिलाई, वैशाली, रायपुर आदि अनेक समाजों ने आपको ''उपसर्ग-विजेता'' की उपाधि से विभूषित किया।

पूज्य गुरुदेव ने अपनी साधना काल में बहुत से मुमुक्षुओं को अंतिम संबोधन प्रदान किया राजिम में एक सप्तम प्रतिमा धारी कचरा बाई को अचानक कॉमा में पहुँच गई थी परंतु जैसे ही गुरुवर ने दीक्षा संस्कार किये वह गुरु कृपा व संयम के प्रभाव से स्वस्थ हुई और पूज्य गुरुवर के कुशल निर्यापकत्व में उन्होंने सल्लेखना व्रत ग्रहण किया व समाधी पूर्वक देह का त्याग किया। पूज्य गुरुवर के कुशल निर्यापकत्व को देख पं. श्री ऋषभकुमार जी शास्त्री एवं सकल दिगंबर जैन समाज राजिम ने सन् 2004, 4 फरवरी को गुरुवर को 'समाधि सम्राट' की उपाधि से विभूषित किया। राजिम के डॉ. गदिया का तो कहना था कि कामा में गया व्यक्ति इतने कम समय में गुरुदेव की कृपा से पुनः जीवित हो उठा, यह किसी चमत्कार से कम नहीं।

चारित्र के पथ पर सबको चलाने वाले पूज्य गुरुवर चर्या के मामले में समझौता नहीं करते, उनकी कठिन साधना व दृढ़ चर्या को देखकर सन् 2004 में 23 दिसम्बर के दिन कारंजा समाज ने आपको ''चारित्र-शिरोमणी' की उपाधि देकर अपने भाग्य सराहे। पूज्य गुरुवर जब 2005 में शमनेवाड़ी पहुँचे तो वहाँ आचार्य गुणधरनंदी जी विराजमान थे। पूज्य गुरुदेव के तलस्पर्शी ज्ञान को देखकर आ. गुणधरनंदी जी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने पूज्य आचार्य श्री को 'ज्ञान दिवाकर' की उपाधि से अलंकृत किया।

पूज्य आचार्य भगवन् एक विशाल संघ के नायक हैं। तथा संपूर्ण शिष्य समूह गुरुवर के ईशारे से चलता है। जब 2005 में पूज्य गुरुवर कुन्थुगिरि पहुँचे तब वहाँ 15 आचार्यों व 2000 साधुओं की उपस्थिति में परम पूज्य गणधराचार्य कुन्थुसागर जी महाराज ने आपको विशाल संत समूह का नायक देख 'श्रमण रत्नाकर' की उपाधि से शोभायमान किया। सन् 2005 में कर्नाटक की पावन धरा पर विचरण करते हुए जब पूज्य गुरुवर मूढ़बिद्री पहुँचे तब आपके सिद्धान्त के प्रति प्रखर प्रज्ञा को देख व धवला की 16 पुस्तक की वाचना करने वाले होने से आपको 'सिद्धान्त-रत्न' की उपाधि से विभूषित किया।

आध्यात्म ही जिनकी जीवंत चर्या है, आध्यात्मिक रस में डूबना ही जिन्हें इष्ट है। ऐसे पूज्य गुरुवर की आध्यात्मिक साधना को देखते हुए पूज्य गुरुवर के मुनि दीक्षा दिवस के शुभ अवसर पर सन् 2005 में श्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार हेगड़े धर्मस्थल ने आपको 'आध्यात्म-योगी' की उपाधि से अलंकृत कर स्वयं को गौरवान्वित किया। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जो सदैव सागर की तरह गंभीर रहते हैं, जिनके रोम-रोम से समता टपकती है, जो सदैव शांत छवि से प्रभावित होकर 3 नवम्बर सन् 2006 में स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन जी भट्टारक मेलचित्तामूर तमिलनाडु एवं वहाँ की समाज ने पूज्य गुरुवर को 'समतामूर्ति' की उपाधि से अलंकृत किया।

जो सदैव अपने शिष्यों को उन्नति के शिखर तक पहुँचाने में एक 'माँ' की भूमिका का निर्वाह करते हैं। शिष्यों की योग्यता को परख 31 मार्च सन् 2007 में पूज्य गुरुवर ने विशुद्धसागर आदि त्रय मुनिराजों को औरंगाबाद की पुण्यधरा पर आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया तब त्रय आचार्य अर्थात् गण के नायक। गुरु होने से आपको आचार्य त्रय व सकल दिगंबर जैन समाज ने 'गणाचार्य' की उपाधि से अलंकृत किया।

जो वात्सल्य की जीवंत प्रतिमा है, उनके इसी विशिष्ट गुण का सुफल आपका सुदीर्घ शिष्य समुदाय हैं। पूज्य गुरुवर के वात्सल्य की छाया में पलता शिष्य वृंद अपने को सौभाग्य को सराहता हैं अतः 25 अप्रैल 2007, शिरड शाहपुर पंचकल्याणक की शुभ बेला में आपके ही सुयोग्य शिष्य आचार्य विभवसागर जी महाराज की प्रेरणा से सकल दिगंबर जैन समाज शीरड शाहपुर ने आपको ''वात्सल्य-रत्नाकर'' की उपाधि से अलंकृत किया।

किसी के भी प्रति भेदभाव से रहित हो, पूज्य गुरुदेव सबके प्रति समान वात्सल्य भाव रखते है। उनकी दृष्टि में संपूर्ण देश, राष्ट्र और उसके निवासी सुखी हो, समृद्ध हो, आनंदमय जीवन यापन करें। उनके हृदय की इस उदारवृत्ति को देखते हुए 14 दिसम्बर सन् 2007 उदगाँव, महाराष्ट्र में आपके 'राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा' महोत्सव के अवसर पर विभिन्न देशों व नगरों से पधारे गणमान्य अतिथि गणों, कुंजवन ट्रस्ट समिति, राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा समिति, राष्ट्रीय विराग युवा व महिला मंच भिण्ड तथा सांगली एवं श्रीमान् कपूरचंद जी घुवारा, विधायक बड़ामलेहरा तथा सकल चतुर्विध संघ के पावन पुनीत सानिध्य व प्रेरणा से आपको 'राष्ट्रसंत' की उपाधि से अलंकृत किया गया। सन् 2007 उदगांव चातुर्मास के समय मुनिदीक्षा के 25 वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज ने कहा कि गणाचार्य विरागसागर जी अपने विशाल संघ के साथ पू. गुरुदेव विमलसागर जी महाराज की कीर्ति को सर्वत्र फैला रहे है, अतः आज से ये 'विमलकीर्ति' कहलायेगे। और पूज्य गुरुदेव को उनके गुरुवर ने 'विमलकीर्ति' की उपाधि प्रदान की।

अपने सुयोग्य शिष्यों को आचार्य पद प्रदान कर उन्हें उन्नति के उत्तुंग तक पहुँचाने वाले पूज्य गुरुवर आचार्यों के गौरव है। अतः विमर्श सेवा समिति एवं सकल समाज द्वारा 14 दि. सन् 2007 में रजत मुनि दीक्षा प्रवेश वर्ष में आपको 'आचार्य गौरव' की विभूति से विभूषित किया गया। साथ ही पं. धनपाल हबले ने आपकी सिद्धान्त विषयक प्रज्ञा को परखते हुए उदगांव में इसी रजत मुनि दीक्षा वर्ष प्रवेश के अवसर पर आपको 'सिद्धांत चक्रवर्ती' की उपाधि से अलंकृत किया। इसी पुनीत अवसर पर राष्ट्रीय विराग युवा एवं

महिला मंच ने आपको 'भारत गौरव' की उपाधि प्रदान की। साथ ही श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी देहरासर ट्रस्ट गुलालवाड़ी मुंबई ने 3 दि. सन् 2008 में रजत मुनि दीक्षा समापन समारोह में न्याय विषयक आपकी तलस्पर्शी प्रज्ञा को देखते हुए आपको 'न्याय भास्कर' की उपाधि से अलंकृत किया। पं. सिंहचंद्र जी शास्त्री ने इसी बेला में आपको 'श्रमण सूरि' की विभूति से विभूषित किया।

आचार्यों में जो रत्न की तरह शोभा को प्राप्त होते है, ऐसे पूज्य गुरुवर को 8 मार्च 2009 में गिरनार जी सिद्धक्षेत्र पर विराजित पू. आचार्य निर्मलसागर जी महाराज ने 'आचार्य-रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया। सन् 2009 में जब पू. गुरुवर गुजरात प्रांत के तलोद ग्राम में विराजमान थे, तब पूज्य गुरुवर के 27 वें मुनि दीक्षा दिवस पर वहाँ की सकल दिगम्बर जैन समाज ने आपको ज्ञान का अथाह समुद्र जान ''विद्या वारिधि'' की उपाधि से अलंकृत किया। 2 मई सन् 2010 में डूंगरपुर राजस्थान में पूज्य गुरुवर की जन्म-जयंती की बेला में परम पूज्य वैज्ञानिक संत आचार्य कनकनंदी जी महाराज ने आपको 'प्रशान्त मूर्ति' की उपाधि से विभूषित किया। 19 नवम्बर सन् 2010 में लोहारिया, राजस्थान में विराजित पू. गुरुवर को वहाँ की समाज ने आपके 19 वें आचार्य पद पदारोहण की बेला में आपको 'चर्याचूड़ामणि' की उपाधि से अलंकृत किया। 12 दिसम्बर 2010 में बांसवाडा राजस्थान की पुण्य धरा पर जहाँ पर मुनि श्री विमर्श सागर जी एवं मुनि श्री विनम्र सागर जी को आचार्य पद प्रदान किया गया, उस शुभ एवं मंगल बेला में दोनों मुनिराजों सहित सकल दिगम्बर जैन समाज बांसवाड़ा ने आपको 'सूर्यगच्छाचार्य' की उपाधि से अलंकृत किया। गच्छ का अर्थ होता है समूह जो आचार्यों के भी आचार्य है। अर्थात् सूरि गच्छ के नायक होने से 'सूरिगच्छाचार्य' इस सार्थक अलंकार को प्रदान किया।

जो अपने हृदय में सदैव विश्व हित की भावनाएं रखते है, ऐसे उदारमना पूज्य गुरुवर को 8 नवम्बर 2011 में आचार्य पद पदारोहण की पुनीत बेला में अजमेर की सकल दिगंबर जैन समाज ने आपको 'विश्व हितैषी' की विभूति से विभूषित किया। साथ ही अखिल भारतीय महासभा, अजमेर ने आपको 'वात्सल्य पुंज' की उपाधि प्रदान की। अनुशासन ही जिनका जीवन है जो स्वयं अनुशासन में रहते हुए अपने शिष्यों को अनुशासित रहने की कला सिखाते है ऐसे अनुशासन प्रिय गुरुवर को पू. आर्यिका विदुषी श्री माता जी की प्रेरणा से सकल दिगम्बर जैन समाज, कुचामन सिटी ने सन् 2012, 2 मई, स्वर्णिम जयन्ती के पुनीत अवसर पर 'अनुशासन-रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया। इसी बेला में आर. के. जैन एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने आपको 'आगम-अति धन्वा' की उपाधि प्रदान की। तथा समग्र जयपुर जैन समाज ने इसी पुनीत बेला में आपको 'योग-सम्राट' की उपाधि से अलंकृत किया।

जिस प्रकार एक शिल्पीकार अपनी पैनी छैनी लगाकर पत्थर में परमात्मा के दर्शन करा देता है उसी प्रकार पूज्य गुरुवर अपने शिष्यों को आगम का ज्ञान प्रदान कर चलता फिरता तीर्थ बना देते है, जो जगत्पूज्य हो जाता हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर ने 3 मई 2012 में जयपुर राजस्थान में 25 दीक्षाऐं दी, तब उस कार्यक्रम में पधारे सकल दिगम्बर जैन समाज जबलपुर म.प्र. ने आपको 'श्रमण-शिल्पी' की उपाधि से विभूषित किया। 5 मई सन् 2012 में प्रथम बार जयपुर की धर्मधरा पर युगप्रतिक्रमण की परंपरा को पुनः जीवित करने के कारण पूज्य गणिनी आर्यिका विन्ध्यश्री माता जी एवं सकल दिगम्बर जैन समाज जयपुर ने आपको 'युगप्रतिक्रमण-प्रवर्तक' की उपाधि से अलंकृत किया। 8 अप्रैल 2013 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की पुण्य बेला में पू. ग. आ. विन्ध्य श्री माता जी की प्रेरणा से सकल दि. जैन समाज लालसोट द्वारा पू. गुरुवर को 'जीवंतसमयसार' की उपाधि से विभूषित किया गया।

जिनकी प्रज्ञा को देख विद्वान भी चकित हो जाते है ऐसे पूज्य गुरुवर को 2 मई सन् 2013 में स्वर्णिम जयन्ती की वर्ष समापन बेला में, पू. आ. विदुषीश्री माता जी एवं सकल दिगम्बर जैन समाज लालसोट द्वारा 'प्रज्ञा शिरोमणी' एवं जयपुर दि. जैन समाज द्वारा 'शिरोमणी प्रज्ञानी' विभूति से विभूषित किया गया। 5 मई 2013 में इंदौर नगर में 7 दीक्षा पूज्य गुरुवर ने प्रदान की, इस अवसर पर सकल दिगम्बर जैन समाज इंदौर द्वारा आपको 'दीक्षासिद्धहस्त' की उपाधि से अलंकृत किया गया। स्वर्णिम जयन्ती समापन वर्ष की बेला में पू. आचार्य विमर्शसागर जी महाराज एवं शिवपुर दिगम्बर जैन समाज द्वारा पूज्य गुरुवर को 'न्याय-केसरी' की उपाधि प्रदान की गई। जिन्होंने अनेक ग्रंथों की संस्कृत टीकाएँ लिखने का भागीरथ कार्य किया है। ऐसे पूज्य गुरुवर को मेडम मूस आदि इंटरनेशनल, जोराष्ट्रियन ओपन यूनिवर्सिटी, मुंबई द्वारा डाक्टेऊट मानद (पी-एच. डी.) की उपाधि प्रदान की गई। जो सदैव आगम के रक्षण में संलग्न रहते है ऐसे पूज्य गुरुदेव को विरागयुवा मंच एवं अंजनी नगर इंदौर जैन समाज द्वारा आचार्य श्री के 22 वें आचार्य पद पदारोहण की बेला में 15 सितम्बर 2013 में 'युगप्रवर्तक आगम रक्षक' की उपाधि से विभूषित किया गया। जिन्होंने शताधिक ग्रंथों का सृजन अपनी लेखनी से किया है ऐसे पूज्य गुरुवर को 11 जून 2015 में डॉ. भागचंद्र शास्त्री एवं स. दि. जैन समाज ने 'साहित्य-महोदधि' की उपाधि से अलंकृत किया।जो संपूर्ण भारत के आभूषण स्वरूप हैं, जिनकी तपस्या से जगत जगमगाता है। ऐसे पूज्य गुरुवर को 12 नवम्बर सन् 2016 में, राष्ट्रीय रजत पदारोहण की बेला में पू. आचार्य विभवसागर जी महाराज एवं कोतमा जैन समाज के द्वारा 'भारत-भूषण' की उपाधि से विभूषित किया गया। जो सदैव जीवन के अमूल्य क्षणों को 'सिद्धांत वाचना' में लगाते है। ऐसे पूज्य गुरुवर को 2 अप्रैल 2017 में मुरैना जैन समाज द्वारा वाचना के शुभ अवसर पर 'सिद्धान्त वाचना वाचस्पति' की विभूति से विभूषित किया गया।

23 मई 2017 करगुवां झाँसी में हुए द्वितीय युग प्रतिक्रमण व यति सम्मेलन की वेला में पू. आ. विविक्त श्री माता जी एवं समस्त बुंदेलखंड की जैन समाज द्वारा 'बुंदेलखंड आदर्श रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया। इसी अवसर पर ग. आ. विज्ञा श्री माता जी एवं राजस्थान जैन समाज द्वारा गुरुवर को 'आचार्य विज्ञ' की उपाधि से अलंकृत किया गया। तथा इसी अवसर पर यति सम्मेलन में पधारे श्वेताम्बाराचार्य कमल मुनि ससंघ ने आपकी आध्यात्मिक अभिरुचि को देखते हुए 'आध्यात्म सूरि' की उपाधि से विभूषित किया। 17 दिसम्बर 2017 में, रजत आचार्य पदारोहरण वर्ष की समापन बेला में करमपुरा दिल्ली की धर्मधरा पर पूज्य गुरुवर की श्रमण संस्कृति के उत्थान विषयक भावनाओं को देखते हुए पू. क्षु. योगभूषण जी महाराज की प्रेरणा से दिल्ली जैन समाज द्वारा आपको 'श्रमण संस्कृति उन्नायक' की उपाधि से अलंकृत किया गया। 24 मार्च

2018 में, भारतीय संस्कृति के प्रति गुरुवर की सहृदया को देखते हुए पू. आ. विकाम्याश्री माताजी की प्रेरणा से सकल दिगम्बर जैन समाज कोटा द्वारा पूज्य गुरुवर को ''भारतीय संस्कृति उन्नायक'' की उपाधि से विभूषित किया गया।

पिच्छिका परिवर्तन के अवसर पर पू. आचार्य विमर्शसागर जी की प्रेरणा से सकल दिगम्बर जैन समाज बारबंकी द्वारा 28 नवम्बर 2020 द्वारा पूज्य शुद्धोपयोगी गुरुवर को 'शुद्धोपयोगी संत एवं समाजोद्धारक' की उपाधि प्रदान की गई। इसी बेला में पू. मुनि श्री विशल्यसागर जी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन समाज गया द्वारा 'सर्वोदयी महाश्रमण' की विभूति से पूज्य गुरुवर को विभूषित किया गया।

25 समवशरण विधान के अवसर पर समाज के प्रति आपकी अतिसंवेदनशीलता को देखते हुए सकल दिगम्बर जैन समाज भिण्ड द्वारा 19 दिसम्बर 2020 में पूज्य गुरुवर को 'आदर्श समाजोद्धारक' की उपाधि से अलंकृत किया गया। 8 नवम्बर 2021 में, पिच्छिका परिवर्तन की शुभबेला में, दिगम्बर जैन प. पु. पंचायत एटा द्वारा एवं मुनि विधेय सागर एवं मुनि विनयंधर सागर जी द्वारा पूज्य गुरुवर के असीम श्रुत ज्ञान को देखते हुए 'श्रुतधराचार्य' की उपाधि से अलंकृत किया गया। इसी शुभ बेला में पू. मुनि श्री विशल्य सागर जी महाराज की प्रेरणा से रांची दिगम्बर जैन समाज द्वारा आपको 'सारस्वत महाश्रमण' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

23 दिसम्बर 2021 में, पूज्य गुरुवर को लगभग 30 लाख से अधिक जनसमुदाय के मध्य अहिंसा एवं शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति अभियान चलाने के महनीय कार्य के प्रणेता के रूप में संस्कृति युवा संगठन दुबई द्वारा आपको 'भारत गौरव' अवार्ड से सम्मानित किया गया।

पूज्य गुरुवर ने न केवल अनेक ग्रंथों का लेखन ही किया अपितु एक महाकाव्य जिसका नाम 'जलबिंदु महाकाव्य' है, उसका सृजन भी किया। आपने न केवल गद्य अपितु पद्य अर्थात् काव्य की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए माँ सरस्वती के चरणों में अपना अर्घ्य समर्पित किया हैं। ऐसे पूज्य गुरुवर को मिर्जापुर पंचकल्याणक के शुभ अवसर पर वहाँ की समग्र दिगम्बर जैन समाज एवं विद्वत् संगोष्ठी में पधारे विद्वत् वर्ग द्वारा पू. गुरुवर को 'काव्य परंपरा संवर्द्धक' की विभूति से विभूषित किया गया। साथ ही आर्यिका विकाम्या एवं विगुंजन श्री माता जी की प्रेरणा से पूज्य गुरुवर की जन्म जयन्ती के अवसर पर मिर्जापुर की सकल दि. जैन समाज द्वारा पूज्य गुरुवर को 'वात्सल्य-मार्तण्ड' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

ये जितनी भी उपाधियाँ पूज्य गुरुवर को समय-समय पर प्रदान की गई हैं वे मात्र उपाधि नहीं अपितु भक्तों के द्वारा गुरुवर के गुणों की माला गूंथी गई है। यद्यपि गुरुवर सदैव इन उपाधियों को व्याधियों की तरह कष्ट देने वाला मानकर दूर ही रहते हैं। परंतु भक्तों के मन मसीहा उर के सिंहासन पर ही राजते हैं। अतः हम सभी शिष्य एवं भक्त मंडल आपको पाकर कृतार्थ हुए। इस भारत की वसुन्धरा को गुरुवर के रूप में एक कोहिनूर की प्राप्ति हुई है। जो हम सबके लिए वेशकीमती है जिसे हम अपने हृदय की तिजोरी में संभाल कर रखते हैं।

इस षष्ठी पूर्ति वर्ष के शुभ अवसर पर 'पथरिया तीर्थ प्रणेता' पूज्य गुरुवर के पावन श्री चरणों में अपनी भावांजलि समर्पित करते हुए मैं श्रमणी विदक्षा श्री गुरुवर के चरणों में नतमस्तक हूं और प्रभु से प्रार्थना करती हूं कि मेरे गुरुवर शतायु हो, स्वस्थ हो और आपकी कीर्ति दशों दिशाओं में दिन दूनी रात चौगुनी निरंतर बृद्धिंगत हो। आपके आशीष की सुखद छाया सदा मुझ पर बनी रहें।

सम्मेद शिखर जी महासभा के पदाधिकारियो का शपथ ग्रहण

सागर। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह झारखंड स्थित शास्वत तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर जी मे आयोजित त्रिदिवसीय कलशारोहण समारोह के दौरान संपन्न हुआ। बुंदेलखंड भवन में आयोजित समारोह में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वय संतोष जैन घड़ी, ऋषभ चंदेरिया एवं संतोष जैन बैटरी, चौधरी सुभाष जैन की उपस्थिति में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ भागचंद भास्कर नागपुर ने उपस्थित पदाधिकारियों को शपथ दिलाई. शपथ ग्रहण समारोह के संचालन की प्रक्रिया महामंत्री चक्रेश शास्त्री भोपाल द्वारा संपन्न कराई गई. समारोह मे कार्यकारी महामंत्री देवेन्द्र लुहारी, कोषाध्यक्ष प्रेमचंद जैन बमनौरा सागर उपाध्यक्ष महेन्द्र कुमार चौधरी जबलपुर, महेन्द्र जैन बड़ागांव टीकमगढ, सुरेश जैन मारोरा इंदौर, डॉ.शचीन्द्र मोदी तेदूखेडा, प्रदीप कुमार जैन खाद सागर, चौधरी सुनील कुमार जैन जयपुर, प्रेमचंद जैन बरेठी सह संयो. बुंदे.भ., अभय कुमार जैन छिंदवाडा, विजय जैन बाबाजी सागर, मंत्री शिवप्रसाद जैन अमरऊ शाहगढ, दीपचंद जैन शिक्षक दमोह, जिनेश जैन बहरोल सागर, सुभाष सिंघई कटनी, महेन्द्र जैन बहरोल सागर, अमितकांत चौधरी सागर, राकेश जैन चच्चा सागर, राजेश जैन भिलाई छग, कार्यालय मंत्री, सुबोध कुमार जैन सागर, संगठन मंत्री, चन्द्रभान जैन डूडा टीकमगढ़, सुधेश कुमार जैन राजनांदगांव , मनीष जैन गढाकोटा, अनिल जैन दुर्ग, प्रमोद कुमार जैन पाटन, एड. श्रेणिक जैन सागर, महेन्द्र कुमार जैन मडदेवरा नागपुर , सुरेन्द्र सिंघई दिल्ली एनसीआर, ऋषभनाथ आदित्य मुम्बई, संयुक्त मंत्री, नरेन्द्र कुमार दिवाकर कुरवाई, वीरेन्द्र कुमार जैन निमानी बक्स्वाहा, पवन कुमार जैन ग्वालियर, पारस जैन दमोह, संतोष जैन मनेन्द्रगढ़, राजेन्द्र जैन शाहगढ भोपाल, विनोद जैन नेहा नगर सागर, जय कुमार जैन दमोह, संजय सेठ जबलपुर, मनोज जैन बंगेला सागर, कैलाश चौधरी घुवारा, अंकुर जैन महावीर कम्प्यूटर सागर, वीरेन्द्र जैन कोतमा, नरेन्द्र सिंघई बीना, प्रचार मंत्री अवनीश संघी सागर, संयोजक बुंदेलखंड भवन सौरभ जैन 'बूंद' सागर, संयोजक संस्कार पत्रिका श्रीयांस जैन संग सेल्स सागर, संयोजक समाज गौरव सम्मान समिति पंडित विनोद जी जैन रजवांस,संयोजक चेतना सम्मान विनोद कुमार जैन कोतमा, संयोजक वर्णी चिकित्सा निधि डी के जैन आयकर सागर, संयोजक आईटी सुरेंद्र खुर्देलीय सागर, संयोजक काउंसिलिंग एवं सह संयोजक चेतना सम्मान समारोह डॉ. अरविन्द जैन प्राचार्य सागर , डॉ अशोक जैन बीटी सागर, सम्पादक गोलापूर्व जैन पत्रिका राजेन्द्र जैन सनावद, सह सम्पादक डॉ रंजना पटौरिया कटनी, संरक्षक कमल चौधरी सागर, सदस्य पीसी जैन सागर,देवेन्द्र जैन कुडीला,निर्मल जैन, राजेश जैन इंदौर, संयोजक तकनीकी टीम विवेक जैन इंदौर, दीपेश जैन बम्होरी, सम्यक लुहारी शामिल हैं।

बुन्देलखण्ड के प्रथम गणाचार्य विरागसागर जी और पथरिया महापर्व

■ सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
30, निशात कॉलोनी, भोपाल, म.प्र. 462 003
ई मेल scjain17@gmail-com
मो 9425010111

आध्यात्मिक जगत में सतत सक्रिय विरागसागर जी भगवान पार्श्वनाथ के पथ को उनकी ही वाणी से अभिसिंचित करते हुए विचरण कर रहे है और नैनागिरि की सिद्धशिला पर विराजमान होने के लिए आगे बढ रहे है। राग से विराग की ओर अग्रसर आध्यात्मिकता की शिखर पर पहुँच रहे गणाचार्य विरागसागर जी को शत-शत प्रणाम। विरागोदय तीर्थ पर समायोजित आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परस्परता के इस विराट एवं विशाल समागम में आध्यात्मिक संवादों के महागान के अवसर पर उन्हें शत-शत वंदन। हमें उनके जुनून और अपराजेय मंसूबो पर बहुत गर्व है। सभी संतो से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि पथरिया जाते समय अथवा पथरिया से लौटते समय नैनागिरि की सिद्धशिला के दर्शन करें। नैनागिरि के सिद्धपथ को अपनी पगतलियों से पवित्र करें।

भगवान महावीर के बेमिसाल सिलसिलों के इस विराट उत्सव में विरागसागर जी का महास्वप्न और महामिशन सफल हो रहा है। विराग की वाग्देवी की प्रभा से आलोकित होने का यह महत्वपूर्ण अवसर है। पूरे देश की दुर्गम शिखरों को पार कर पथरिया पधारे संतो के अभिनन्दन का असाधारण सुयोग है। श्रमणाचार और श्रावकाचार के व्यावहारिक तथा लौकिक पक्षों को समझने और देखने का महायोग है। सामान्यतरू प्रत्येक संत अकेले ही मोक्ष पथ की यात्रा करता है किन्तु 300 से अधिक संतो की यह सकारात्मक सामाजिक यात्रा हमारे भले के लिए है। हम सबके कल्याण के लिए है। हमें पूर्ण विश्वास है कि पथरिया महोत्सव एकजुटता का अपूर्व महापर्व सिद्ध होगा। कर्तव्य बोध जागृत करने का पावन पर्व होगा। शाश्वत जीवन मूल्यों को आत्मसात करने का अद्भुत मौका होगा। जैन संस्कृति को जीवंत करने का महत्वपूर्ण अवसर होगा।

हमें विश्वास है कि मुनियों और महामुनियों के इस महासंगम में सभी दिशाओं से आध्यात्मिक विमर्श के नए विचारों की पावन बयार बहेगी। जैन संस्कृति के अनौखे पहलू उजागर होंगे। तपस्या के तप में तपकर विरागसागर जी की आभा बिखरेगी। चौबीस तीर्थंकरों की वाणी का शंखनाद होगा। 300 से अधिक यति-संगम की समेकित ऊर्जा से हम सबका मनोबल बढेगा। हमें अपार आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होगी। इस महामुनि सम्मेलन में अपने सवालों और जिज्ञासाओं के साथ शरीक हो रही सभी विभूतियों की विरल वार्ताएं होगी। सार्थक संवाद होंगे। इन संवादों और समाधानों से हम सबका सांस्कृतिकध्सामाजिक मानस शुद्ध और समृद्ध होगा। समाज में उमडते-घुमडते प्रश्नों का समाधान होगा। संतो के पारस्परिक प्रेम और करूणा से जन्में मानवीय मूल्यों से हमारा व्यक्तित्व समृद्ध होगा। कठिन अनुशासन और धीरज के गुरुमंत्र प्राप्त होंगे। मन शुद्धि, वचन शुद्धि और काय शुद्धि की ध्वनियाँ सर्वत्र बिखरेंगी। सबके सुमंगल की कामनाएं विकीर्ण होंगी। बुन्देलखण्ड के गणाचार्य द्वारा बुन्देलखण्ड के लोगों की भावनाएं साकार होंगी। जैन समाज के कुरूक्षेत्र की समस्याओं का समाधान होगा।

विरागसागर जी के आध्यात्मिक विश्व की सृजनात्मक, प्रामाणिक तथा प्रतिदिन उपयोगी अभिव्यक्तियाँ प्रवाहित होंगी। पाहुण द्वय और चूर्णिसूक्त के प्रत्येक शब्द और वर्ण, मंत्र है। ज्ञान, ज्ञाता और गेय के समीकरण है। इन ग्रन्थों के शब्दों का संगीत सर्वत्र सुनाई देगा। पूरे विश्व में बैठे व्यक्तियों के साथ संप्रेषण होगा। विरागसागर जी के प्रेमसिक्त अक्षरों का स्पंदन होगा। ज्ञान का विस्फोट होगा। इन आध्यात्मिक अक्षरों में छिपी हुई सरस्वती और लक्ष्मी की निधियाँ हमें प्राप्त होगी। जन-जन का कल्याण करेंगी।

इस अवसर पर हम सबको दिव्य अनुभूतियाँ होंगी। आध्यात्मिकता की अतल गहराई में उतरकर मोक्ष पथ की यात्रा का अवसर मिलेगा। आनन्द के परम तत्व की उपलब्धि होगी। संतो के पावन स्वरों और प्रेम पूर्ण मधुर स्नेह से हमारे अहंकार और विकार की मलिनता का प्रक्षालन होगा। युवा संत अपने परम गुरु के व्यक्तित्व से जुडे कई अनछुए प्रसंगो को उद्घाटित करेंगे जिससे विरागसागर जी की निराली छवि उभर सकेगी। प्रशस्त राग से आपूरित तथा जन-जन की कल्याणी विरागसागर जी की वैयक्तिक व्यग्रता की मधुर वाणी हम जैसे श्रोताओं के मर्म को छू लेती है। अपने अपार स्नेह से हमारी अश्रुधारा को प्रवाहित कर देती है। हमारे हृदय में स्वानुभूति जनित करूणा की रसधार बहा देती है। उनकी सहजता और सरलता से सांसारिक राग का स्वरूप बिखर जाता है। अदृश्य हो जाता है।

हमें विश्वास है कि आध्यात्मिक जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, डॉ. भागचन्द्र जी भागेन्दु दमोह, डॉ. ऋषभ चन्द्र जैन, वैशाली, पण्डित विनोद कुमार जैन रजवांस तथा डॉ. आशीष कुमार जैन, बम्हौरी जैसे विश्व विश्रुत सहृदय समीक्षक, पथरिया विद्वत सम्मेलन में उभर रहे चिंतन को सही और प्रामाणिक ढंग से रेखांकित कर विश्व पटल पर प्रस्तुत करेंगे। उनके शब्दों का स्पंदन सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड में व्याप्त होगा। जन-जन के ज्ञान को सम्यकज्ञान में रूपांतरित करेगा। जैन सांस्कृतिक वैभव के प्रकाश का संपूर्ण विश्व में विस्तार करेगा। नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वप्रभु से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि बुन्देलखण्ड के नभ मण्डल का यह सितारा सदैव हमारा पथ प्रदर्शित करता रहे और हमें अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करता रहे।

■ ताकत को नहीं, आत्मीयता को वास्तविक समृद्धि मानें।

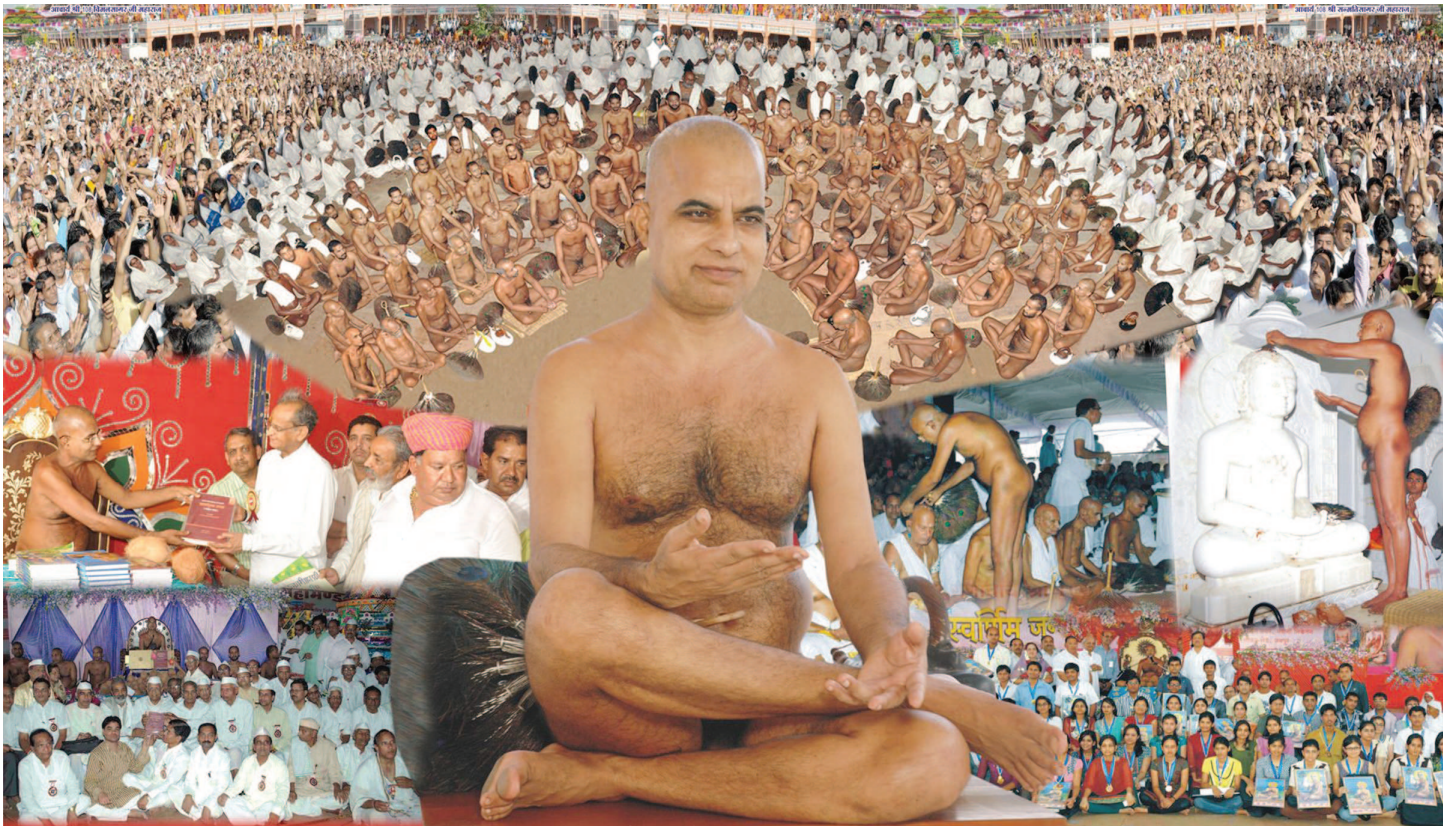

भारत गौरव, चर्या चूड़ामणि-युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक

प.पू.राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज एवं श्री दिगम्बर जैन विरागोदय तीर्थ धाम

■ **मुनि विवर्धन सागर**

भगवान महावीर स्वामी की श्रमण परंपरा आज जीवन्त है तो महान दिगम्बराचार्यों की श्रम साधना के कारण ही है, अनेक पूर्वाचार्य हुए जिन्होंने रत्नत्रय पंचाचारों का पालन करते कराते जिनवाणी की ज्ञान गंगा में अवगाहन करते अनेक मुमुक्षुओं को अज्ञान तिमिर से उतारकर मोक्षमार्ग पर लगाया है। मुनिकुंजर आचार्य आदिसागर अंकलीकर की परम्परा में परम्परा गौरव परम पूज्य निमित्तज्ञानी वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के परम प्रभावी शिष्य परम पूज्य चर्या चूड़ामणि भारत गौरव राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज वर्तमान श्रमण संस्कृति के ऐसे एक प्रमुख आचार्य हैं, जिनकी महानता को शब्दों में नहीं कहा जा सकता और ना ही कल्पना ही की जा सकती है। वे तो स्वयं अपने आप में शब्दातीत व कल्पनातीत हैं, सहज सरल वात्सल्यमयी साहसी विरागी छवि करुणा मूर्ति प्राणी मात्र के कल्याण की भावना से परिपूर्ण सबको अपना बनाने वाले इस बुन्देलखण्ड की धरा पथरिया को जग विख्यात करने वाले पथरिया नगर गौरव, बुन्देलखण्ड के आदर्श रत्न, श्रमण-संस्कृति के उन्नायक परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज जिनका संक्षिप्त में व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रस्तुत है कि आपका जन्म पथरिया जिला दमोह में श्रेष्ठी श्री कपूरचन्द जी श्रीमती श्यामा देवी के यहां 2 मई 1963 को हुआ जिन्हें आपने मुनि दीक्षा एवं आर्यिका दीक्षा प्रदान कर सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण कराकर उनकी पर्याय को सार्थक किया। बचपन में आपका अरविन्द नाम रखा गया, प्यार से सभी आपको टिन्नू कहकर पुकारते थे। प्रारंभिक शिक्षा प्रायमरी तक पथरिया में ही हुई। विद्यार्थी जीवन में सभी छात्र से मैत्री भाव रखते थे अतः सभी आपको सम्मान से दाऊ भैया कहकर पुकारते थे। आप अपने 3 छोटे भाई व दो बहिनें का आप बहुत ख्याल रखते थे। प्रायमरी शिक्षा के पश्चात आपकी आगामी शिक्षा श्री शान्ति निकेतन दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय कटनी में उत्तर मध्यमा तक हुई। पड़ौस में रहने वाले पति पत्नी के आपसी झगड़े देख आपने विवाह नहीं करने का मन बना लिया। आपकी रुचि जिनदर्शन पूजन स्वाध्याय असहाय-असमर्थों के सहयोग-मुनि संघों की सेवा वैय्यावृत्ति में अधिक रहती थी। कटनी में मुनि संघों का श्री शान्ति निकेतन दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय में आवास होता था अतः मुनियों की सेवा वैय्यावृत्ति करने का सौभाग्य आपको सहज ही प्राप्त हो जाता था। विद्यालय

के गुरुजनों की संगति से आपके अन्दर शिक्षा के साथ धर्म के भी संस्कार दृढ होते गये परिणाम स्वरूप आप पूज्य आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज ससंघ का विहार कराने गये तो फिर वापस नहीं लौटे और 20 फरवरी 1980 को मात्र 16 वर्ष की अल्पआयु में बुढ़ार में पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर क्षुल्लक पूर्णसागर हो गये। और एक ऐसे विराग की परिणति हुई कि बिना माता-पिता-परिवार की अनुमति के दीक्षा ले ली। दीक्षा के पश्चात् श्री कपूरचन्द जी ने हाथ पकड़ कर जबरन ले जाना चाहा तो आपने कहा कि जबरन ले तो जा सकते हो पर मैं आजीवन अन्न जल का त्याग कर दूंगा, पिता परिवार से ऐसा मोह टूटा कि लगभग 4 वर्ष तक तो कोई बात तक नहीं की ऐसी वैराग्य की दृढ़ता। 1982-83 में कारंजा (महा.) में आपको तपेदिक बीमारी के कारण समाज एवं डॉक्टरों ने अंग्रेजी दवा लेने को कहा क्योंकि बिना अंग्रेजी दवा से रोग का शमन सम्भव नहीं था अतः आपने मंदिर में भगवान चन्द्रप्रभु के समक्ष प्रतिज्ञा ले ली कि यदि मैं शीघ्र ठीक हो गया तो मुनि दीक्षा ले लूंगा अन्यथा समाधि मरण करुंगा, परिणाम यह हुआ कि आप शीघ्र ही स्वस्थ हो गये और आपने 9 दिसम्बर 1983 को परम पूज्य निमित्तज्ञानी आचार्य श्री विमल सागर जी से औरंगाबाद में जैनेश्वरी दीक्षा धारण की तब आपका नाम मुनि विराग सागर रखा गया। पुण्यवान जीव को पुण्य के उदय से अनेक उपलब्धियाँ स्वतः ही हो जाती है। यह आपका पुण्य ही था कि आप पर आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज का व पूज्य आचार्य विमलसागर जी का असीम स्नेह, वात्सल्य रहा। ज्ञान का अच्छा क्षयोपशम होने से आप को पंडित

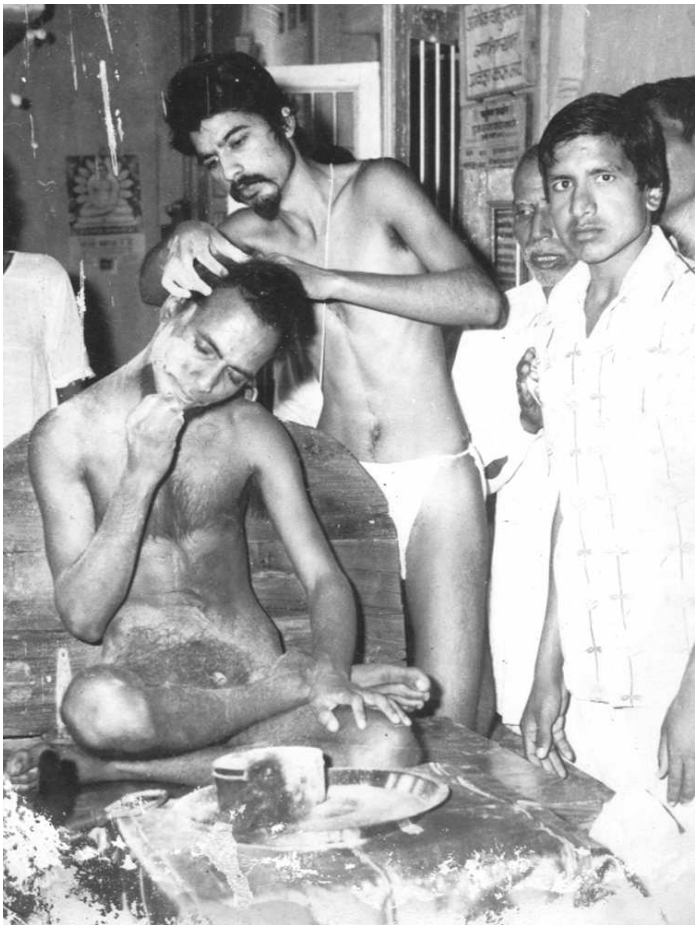

जी महाराज या शास्त्री जी महाराज का सम्बोधन मिला आदर एवं सम्मान मिला। एक अच्छे संघ नायक की प्रतिभा आपमें देख लगभग 10 आचार्यों ने अपना आचार्य पद आपको देने की घोषणायें की पर आप पद प्रतिष्ठा से निस्पृह रहे। मात्र 25 वर्ष की अवस्था में पूज्य गुरुदेव आचार्य विमलसागर जी की आज्ञा से दीक्षायें देना प्रारंभ कर दी। पूज्य आचार्य श्री विमलसागर जी की आज्ञा से 1992 में 8 नवम्बर को द्रोणगिरी जी में विद्वानों एवं समाज ने आपके मना करने पर भी जबरन उठाकर आचार्य पद के सिंहासन पर विराजमान कर आपको आचार्य पद से विभूषित किया। तप साधना में आपने अभी तक विभिन्न मंत्रों की 38760100 जापें 652 उपवास 35 व्रतों के 535 नीरस किये हैं। आपने अनेक वस्तुओं का त्याग कर दिया है, अष्टमी चतुर्दशी को नीरस आहार एवं मौन रखते हैं। अभी 40 वें मुनि दीक्षा दिवस पर रस परित्याग व्रत लिया। आपने अभी तक 241 दीक्षाएं दी हैं तथा 230 आपके प्रशिष्य हैं जिनमें 10 आचार्य, 204 मुनि, 4 गणिनी आर्यिका, 141 आर्यिका, 9 ऐलक, 43 क्षुल्लक, 58 क्षुल्लिका कुल मिलकर 471 शिष्य प्रशिष्यों के विशाल चतुर्विध संघ के आप नायक हैं। आप कुशल निर्यापकाचार्य हैं आपने अभी तक सर्वाधिक 139 सल्लेखना समाधियाँ कराकर उन भव्यात्माओं की मानव पर्याय को सार्थक बनाया। किसी भी आचार्य ने आज तक इतनी सल्लेखना समाधियाँ नहीं कराई। आपने 16 वर्ष से लेकर 102 वर्ष के एंसे हर प्राणी दीक्षा प्रदान की है जो अपना आत्म कल्याण करना चाहता है फिर चाहे वह किसी भी आयु का हो। आपके संघ में 14 प्रान्तों के साधक हैं। आपने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण देश के 14 प्रान्त में 1 लाख किलोमीटर का विहार कर अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान से लगभग 30 लाख लोगों को संकल्पित कराया है। आपके महान गुणों से प्रभावित हो विभिन्न समाजों ने सामाजिक संगठनों, विद्वानों द्वारा अनेक उपाधियों से अलंकृत किया है यथा - 1988 में क्रान्तिकारी संत, 1994 में बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य, 1995 में निस्पृहि संत, 1996 में आध्यात्म सिद्धान्त वारिधि, 2001 में न्याय मार्तण्ड, 2002 में तीर्थ उद्धारक, संत शिरोमणि, 2003 में उपसर्ग विजेता, 2004 में समाधि सम्राट, चारित्र शिरोमणि, 2005 में ज्ञान दिवाकर, सिद्धान्तरत्न, अध्यात्म योगी, 2006 में समतामूर्ति, 2007 में गणाचार्य, वात्सल्य रत्नाकर, राष्ट्रसंत, विमलकीर्ति, आचार्य गौरव, सिद्धान्त चक्रवर्ती, भारत गौरव, 2008 में न्याय भास्कर, श्रमण सूरि, 2009 में आचार्य रत्न, विद्यावारिधि, 2010 में प्रशान्त मूर्ति, चर्या चूड़ामणि, सूरीगच्छाचार्य, 2011 में विश्वहितेशी, वात्सल्य पुञ्ज, 2012 में अनुशासनरत्न, आगम अतिधन्वा, योगसम्राट, श्रमणशिल्पी, युगप्रतिक्रमण प्रर्वतक, 2013 में जीवन्त समयसार, प्रज्ञाशिरोमणि, शिरोमणि प्रज्ञानी, दीक्षासिद्ध हस्त, न्याय केशरी, इंटरनेशनल ओपन यूनिवर्सिटी के जोराष्ट्रिन कालेज मुंबई द्वारा (पी-एच. डी) डाक्ट्रेट, युग प्रवर्तक आगम रक्षक, 2015 में साहित्य महोदधि, 2016 में भारत भूषण, 2017 में सिद्धान्त वाचना वाचस्पति, बुन्देलखण्ड के आदर्शरत्न, आचार्य विज्ञ, आध्यत्मसूरि, श्रमण संस्कृति के उन्नायक, 2018 में भारतीय संस्कृति उन्नायक, 2020 में शुद्धोपयागी संत, सर्वोदय महाश्रमण, आदर्श समाजोद्धारक, 2021 में श्रुतधराचार्य, सारस्वत महाश्रमण, दुबई में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन संस्कृति युवा संगठन द्वारा ''भारत गौरव'' 2022 में काव्य परंपरा संवर्धक, वात्सल्य मार्तण्ड, आदि।

आपने सिद्धान्तिक ग्रंथों व अन्य ग्रन्थों पर 34 सफल वाचनायें की हैं साहित्य सृजन में आपके द्वारा - संस्कृत टीका साहित्य हैं - वारसाणुवेक्खा पर 1100 पृष्ठीय सर्वोदया टीका, जिस पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई, 1300 पृष्ठीय रत्नत्रयवर्धिनी, 350 पृष्ठीय श्रमणप्रबोधनी एवं श्रमणसंबोधानी, संस्कृत साहित्य-चूर्णी सूत्राणि 3000 सूत्र अनेक स्तोत्र, भक्तियाँ।

प्राकृत साहित्य - सम्मेद गिरिन्द थुदि, चउबीस तित्थयर थय, चदुबीस तित्थयर थुई, तीस चदुबीस तित्थयर थुदि, दंसणपाठो, सिरी अरहंत भत्ति, सिरि तित्थयर भत्ति, सिरिणिव्वाण भत्ति, चेइयभत्ति, संतिभत्ति, संतिणाह भाव थुदि, समाहिभत्ति, णंदीसर भत्ति, गुरुभत्ति, कोटि शिला जिन थुदि, सुयधराइरियभत्ति, सम्मेद गिरिन्द थुदि, कलिंग जिन थुदि एवं अनेक मंगलाचरण आदि।

आपके शोध पूर्ण साहित्य हैं -शोद्धोपयोग, सम्यग्दर्शन, आगमचक्खू साहू, सल्लेखना से समाधि, संत साधना के प्रेरक प्रसंग, परम दिगम्बर जैन मुनि, सर्वोदय जैन धर्म, तीर्थंकर दिव्य दर्शन, व्यसन विचार, संस्कार सुरभि, आध्यात्मिक शंका समाधान, आध्यात्मिक तत्व चर्चा, जिनेन्द्र दर्शन, जिनेन्द्र पूजन, आर्यिका चर्या एवं अनेक प्रकार की शांतिधारायें आदि।

चिन्तन साहित्य में -चैतन्य चिन्तन भाग 1, 2, 3

बालोपयोगी साहित्य -बाल विज्ञान भाग 1 से 4 तक,

कर्म विज्ञान भाग 1, 2, 3

पद्य साहित्य - भावो की विशुद्धि के क्षण, मुक्तकांजलि भाग 1-2, नव देवता, निर्वाण क्षेत्र पूजा, विरक्ति भावना, विमल स्तवन, बाहुबलि स्तुति, अनेक मंगलाचरण।

कथा साहित्य -नैतिक कथा मंजूषा भाग -1, 2, 3

ऐतिहासिक साहित्य - सम्मेद शिखर एवं कोटिशिला का इतिहास।

प्रवचन साहित्य - अनेक ग्रंथों पर प्रवचन, जीवों पर दया करो, क्यों इतना अभिमान, घर-घर की कहानी, शुद्ध शाकाहार करो, बुराइयाँ ही जेल अच्छाइयाँ ही मुक्ति, तीर्थंकर एसो बनो, तट की ओर, फोर यूथ प्रोग्रेस आदि।

महाकाव्य -6 खण्ड 53 अध्याय 1351 कविताओं का ''जल बिन्दु महा काव्य'', अठारह प्रकार की लिपियाँ। एकांकी नाटक आदि लगभग 150 पुस्तकें। आपके जीवन पर आधारित साहित्य - विरागाभिनन्दन ग्रंथ, निस्पृहि संत भाग 1-2-3, विराग सेतु, दिगम्बरत्व के चितेरे आत्मानुशासक एवं डॉ लोकेश खरे द्वारा पीएच-डी तथा श्रमण संस्कृति के उन्नायक फिल्म, अनेक शिक्षण शिविर, विद्वत संगोष्ठी -मुख्य 23 सामान्य अनेक, पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें 92, आपकी प्रेरणा से अनेक तीर्थों के जीर्णोद्धार अनेक मंदिर, धर्मशाला, संतशाला आदि का निर्माण इनमें - श्रेयांसगिरि, विरागोदय, चन्द्रगिरि पावई (रत्नत्रयगिरि) वरासों,आदि अनेक स्थान

विश्व की अद्भुत कृति विरागोदय तीर्थ

विरागोदय तीर्थ (धर्मधाम) पूज्य गणाचार्य श्री के एक अनन्य भक्त श्री प्रकाशचन्द जी चौधरी बीना की भावना थी कि पूज्य गुरुदेव की जन्म स्थली पर भव्य तीर्थ का निर्माण हो उनकी पवित्र भावनाओं साकार रूप जहाँ पूज्य गणाचार्य श्री के मंगल आशीर्वाद-निर्देशन एवं श्रमण श्री विहितसागर जी व श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री की प्रेरणा से कमलाकार विशाल जिन मंदिर ढाई

द्वीप के समस्त पूज्यनीय महापुरुषों तीर्थंकरों व आचार्यों के दर्शन प्राप्त होंगे। जहाँ 58 फुट ऊँची विशाल वेदी पर मूलनायक श्री धर्मनाथ भगवान की 31 फुट ऊँची एवं 27.27 फुट उतंग श्री आदिनाथ जी एवं भगवान श्री महावीर स्वामी जी की भव्य मनोहारी जिनबिम्ब, जिनके दर्शन रेलमार्ग एवं सड़क मार्ग से होते हैं, विराजमान हैं। मंदिर जी के तलभाग में 24 कक्षों की मुनि वसतिका एवं विशाल सभागृह, प्रथम तल में वर्तमान कालीन 24 तीर्थंकरों के 24 जिन मंदिर जिनमें 5-5 फुट उतंग अष्टप्रतिहार परिमल सहित 24 तीर्थंकरों के जिनबिम्ब विराजमान हैं तथा 2 कमल मंदिर, विशाल श्रुत भण्डार एवं श्रुतस्कन्ध तथा भगवान महावीर स्वामी जी की परम्परा से श्रुत केवली, अंग, अगांशधारी आचार्यों एवं परंपराचार्यों के बिम्ब, पुस्तकालय, वाचनालय हैं। द्वितीयतल पर भूतकालीन 24 तीर्थंकरों के 4 फुट उतंग भव्य जिनबिम्बों के 24 जिन मंदिर तथा 2 कलश मंदिर जिनमें भगवान श्री वासुपूज्य जी एवं भगवान श्री शान्तिनाथ जी के जिनबिम्ब विराजमान हैं साथ ही विशाल हॉल में तीस चौबीसी के 720 रत्न के एवं सब धातु के 5 इंच से लेकर 7 इंच के भव्य जिनबिम्ब विराजमान हैं। तृतीय तल पर विशाल 3 जिनबिम्बों के अतिरिक्त भविष्य कालीन 24 जिनबिम्ब एवं विदेह क्षेत्र सम्बन्धी 20 तीर्थंकर विराजमान होने जा रहे हैं, मंदिरों की दीवारों पर विभिन्न चित्र एवं पूज्य गणाचार्य श्री के जीवन पर आधारित चित्र अंकित किये गये हैं - मुनि वसतिका की बाहरी दीवालों पर लाल पत्थर पर ब्राह्मी लिपि में एवं पूज्य गणाचार्य श्री द्वारा रचित 18 लिपिओं में णमोकार मंत्र अंकित किया गया है मंदिर जी के सिंहद्वार के दोनों ओर हाथी मंगल द्रव्य लिये खड़े हैं।

त्यागी व्रती श्रावकों को चौका लगाने हेतु 42 आवास, यात्रियों हेतु तीन धर्मशालाऐं, भोजनशाला, केन्टीन एवं मध्य में चार भव्य द्वारों से शोभित उद्यान है। तीर्थक्षेत्र समिति द्वारा आयुर्वेदिक औषधालय का भी संचालन किया जाता है। क्षेत्र के ठीक ईशान भाग में तीर्थक्षेत्र कार्यालय एवं जिनालय स्थापित है। तीर्थक्षेत्र का मुख्य द्वार लाल पत्थर से निर्मित है। तीर्थक्षेत्र कुण्डलपुर एवं नैनागिर के मध्य पथरिया नगर से 3 कि.मी. पर दमोह रोड पर स्थित यह भव्य श्री दिगम्बर जैन विरागोदय तीर्थ (धर्मधाम) श्रद्धालुओं के मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला, पुण्यार्जन प्रदान करने वाला श्रद्धा और आस्था एवं धार्मिकता को वृद्धिंगत करके एक अलौकिक तीर्थक्षेत्र है।

■ मंगल सूत्र किसी भी पुरुष को पति तो बना देता है, मगर जानवर से इंसान नहीं।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ

विश्व में अनेक संस्कृतियां है उनमें दिगम्बर जैन संस्कृति आध्यात्म तप और त्याग में सर्वोच्च मानी गयी है। यदि इस देश की पहचान हैं तो त्याग तप की संस्कृति से है। पश्चात्य संस्कृति भोगवादी मानी जाती है। यहां समय-समय पर महापुरूषों ने जन्म लेकर त्याग तप के संस्कारों से सींचा है। यहां अन्य देशों की अपेक्षा लोगों में धार्मिक संस्कार अधिक पाये जाते हैं यही कारण है कि यहां गांव, नगर, शहरों में गली-गली में मंदिर और मूर्तियां हैं। इन सब में दिगम्बर जैन मंदिर और मूर्तियां अपना अलग ही प्रभाव रखती हैं, अतिशयकारी हैं जिनके दर्शन पूजन से श्रद्धालुओं के पापों का क्षय होता है तथा सुख शान्ति की प्राप्ति होती है। दिगम्बराचार्यों द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों में इस प्रकार के अतिशय प्रत्यक्ष रूप से देखे जाते हैं। पू. गणाचार्य बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज के पावन सान्निध्य में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं व उनके द्वारा प्रतिष्ठित जिनबिम्बों में अनेक बार अतिशय देखने को प्राप्त होते हैं। प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के सानिध्य में क्षुल्लक अवस्था से अभी तक सम्पन्न हुई पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें - जिनमें लगभग आठ हजार अचेतन कृतियों को उनके द्वारा सूरीमंत्र देकर पूजता प्रदान की गई -

1. 1980 - रायपुर (फाफाडीह)
2. 1983 - कुंथलगिरि (महा.)
3. 1983 - औरंगाबाद (महा.)
4. 1984 - मुक्तागिरि (महा.)
5. 1984 - सूखा (गुज.)
6. 1984 - भुसावल (महा.)
7. 1984 - भावनगर (गुज.)
8. 1984 - पालीताना (गुज.)
9. 1985 - ईडर (गुज.)
10. 1985 - केशरिया जी (गुज.)
11. 1986 - सुजानगढ़ (राज.)
12. 1986 - नागौर (राज.)
13. 1887 - जयपुर (राज.)
14. 1987 - जयपुर (राज.)
15. 1987 - जयपुर (राज.)
16. 1987 - जयपुर (राज.)
17. 1988 - सांगानेर (राज.)
18. 1988 - पदमपुरा (राज.)
19. 1988 - निवाई (राज.)
20. 1988 - महावीर जी (राज.)
21. 1988 - धौलपुर (राज.)
22. 1988 - मुरैना (म.प्र.)
23. 1988 - सोनागिर (म.प्र.)
24. 1990 - पथरिया (म.प्र.)
25. 1992 - पन्ना (म.प्र.)
26. 1993 - बीना (म.प्र.)
27. 1994 - साढूमल (उ.प्र.)
28. 1994 - अति. क्षे. पपौरा जी
29. 1995 - जतारा (म.प्र.)
30. 1995 - ढोंगा (टीकमगढ़)
31. 1995 - क्षेत्रपालजी ललितपुर
32. 1996 - द्रोणगिरि जी (म.प्र.)
33. 1996 - देवेन्द्र नगर, पन्ना
34. 1997 - टीकमगढ (म.प्र.)
35. 2000 - कीर्ति स्तंभ भिण्ड
36. 2000 - करगुवां जी झांसी
37. 2000 - श्री सम्मेद शिखरजी
38. 2002 - सिलवाल
39. 2003 - श्रेयांसगिरि
40. 2003 - बीना
41. 2005 -कुन्थुगिरि
42. 2005 - मूडबिद्री
43. 2006 - कनकगिरि
44. 2006 - श्रवणेलबगोला
45. 2007 - वरूच (कर्ना.)
46. 2007 - शिरडशहापुर
47. 2008 - उदगांव (महा.)
48. 2008 - उदगांव (महा.)
49. 2010 - केशरिया जी
50. 2010 - लोहारिया
51. 2011 - अति. क्षे. चमलेश्वर
52. 2011 - शाहपुरा (राज.)
53. 2011 - भिण्ड (म.प्र.)
54. 2012 - फूप (भिण्ड)
55. 2012 - सोनागिर
56. 2012 - कलवाड़ा (राज.)
57. 2012 - कोटड़ी (राज.)
58. 2013 - नीमच (म.प्र.)
59. 2014 - कारीटोरन (उ.प्र.)
60. 2014 - बमीठा (म.प्र.)
61. 2014 - छतरपुर (म.प्र.)
62. 2014 - राजनगर (म.प्र.)
63. 2015 - मोहन्द्रा (म.प्र.)
64. 2015 - सिंहपुर (म.प्र.)
65. 2015 - लवकुशनगर (म.प्र.)
66. 2015 - श्रेयांसगिरि (म.प्र.)
67. 2015 - हरदुआ (म.प्र.)
68. 2015 - शाहगढ़ (म.प्र.)
69. 2015 - दमोह (म.प्र.)
70. 2016 - पाली (उ.प्र.)
71. 2016 - महामृत्युंजय तीर्थ उदी (उ.प्र.)
72. 2016 - महेगांव (भिण्ड)
73. 2017 - ग्वालियर (म.प्र.)
74. 2017 - हिसार (हरियाणा)
75. 2017- इन्द्रापुरम गाजियाबाद
76. 2018 - सावर (राज.)
77. 2018 - वरासो (भिण्ड)
78. 2018 - भिण्ड
79. 2018 - गया (बिहार)
80. 2018 - श्री सम्मेदशिखर जी
81. 2019 - श्री सम्मेदशिखर जी
82. 2019 - वरही (भिण्ड)
83. 2019 - वरासो (भिण्ड)
84. 2020 - जामना (भिण्ड)
85. 2021 - आसई (इटावा)
86. 2021 - सरा (उ.प्र.)
87. 2021 - इटावा (उ.प्र.)
88. 2021 - कुनैरा (इटावा)
89. 2022 - भिण्ड (विकासमीर)
90. 2022 - मेहगांव (भिण्ड)
91. 2022 - मझवां (मिरजापुर)
92. 2022 - अमानगंज

■ सच्चा मित्र आनंद को दुगुना तथा दुख को आधा कर देता है।

सहज राज-योग
युग प्रतिक्रमण

■ **डॉ. श्रीमती अल्पना अशोक जैन मोदी**
डॉ. शिवहरे के पास, गणेश कॉलोनी, नया बाजार
लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.) 474009
मो. 8989737946

प्रतिक्रमण जैन परम्परा का एक अति विशिष्ट शब्द है। प्रतिक्रमण कोई जटिल व विशिष्ट योग साधना नहीं है। प्रतिक्रमण तो सहज राज-योग है। यह वह यज्ञ है जिसमें अपनी कमजोरी, प्रमाद, उत्तेजनाओं व भूलों की आहुती देनी होती है। यह वह अक्रम पुरुषार्थ है जिसमें मात्र जानना होता है। प्रतिक्रमण अर्थात् अपने में लौटना, स्वयं का चिन्तन करना। प्रतिक्रमण अनावश्यक, अनाधिकृत, अशोभनीय, सफलता में बाधक जो अतिक्रमण किए हैं उन्हें अन्तर से स्वीकारोक्ति कर जिन कदमों से बाहर गये हैं, उन्हीं कदमों से वापस लौटना।

जिन प्रवृत्तियों से साधक सम्यगदर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्र रूप स्वस्थान से हटकर मिथ्यात्व, अज्ञान असंयम रूप परस्थान में चला गया हो उसका पुनः अपने आप (स्वस्थान) में लौट आना प्रतिक्रमण या पुनरावृत्ति है। अथवा सम्पूर्ण चेतना को समेट लेना 'प्रतिक्रमण' है। जैसे सूर्य संध्याकाल के समय अपनी समस्त किरणों को वापस बुला लेता है, अपने में समेट लेता है, वैसे ही 'प्रतिक्रमण' के द्वारा साधक अपनी विस्तृत हुई समस्त चेतना को जहाँ-जहाँ विस्तारित हुई हैं, उस विस्तृति को वापस बुला लेना, पुनः लौटना। अतएव 'प्रतिक्रमण' का अर्थ - चलना, अपनी ओर वापस लौट आना है। प्रतिक्रमण साधक जीवन की एक अपूर्व क्रिया है, स्वभाव या ठहराव नहीं है। दोष क्षेत्रों से वापस आत्मशुद्धि के क्षेत्र में लौट आने का क्रम 'प्रतिक्रमण' है। अपनी मर्यादाओं का अतिक्रमण करके अपनी स्वभाव दशा से निकलकर विभाव दशा में चले गये थे तो पुनः स्वभाव रूप सीमाओं में प्रत्यागमन करना 'प्रतिक्रमण' है। असत् से सत् की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा अणु से पूर्ण की ओर गति करना प्रतिक्रमण का अर्थ है। प्रतिक्रमण एक स्नान है, जो आत्मा के मल को प्रक्षालित कर उसे पवित्र बना देता है। 'प्रतिक्रमण' के बिना आत्मशुद्धि सम्भव नहीं है। जयसेनाचार्य स्वामी ने श्री समयसार की टीका में लिखा है कि - प्रतिक्रमण कृतदोषनिराकरणं अर्थात् किए हुए दोषों का निराकरण करना ही प्रतिक्रमण है। यह आत्म निरीक्षण है, जिससे व्यक्ति को स्वयं अपने जीवन का सुखद मार्ग प्राप्त होता है। प्रतिक्रमण कोई भी साधारण व्यक्ति कर सकता है। यह वह विधान है जिसमें सफलता की शत-प्रतिशत गारंटी रहती है।

प्रतिक्रमण के समानार्थक (पर्यायवाची) शब्द

श्वेताम्बर जैन परम्परा के आवश्यक निर्युक्ति, आवश्यक चूर्णि, आवश्यक हारिभद्रीयावृत्ति, आवश्यक मलयागिरिवृत्ति प्रभृत्ति ग्रन्थों में प्रतिक्रमण के विषय में अति विस्तार सहित चर्चा की गई है। पडिकमणं पडियरणा परिहरणा वारणा नियत्ती य । निन्दा गरिहा सो ही, पडिकमणं अट्ठहा होई। अर्थात् प्रतिक्रमण के उन्होंने आठ समानार्थक शब्द प्रतिक्रमण, प्रतिचरणा, परिहरणा, वारणा, निवृत्ति, निन्दा, गर्हा और शुद्धि बतलाये हैं। जो विभिु अर्थों को अभिव्यक्त करते हैं। यद्यपि आठों शब्दों का भाव एक है। प्रतिक्रमण जैन धर्म का प्राण है। विभिु आचार्यों ने इसके स्वरूप पर प्रकाश डाला है। आचारसार ग्रन्थ में कहा है कि -

निन्दनं गर्हणं कृत्वा द्रव्यादिषु कृतागसाम्।
शोधनं वाङ्मनः कायैस्तत्प्रतिक्रमणं मतम्।।

प्रतिक्रमण के विषय में मूलाचारकार ने लिखा है कि -

द्रव्य खेत्ते काले भावे य कयावरा हसोहयणं।
णिंदणगरहण जुत्तो मणवचकायेण पडिक्कमणं।।

अर्थात् - निन्दा गर्हा पूर्वक मन, वचन, काय के द्वारा द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के विषय में किये गये अपराधों का शोधन करना प्रतिक्रमण है। हरिवंशपुराण में लिखा है कि -

द्रव्ये क्षेत्रे काले भावे च कृत प्रमाद निर्हरणम्।
वाङ्मायमनः शुद्धया प्रणीयते तु प्रतिक्रमणम्।।

अर्थात् -द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के विषय में किये हुए प्रमाद का मन, वचन, काय की शुद्धि से निराकरण करना सो प्रतिक्रमण है। मूलाचार प्रदीपकार ने इसे ही विस्तृत रूप में इस प्रकार परिभाषित किया है-

द्रव्य क्षेत्रादिकैः भार्वै, कृतापराध शोधनम्।
स्व निंदा गर्हणाभ्यां यत् क्रिया तत्र मुमुक्षुभिः।।
मनोवाक्काययोगैश्च कृत कारितमाननैः।
तत्प्रतिक्रमणं प्रोक्तं व्रतदोषापहं शुभम्।।

अर्थात् - मोक्ष की इच्छा करने वाले जो मुनि मन, वचन, काय और कृत, कारित, अनुमोदना से द्रव्य क्षेत्रादिक भावों से उत्पु हुए अपराधों को शुद्ध करते हैं उसे व्रतों के दोषों को दूर करने वाला शुभ प्रतिक्रमण कहते हैं। उपर्युक्त परिभाषाओं में अपराध किस विषय में हो सकते हैं ? .....और उनका निराकरण कैसे करें? इस जिज्ञासा का समाधान किया है। मूलाचार प्रदीप की व्याख्या में कृत - स्वयं करना, कारित - दूसरों से करवाना, अनुमोदना - करने वालों को प्रोत्साहित करना। इनसे उत्पु होने वाले अपराधों को प्रतिक्रमण से दूर किया जाता है। भगवती आराधना की विजयोदया नामक

■ सुख देर-सबेर ऊब पैदा करने लगते हैं क्योंकि वे किसी न किसी परिस्थितियों पर निर्भर होते हैं।

टीका में आचार्य अपराजित सूरि ने कहा है - ***हिंसादि-भेदेन सावद्य योग विकल्पं कृत्वा ततो निवृत्तिः प्रतिक्रमणम्।*** अर्थात् - हिंसादि के भेद से सावद्य-योग के भेद करके उससे निवृत्ति प्रतिक्रमण है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव पूर्वक किये हुए दोषों, अपराधों का मन, वचन और काय से निन्दा (आत्मालोचन या अपनी भूलों के प्रति अनादर का भाव प्रगट करना) और गर्हा (गुरु आदि के समक्ष अपनी भूलों को प्रगट करना) के द्वारा शोधन करना प्रतिक्रमण है अथवा प्रमाद पूर्वक किये गये अतीत कालीन दोषों का निराकरण करना 'प्रतिक्रमण' है। समय पाहुड में वर्णित है कि - जैनाचार में 'प्रतिक्रमण' दोषों को दूर करने का मुख्य साधन है। इसमें पूर्वकृत कर्मों की निर्जरा होती है। निर्जरा संवर पूर्वक हो तो तब ही वह निर्जरा मान्य है। संवर रूप समस्त व्रत, संयम, शील, तप, आराधना आदि प्रतिक्रमण की कोटि में आ जाते हैं, क्योंकि वे जीव को प्रमादजनित दोषों से दूर रखते हैं। वर्तमान में लगे दोषों को दूर करना और भविष्य में लगने वाले दोषों को दूर करना और भविष्य में न लगने वाले दोषों को नहीं होने देने के लिए सावधान रहना प्रतिक्रमण का मुख्य उद्देश्य है।

युग प्रतिक्रमण - यति सम्मेलन

जैनागम में युग प्रतिक्रमण का उल्लेख प्राप्त होता है। पंचवर सादो युगोः अथवा पंच वच्छरेहि जुगं। अर्थात् - पाँच वर्ष प्रमाण काल को युग कहते हैं या काल प्रमाण की दृष्टि से पाँच वर्षों का एक युग होता है। यह अर्थ लिया है तथा पाँच वर्ष में सामूहिक रूप से साधुओं द्वारा किया जाने वाला प्रतिक्रमण युग प्रतिक्रमण कहा गया है।

युग-प्रतिक्रमण की प्रणाली प्राच्य आचार्यों से संबद्ध होने से श्रमण संघों में अनुकरणीय है। ऐतिहासिक दृष्टि से युग प्रतिक्रमण की परम्परा अंगाश के ज्ञाता आचार्य अर्हद्बलि से संबद्ध परिलक्षित होती है। पूर्व काल में आचार्य अपने विविध विशाल संघों को एक स्थान पर एकत्रित होने के लिए आमंत्रित करते थे। पाँच वर्ष में साधु कहीं पर हों, समस्त संघ एकत्रित होकर एक साथ वात्सल्य भाव के साथ यह महान् अनुष्ठान करते थे और बाद में फिर पाँच वर्ष के लिए भावी योजना बनाकर विहार कर चले जाते थे। इसका उल्लेख इन्द्रनन्दि कृत श्रुतावतार, जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश, जैन धर्म का प्राचीन इतिहास, षट्खण्डागम ग्रन्थ की भूमिका, षड़खण्डागम परिशीलन, तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, दिगम्बरत्व की खोज आदि ग्रन्थों में मिलता है।

दिगम्बर जैन परम्परा में पूज्य आचार्य श्री अर्हद्बलि के पश्चात् युग प्रतिक्रमण कराने के अन्य प्रमाण नहीं मिलते हैं। जबकि श्रमण परम्परा में आचार्य श्री अर्हद्बलि के पश्चात् समय-समय पर अनेकानेक प्रतिभाशाली श्रमणाचार्यों का काल व्यतीत हुआ है।

दिगम्बर जैन सभी साधु (चतुर्विध संघों) का एक जगह एकत्रित होना-मिलना यति सम्मेलन कहा गया है। प्रति पाँच वर्ष में युग प्रतिक्रमण के नाम से संघों के मिलने का आगम प्रमाण मिलता है। श्री धरसेनाचार्य के समय वेणाक नदी के तट पर ऐसा यति सम्मेलन हुआ था, जहाँ से दो मुनि शिष्यों को उन्होंने श्रुतज्ञान प्रदान करने हेतु बुलाया था। इन्द्रनन्दि श्रुतावतार के अनुसार आचार्य अर्हद्बलि लगभग पाँच वर्षों की समाप्ति पर एक यति सम्मेलन करवाते थे। षट्खण्डागम की प्रस्तावना में एच. एल. जैन लिखते हैं कि अर्हद्बलि ने पंचवर्षीय युग प्रतिक्रमण के समय बड़ा भारी यति सम्मेलन किया। ज्ञात होता है कि यति सम्मेलन की परम्परा आचार्य अर्हद्बलि और धरसेनाचार्य के समय परिपुष्ट अवस्था में विद्यमान थी। किन्तु कालान्तर में यह परम्परा लुप्त प्रायः हो गई। अनेक वर्षों से साधु संघों के मध्य युग प्रतिक्रमण जनसामान्य के समक्ष वृहद रूप से सम्पु नहीं हुआ।

परम पूज्य भारत गौरव राष्ट्रसंत उपसर्ग विजेता गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज 21 वीं सदी में अनेकानेक अनूठे प्रतिमान स्थापित कर रहे हैं। जो अनेकों षताब्दियों तक स्मृत किये जाते रहेंगे। परम पूज्य गणाचार्य श्री जी ने सन् 2012 में देश की गुलाबी नगरी से विख्यात जयपुर में श्रमण संघ की विलुप्त परम्परा युग प्रतिक्रमण - यति सम्मेलन को पुनरुज्जीवित ही नहीं किया बल्कि पंचवर्षोपरांत सन् 2017 में अतिशय क्षेत्र करगुंवा जी (झाँसी) में द्वितीय युगप्रतिक्रमण आयोजित किया और यह सन्देश भी दे दिया कि अब इस विस्मृत परम्परा को अनवरतता प्रदान कर दी है। अब तृतीय युग प्रतिक्रमण-यति सम्मेलन पूज्य गणाचार्य श्री जी की जन्म नगरी पथरिया (म.प्र.) में नव निर्मित विरागोदय (धर्मधाम) तीर्थ में सम्पु हो रहा है। यह अत्यंत गौरव और हर्ष का विषय है। युग प्रतिक्रमण और यति सम्मेलन की वर्तमान में जिनषासन वर्धमान हो, इसलिए इसकी विशिष्ट उपयोगिता है। समस्त श्रमण संघों में परस्पर वात्सल्य में यह हेतु बनता है, इससे सम्पूर्ण श्रमण समूह जो विभिु क्षेत्रों में विहार एवं चर्या कर रहे हैं उन्हें एक सूत्र में पिरोया जाता है। संघ वात्सल्य का षंखनाद होता है। तीर्थंकर प्रणीत परम्परा में श्रमणों का परस्पर विहार अर्थात् समाचार विधि तथा जिनाज्ञा का पालन करने का सन्देश-शिक्षा भी मिलती है।

युग प्रतिक्रमण जिनशासन की प्रभावना का हेतु है क्योंकि जहाँ यतियों का विशाल समुदाय होता है, वहाँ लोक में सहज साधना की चर्चा रहती है। आत्मा साधना सहित, आत्म प्रभावना भी सहज होती है। इस वृहद आयोजन से सम्यग्दर्शन को दृढ़ किया जा सकता है। बौद्धिक जगत में विद्वान आदि भी युग प्रतिक्रमण यति सम्मेलन से जुड़कर जिन प्रभावना के मार्ग में अग्रसर हो रहे हैं तथा वर्तमान कलिकाल में जो संस्कारों का ह्रास हो रहा है, उसके लिए श्रमण संघों और विद्वानों के माध्यम से नये-नये अनिमेष खुल रहे हैं। विद्वानों को भी एक नयी सोच, चिंतन और विमर्श का आधाार मिल रहा है। ऐसे स्वर्णिम अवसरों पर सामान्यतः वैचारिक आदान-प्रदान की मुख्यता रहती है जो आगे जाकर रचनात्मक प्रवृत्तियों में सहयोगी अवश्य बनेंगे। यति सम्मेलन सम्पूर्ण श्रमण संस्था एवं श्रावक जनों के लिए एक ऐसा दर्पण है जिसके माध्यम से यह सन्देश प्रसारित होता है कि किस प्रकार सभी हिलमिलकर वात्सल्य के साथ रह सकते हैं। एकता संगठन की समाज को प्रेरणाऐं मिलेंगी और श्रमण संघ के प्रति विशिष्ट श्रद्धाभाव उत्पु होगा, युवा वर्ग में भी सहज में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण एवं अंकुरण होगा क्योंकि ऐसे वृहद आयोजनों में युवा वर्ग भी सक्रिय रहकर अपना योगदान देता है। युग प्रतिक्रमण और यति सम्मेलन से श्रमण संघों एवं समाज में एकता संगठन और सौहार्दता का संचार अवश्य ही होगा। तो आइये हम इस महामहोत्सव में 1 फरवरी से 15 फरवरी तक समस्त आयोजन में सम्मिलित होकर आत्म प्रक्षालन करें एवं अपने दोषों की निंदा, गर्हा, आलोचना कर प्रायश्चित करें। -

खम्मामि सव्व जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ति में सव्व भूएसू वैरं मज्झं ण केण वि।।

अकथनीय-अकल्पनीय व्यक्तित्व के धनी

■ **श्रमणी आर्यिका विदुषीश्री**

वैदिक संस्कृति में गंगा की पूजा गंगा के जल से ही की जाती है। इसी प्रकार जो आपको लिखा हुआ दृष्टव्य हो रहा हैं उसमें सिर्फ मेरे हाथ, मेरी कलम और कागज तो है पर मेरे हाथों में कलम से कागज पर लिखने की जो सामर्थ्य आयी है वह सब पू. गुरुदेव का आर्शीवाद है। इसलिये मानसरोवर के राजहंस सदृश्य पू. गुरुदेव के ज्ञान रूपी मानसरोवर से कुछ पुष्पों को चुनकर पू. गुरूदेव की चरण वंदना कर रहे है। चूंकि यह मेरी नादानी है फिर भी चरण वंदना के लिए मन वाचाल है।

क्योंकि मेरे गुरु प्रताप में सूर्य को जीतते है, शीतलता में चंदन को जीतते है, क्षमा में धरती को, विनय में लता को, तत्व चर्चा में सर्वार्थसिद्धि के देवो को सौम्यता में चंद्रमा को, कोमलता में नवनीत को, निर्मलता में पानी को, चिंतन में हिमालय को, उदारता में दान वीर कर्ण को, उपकार में वृक्ष को, गंभरता में सागर को, भक्ति में चंद्रगुप्त को, समर्पण में एकलव्य को, सेवा में आरुणि को, बोलने में कोयल को, गमन में हस्ति को, चर्या में सिंह को, चारित्र में दूध को, तर्क में अकंलक देव को, श्रद्धा में सुमेरु को जीतते है। ऐसे उपमातीत पू. गुरुदेव के जीवन रुपि झरोखें में झांकते है तो अनेक चेतन रूपी रत्नों को पाते है जिनसे चेतनमय शरीर शोभायमान होता है।

गुरु के समर्पण को पहचानो

जैसे एक माँ बच्चे को गर्भ में धारण करने के पूर्व ही बच्चे के प्रति समर्पण भाव से भरती है और गर्भ धारण करने के बाद पूर्ण समर्पण भाव से उसकी सुरक्षा का हर पल प्रयास करती है और अपनी हर चर्या का ध्यान रखते हुये अपने व बच्चे के जीवन अंत तक पूर्ण रूप से समर्पित रहते हुये श्वास-श्वास में बच्चे के सुख-शांति की आस करती है। इसी प्रकार हे गुरुदेव! आप है जो संसार के प्रणियों के दुखों को देख कर दया और करुणा से भर जाते है और शरणागत को शरण देकर ज्ञान रूपी गर्भ में पालते पोषते है। स्वयं आगे चलकर रास्ते के कंकड-पत्थर-काँच काँटे अलग करते है, छत्र बन कर ओले-शोले बरसात से रक्षा करते है, कष्ट आने पर सुरक्षा कवच बन कर सुरक्षा करते है। जैसे पक्षी नव प्रसूत शिशु को अपने पंखों के नीचे रख कर सुरक्षित करता। अतः हर पल में गुरु के समर्पण को पहचानो।

बहुत अधिक समय देते है शिष्यों को

हे पू. गुरुदेव! यह भी आपकी अपनी खूबी है कि आप अपने शिष्यों को अंतेवासिन बना कर अपनी चरण निश्रा में (प्रातः काल से लेकर सन्ध्याकाल तक की) बहुत अधिक क्रियायें (धर्मध्यान की) स्वयं करते हुये, शिष्यों को भी करने का अधिक समय अनेक प्रकार से देते है। जिससे शिष्य प्रशस्त चर्या व चर्चा के साथ गुरु के साँचे में ढल कर गुरु के सदृश्य सफलता को प्राप्त कर लेता है।

वात्सल्य का चुम्बकीय आकर्षण

जैसे हीरा जमीन के अंदर कंकर-पत्थरों के मध्य पैदा होता है और वही विकास को प्राप्त होता है। अंत में किसी श्रेष्ठ जौहरी के हाथ में पहुँच कर अपनी आभा-प्रभा से जगत के प्राणियों को आकर्षित कर अपना दिवाना बना लेता है। वैसे ही हे गुरुदेव! आप है जो पत्थरों के मध्य बसी पथरिया की पावन वसुंधरा पर जन्म लेकर विकास को प्राप्त हुये और अंत में कुशल जौहरी प. पू. आ. श्री सन्मतिसागार महाराज एवं प. पू. आ. श्री विमलसागर जी महाराज के कर कमलों में पहुँच कर अपनी आत्मा को प्रभावित कर और जगत् के प्राणियों को अपने वात्सल्य से प्रभावित कर अपना दिवाना बना लिया है। गुरुदेव! आपके वात्सल्य में चुम्बक की शक्ति से अधिक शक्ति है।

सतिशय पुण्य पुरुष

बड़े भाग मानुष तन पाया, सुर दुर्लभ ग्रंथन ही गावा। कहा जाता है। इस संसार में बड़े पुण्य के योग ये मनुष्य पर्याय प्राप्त होती है जिसकी महिमा देवताओं ने ग्रंथों में भी गायी है। इसी प्रकार हे ज्ञान रूपी मानसरोवर के राजहंस! आपने मनुष्य पर्याय के साथ जैन कुल में जन्म लेकर ही अपने पुण्य की महिमा को प्रकट नहीं किया बल्कि जैन धर्म की आन-बान-शान स्वरूप, अनादि अनिधन स्वरूप वीतराग शासन की, आत्मकल्याण व आत्मानुशासन की ध्वजा को धारण कर जगत् के मध्य अपने सर्वोत्कृष्ट पुण्य की महिमा को प्रस्तुत किया है और उसके माध्यम से नूतन साधना कर नूतन पुण्य का संचय कर रहे है साथ ही सभी प्राणियों के लिये भी आपकी प्राप्ति पुण्य का उदय हुई है और सभी आपके के नूतन पुण्य का संचय कर अपने जीवन व जन्म को धन्य कर रहे है। अतः हे गुरूदेव! आप स्वयं के लिये व सभी के सतिशय पुण्य पुरुष है।

■ यादें उन चीजों से जुड़े रहने का तरीका है जिन्हें आप प्रेम करते हैं और खोना नहीं चाहते हैं।

सिद्ध सदृश्य आपका दर्शन

हे महानस्वी गुरुदेव! हमने सिद्धों को देखा नहीं कि सिद्ध कैसे होते है, उनका रूप-स्वरूप कैसा होता हैं? लेकिन शास्त्रों में पढ़ा है और आपके मुखारविन्द से सुना है कि जो शरीर से रहित होते है वे सिद्ध होते है! और वे सिद्ध निर्ग्रंथ संत ही बनते है। अतः निर्ग्रंथ संत की तरह ही सिद्ध होते है। इसलिये जब-जब आपके दर्शन करते है तो लगता हैं साक्षात् सिद्धों का दर्शन हो गया। और सिद्धों के दर्शन जैसे आनंद की अनुभूति होती है।

आप एक होकर भी अनेक है

हे महायशस्वी गुरुदेव आपकी महिमा निराली है कि आप एक होकर भी सभी के पास रहते है, सभी के साथ रहते है, सभी के मन रूपी मंदिर में विराजमान है, सभी के हृदय में समाहित है, जहाँ चाहे वहाँ आप मिल जाते है, जहाँ चाहे वहाँ आपको बुला लेते है, जब चाहे तब आपको पुकार लेते है, जब चाहे तब मिल जाते है, जिस रुप में चाहे उसरूप में मिल जाते है, जिस परिस्थिति में चाहे उस परिस्थिति में मिल जाते है, जो चाहे उसके पास पहुँच जाते है, कभी शब्दो में मिल जाते है तो कभी चर्या में मिल जाते है, कभी शास्त्रों में मिल जाते है तो कभी समता और प्रसन्नता में मिल जाते है। इसलिये तो हे गुरुदेव! अनेक रुपों में होने से आप एक होकर भी अनेक है।

आपकी नजर सभी पर

हे महामानव! यह आपकी अपनी अद्वितीय विशेषता है कि आप एक होकर भी एकांत स्थान पर हो कर भी आप सभी पर नजर रखते है। चूंकि सभी की नजर में आप है यह भी विशेष बात है। लेकिन आपकी नजर सभी पर है यह विशेष में विशेष बात है। केवलज्ञानी को तो केवलज्ञान में सभी नजर आते है लेकिन आपको केवलज्ञान नहीं होने पर भी केवलज्ञान के समान आपकी नजर सभी पर रहती है यानि कोई भी आपकी नजर से बच नहीं पाता है। अतः आप स्वयं पर नजर रखते हुये भी सभी पर नजर रखते है और अपने गहरे अनुभव ज्ञान से उसे पाप से दूर रखते है।

आप भूलने की चीज नहीं है

कहा जाता है जो वस्तु सबसे प्रिय व इष्ट होती है। अच्छी लगती है उसे स्वप्न में भी नहीं भुलाया जा सकता है यानि स्वप्न में भी नहीं भूल सकते है। वह हर पल हर क्रिया में हर शब्द में समाहित रहता है फिर आप तो ऐसी चीज है जिसे कभी भूला नहीं जा सकता है। क्योंकि आपने मनुष्यों द्वारा ही नहीं तिर्यचों एवं देवों द्वारा आप पर व आपके संघ पर घनघोर उपसर्ग किये जाने पर भी उसे बड़ी समता से सहन कर उन्हें जीवनदान, अभयदान, प्राणदान, रक्षा का दान ही नहीं दिया बल्कि जगत के प्राणियों को वात्सल्य, मित्रता, स्नेह, प्रेम प्यार का पाठ पढ़ाकर उन्हें अपना बना लिया।

वात्सल्य की अद्भुत मिशाल

जैसे चासनी को बूँदी में डाल देने पर बूंदी चासनी पीकर स्वंय मीठी ही नहीं होती बल्कि उसी चासनी से दूसरी बूँदी को अपने साथ जोड़कर एक लड्डू का रूप ले लेती है। उसी प्रकार हे महायोगीराज। आपने प पू. दादा

गुरु वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महराज की वात्सल्य रूपी चासनी को पीकर अपने जीवन को ही वात्सल्यमय नहीं बल्कि उसी वात्सल्य रूपी चासनी के द्वारा दूसरों को अपनी और आकर्षित कर उसे मात्र अपने से जोड़ा ही नहीं बल्कि उसे भी वात्सल्य रूपी चासनी से भर दिया और मुमुक्षुओं का, भक्तों का, श्रद्धालुओं का, जिनशासन प्रभावकों का एक ऐसा अद्भुत लड्डू तैयार किया जिसे देख कर सभी प्रभावित हो उस लड्डू को खाने का यानि उससे जुड़ने का प्रयास करते हैं अतः आपने मनुष्यों में, तिर्यंचों में और देवो में भी वात्सल्य की अद्भुत मिसाल पैदा की है।

ज्ञानाराधना के सर्वोच्य शिखर

'णाणं णणस्यसारो' ज्ञान मनुष्यों के जीवन का सार है। ज्ञान से ही लौकिक व परलौकिक सुख प्राप्त होता है, ज्ञान से ही धर्म ध्यान होता है, ज्ञान से ही कर्मों की संवर निर्जरा होती है, ज्ञान से ही कर्मों का आस्रव बंध रुकता है, ज्ञान से ही आदर व सम्मान प्राप्त होता है, ज्ञान से ही समय का सदुपयोग होता है, ज्ञान से ही बुद्धि व विवेक का सदुपयोग होता है, ज्ञान से ही मनुष्य पर्याय का सदुपयोग है, हेय-उपादेय का ज्ञान, ज्ञान से ही होता है और तो क्या ज्ञान से ही अपने व दूसरों को जाना जा सकता है। इसलिये हे ज्ञानाराधक गुरुदेव! आपने उस सम्यक ज्ञान की अद्भूत आराधना की और उस आराधना का सार आपके द्वारा जिनेन्द्र भगवान द्वारा कथित अनेक ग्रंथों पर संस्कृत टीकायें, शोधपूर्ण ग्रंथ, प्रवचन साहित्य, ज्ञानवर्धक साहित्य, प्राकृत भक्तियाँ, मंगलाचरण आदि जिसने सरस्वती के भण्डार को सर्वोच्च शिखर प्रदान किया हैं। साथ ही अनेक लोगों ने इसका अध्ययन करके अपने जीवन को भी प्रगतिशील किया है। इस प्रकार हे अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न गुरुदेव! आपने अपने जीवन में अपने गुरुओं के आशीर्वाद से, अपने पूर्व संचित पुण्यानुबंधी पुण्य से तथा वर्तमान में अपने अकथनीय पुरुषार्थ से जो अकल्पनीय लब्ध प्रतिभा प्राप्त की है उसकी प्रभावशाली ऊर्जा से जन जगत लाभन्वित हो रहा है। हे गुरुदेव! आप ऐसे ही जन-जगत के लिए प्रभावशाली ऊर्जा के साधन बन कर श्रमण संस्कृति के क्षितिज पर उपमातीत सूर्य बन कर सदैव देदीप्यमान रहे। अतः आपके चरणों में त्रयभक्ति व नवकोटि के साथ प्रतिक्षण, प्रतिपल, प्रतिसमय आत्मा के एक -एक प्रदेश से अनंतानत बार नमोस्तु...।

गणाचार्य विरागसागर महाराज का जीवनवृत्त

■ **डॉ. आशीष कुमार जैन**
असिस्टेंट प्रोफेसर, जैन और प्राकृत अध्ययन विभाग
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह

भारत वर्ष की पावन भूमि सदैव नर रत्नों की जन्म दात्री रही है, जहाँ पर तीर्थंकरों, यतिवरो तथा महापुरुषों ने जन्म लेकर पुरुषार्थ द्वारा, त्याग, तपस्या के माध्यम से अपना आत्म कल्याण किया। इस श्रृंखला में आचार्य श्री विराग सागर जी ने जन्म लेकर इस वसुंधरा को गोरवान्वित किया।

आपका जन्म भारत देश के मध्य प्रदेश प्रांत के जिला - दमोह के अंतर्गत पथरिया ग्राम में वैशाख शुक्ल 9 वि. सं. 2020 (2 मई 1963) को रात्रि 9:00 बजे हुआ था। आपके पिता श्री मानसेठ कपूरचंद्र व माता श्री मति श्यामा देवी (वर्तमान में आपसे ही दीक्षित पूज्य क्षुल्लिका श्री विशांत श्री माता जी है)। आपका गृहस्थ अवस्था का नाम अरविन्द कुमार था। आप अपने माता-पिता की प्रथम संतान के रूप में थे। आपके तीन छोटे भाई श्री विजय जैन, श्री सुरेन्द्र जैन, श्री नरेन्द्र जैन। आपकी दो बहने श्री मति मीना जैन, श्रीमान् बसंत जैन भाटिया नोहटा तथा श्री मति विमला जैन, श्री सुरेश जैन सागर में है। बालक अरविन्द जी ने कक्षा पांचवी तक की मौलिक शिक्षा ग्राम पथरिया में ही प्राप्त की और आगे की पढाई करने हेतु सन 1974 में ग्यारह वर्ष की आयु में अपने माता-पिता से दूर कटनी आये। वहां पर श्री शांति निकेतन दिगम्बर जैन संस्था में 6 वर्ष तक धार्मिक तथा लौकिक शिक्षा ग्रहण की। लौकिक शिक्षा ग्यारहवीं तक पूर्ण की। साथ में शास्त्री की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। इस छह वर्ष की कालावधि में अनेक साधु-संतों का समागम प्राप्त हुआ, जो भावी जीवन की नीव डालने में साधन भूत हुआ।

आपके जन्म के 16 वर्ष 9 माह 18 दिन पश्चात् फा. शु. वि. सं. 2036 (20 फरबरी 1980) को परम पूज्य तपस्वी सम्राट् आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी से बुढ़ार मध्य प्रदेश में क्षुल्लक दीक्षा ली थी तब आपका नाम क्षुल्लक पूर्ण सागर रखा गया था।

3 वर्ष 9 माह 19 दिन क्षुल्लक अवस्था में रखकर पश्चात् मगसिर शु. वि. सं. 2040 (9.12.83) को परम पूज्य सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के कर कमलों से मुनि दीक्षा ली तब आपका नाम मुनि श्री विराग सागर जी रखा गया। 8 वर्ष 10 माह 29 दिन (तथैव क्षुल्लक दीक्षा से 12 वर्ष माह 18 दिन) मुनि अवस्था में रहकर पश्चात् शिष्यों के अनुग्रह-निग्रह में कुशल होने के कारण परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज की आज्ञानुसार कार्तिक शुक्ल 13 वि. सं. 2049 (08.11.1992) को सिध्दक्षेत्र द्रोणगिरि में आचार्य पद से प्रतिष्ठित किया गया।

संक्षिप्त जानकारी

पूर्व नाम	:	श्री अरविन्द जैन
पिता	:	श्री कपूरचंद जी जैन (समाधिस्थ मुनि विश्ववंध सागर जी महाराज)

प.पू. गणाचार्य विरागसागरजी के गृहस्थ अवस्था के पारिवारिक सदस्य

■ शक्ति और अधिकार, नैतिकता की गहरी जड़ों पर ही टिके रह सकते हैं।

माता	: श्रीमती श्यामादेवी जैन (समाधिस्थ आ.विशांत श्री माताजी)
जन्म	: 2.5.1963, गुरुवार (वैशाख सुदी 9 वि.सं 2020)
जन्म स्थान	: पथरिया (म.प्र.)
बहन	: श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई	: श्री विजय कुमार, श्री सुरेंद्र कुमार, बा.ब्र श्री नरेंद्र भैया जी
लौकिक शिक्षा	: इण्टर, मध्यमा (पथरिया, श्री शांतिनिकेतन, दि.जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी)
विवाह	: बाल ब्रह्मचारी
क्षुल्लक दीक्षा	: 20.2.1980, (फाल्गुन शु. 5 वि. सं. 2036)
दीक्षा स्थान	: बुढ़ार, शहडोल
क्षुल्लक नाम	: पूज्य क्षुल्लक श्री 105 पूर्णसागर जी
दीक्षा गुरु	: प.पू.तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी
मुनि दीक्षा	: 9.12.1983,(मंगसर शु. 5 वि.सं.2040)
दीक्षा स्थान	: औरंगाबाद
मुनि नाम	: प. पु. मुनि श्री 108 विरागसागर महाराज
मुनि दीक्षा गुरु	: प. पु. आ. श्री 108 विमलसागर जी महाराज
आचार्य पद	: 8.11.1992, द्रोणागिरि (कार्तिक शु. 13 वि.सं. 2049)
संयमी सर्जन	: आचार्य - 9
मुनि	: 93
गणिनी	: 4
आर्यिका	: 71
ऐलक	: 5
क्षुल्लक	: 25
क्षुल्लिका	: 32
समाधि संलेखना	: लगभग 133 एवं अनेक तिर्यंच प्राणी
साहित्य सृजन	: 1.वारसाणुपेक्या पर 1100 पृष्ठीय सर्वोदयी संस्कृत टीका 2 रयणसार पर 800 पृष्ठीय रत्नत्रयवर्धिनी संस्कृत टीका 3. लिंग पाहुड पर श्रमण प्रबोधनी टीका 4. शील पाहुड पर श्रमण सम्बोधनी टीका 5. शास्त्र सार समुच्चय पर चूर्णी सूत्र

अनेक शोधात्मक साहित्य - (शुद्धोपयोग, सम्यक्दर्शन, आगमचक्खूसाहू आदि), चिन्तनीय बालकोपयोगी कथा अनुवाद गद्य संपादित साहित्य, जीवनी एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं।

धार्मिक रुचि	: जिनदर्शन, पूजन, स्वाध्याय, गुरु सेवा एवं असहाय, असमर्थों के लिए सहयोग।
अनोखा खेल	: छोटी आयु (मात्र 4 वर्ष) में गंजी पहने एक हाथ में झाड़ू व एक हाथ में लोटा लेकर भुल्लकजी का खेल खेलते थे, जिसे आगे सार्थक भी किया।
दाऊ भैया	: बच्चों में सुलह कराने व छोटे भाई - बहिनों को अच्छे संस्कार देने से आपको हर कोई दाऊ भैया व कहता था।
त्यागीजी	: अष्टमी - चौदस को एकासन, सामायिक, आलू - प्याज आदि अभक्ष्यों व रात्रिभोजन त्याग को देखकर शाला के बच्चे 'त्यागीजी' कहकर चिढ़ाने लगे थे।
निर्भीकता	: - कटनी के शांति निकेतन संस्कृत विद्यालय में अध्ययन करते समय बच्चों ने बताया कि पीछे के वटवृक्ष में व्यतर देव रहता है, रात को वहाँ मत जाना, पर रात के समय भी उस वृक्ष के नीचे निर्भीकता से आना जाना करते थे।
करुणा	: बचपन में ठंडी के समय गर्म कोट में नन्हे से पिल्ले को छुपा लाये और माँ की नजरों से बचाकर उसे अपने हिस्से की चाय - ब्रेड खिला दी। बाद में माँ के डाँटने व समझाने पर उसे पुनः उसकी माँ के पास छोड़ आये।
विशेष	: यदि उनके विराट व्यक्तित्व व सदुणों को लिखने बैठ जाए तो डायरी भी कम पड़ेगी, अतः एक ही दृष्टांत दिया है।
जाप्य	: लगभग 3 करोड 75 लाख से अधिक।
व्रत	: कर्मदहन, भक्तामर , णमोकार मंत्र, चरित्रशुद्धि, चौसठऋद्धि, दर्शन विशुद्धि, षट्रसी व्रत, नीतिसार, वचनगुप्ति , अष्टमी चतुर्दशी नीरस , समवशरण व्रत आदि 26 व्रत उपवास व नीरस।
तप-त्याग	: दही, तेल, बैर, करोंदा, टिंडा, जामुन, सभी हरी पत्ती,मटर छोड़ सभी फली, पपीता, कटहल, लवेडे, कद्दू, तरबूज, भिंडी, खुरबानी, सीताफल, रामफल, फालसा, अंगीठा, आलूबुखारा, चैरी, शक्करपारा, कुंदरू, स्ट्रॉबेरी आदि का आजीवन त्याग।
विशेष त्याग	: कूलर, पंखा, लेपटाप, मोबाइल, हीटर,नेल कटर सन् 1985 से, थूकने का त्याग 1983 से
शिविर	: सम्यग्ज्ञान शिक्षिण शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, श्रावक संस्कार शिविर, प्रतिभा संस्कार शिविर
अभियान	: व्यसनमुक्ति अहिंसा शाकाहार एवं रैली (प्रतिवर्ष), जिसमे अनेक प्रांतों के कई लाख छात्र- छात्राये व्यसन मुक्त हो चुके है।

पूज्य गुरुदेव के रजत आचार्य पदरोहण दिवस पर यह डाक टिकट जारी किया गया। स्थान : दिल्ली वर्ष, 2017 अवसर, रजत आचार्य पदारोहण दिवस।

पूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित होगा। भारतीय संस्कृति में श्रमण परम्परा के विकास में पूज्य आचार्य श्री का महत्वपूर्ण योगदान है। आचार्य महाराज के आशीर्वाद से विरागोदय तीर्थ पथरिया में विरागोदय महोत्सव आयोजित हो रहा है। इस महामहोत्सव में देश के लाखों लोग सम्मलित होगे और धर्म लाभ लेने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे।

उपकार चुकाने की सामर्थ्य नहीं हैं

■ **श्रमणी विनोद श्री**

आपका संदेश अंतर करुणा का दर्पण है।
आपका चिंतन अंतर आत्मा का अशन है।।
आपको आलौकिक संत साबित करता है जो।
वह आपका वात्सल्य, आगमिक चर्या और कठोर अनुशासन है।।

कहा जाता है कि संसार में जब जन्म देने वाले माता-पिता, लौकिक शिक्षा गुरु का उपकार नहीं चुकाया जा सकता है। तो फिर मोक्षमार्ग पर हाथ का सहारा देकर चलाने वाले, मोक्षमार्ग का पथ व पाथेय देने वाले, जीवन को जीवंत रूप में रखने वाले, संवर निर्जरा के स्थान स्वरूप, श्वास-2 पर उपकार करने वाले, भव-भव की ही नहीं मोक्ष की व्यवस्था करने वाले, उपकारों का अनुपम उपहार देने वाले, निर्ग्रंथ -दिगम्बर वीतरागी गुरुओं के उपकार को कैसे चुकाया जा सकता है? अर्थात् नहीं चुकाया जा सकता हैं। एक बार संसारियों के उपकार को तो धन देकर, सम्मान देकर, भोजन-वस्त्र-आभूषण आदि देकर चुकाया जा सकता है लेकिन संसार की सम्पूर्ण वस्तुओं के त्यागी शरीर वा कर्म रूपी परिग्रह को भी त्याग करने की साधना में रत श्वाँस-श्वाँस पर उपकार करने वाले गुरुओं के उपकार को क्या देकर चुका सकते हैं अर्थात् कुछ भी देकर नहीं चुका सकते है। चूकि गुरु के उपकार को तो एक भव की साधना क्या अनेक भवों की साधना क्या, मोक्ष जाने तक कि जितने भव है उन सारे भवों की साधना को भी देरक नहीं चुकाया जा सकता है फिर भी अपनी श्रद्धा-भक्ति समर्पण, सेवा, आराधना-उपासना के द्वारा कुछ पुरुषार्थ करते है।

हे गुरुदेव! हम सौभाग्यशाली है कि आप जैसे उपकारी गुरुओं की सेवा, भक्ति, आराधना उपासना व श्रद्वा करके कर्म को काटने का आपने अवसर दिया यानि आपने अंतरंग के वात्सलय के साथ कदम-कदम पर समबल देकर आगे बढ़या है। वरर्ना आज पता नहीं संसार के कीचड़ में हम कहा पड़े होते।

मुझे याद है जब हम ग्रहस्थ जीवन में थे तब पू गुरुदेव का चातुर्मास 1995 में ललितपुर में हुआ था तभी से हमारा सारा परिवार गुरुदेव के प्रति समर्पित है चौका लागाकर व दर्शन से तथा ग्रहस्थ जीवन के प्रति जो पूर्व से ही धार्मिक संस्कारों से संस्कारित थे, साधुओं की सेवा वैय्यावृत्ति में निरत रहते थे उनका कहना रहता था कि हमको दीक्षा लेना घर में नहीं रहना हैं बच्चों की शादी होते ही हम दीक्षा ले लेंगे और अपना आत्म कल्याण करेंगे आदि। हमको भी बोलते थे तुम यदि दीक्षा ले सको तो ठीक बरना बच्चों के साथ नहीं रहना, अपना अलग से एक कमरे में रहना ,अपना भोजन-पानी बनाना और साधना करना।

जब पू. गणाचार्य गुरुदेव का चातुर्मास 2007 में उदगाँव में हुआ तब हम दोनों ने 2 प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। अब तो श्रीमान् जी के भाव निरन्तर वृद्वि को प्राप्त होने लगे। जब हम लोग उदगाँव से वापिस लौट रहे थे। तब रास्ते में पुनः दीक्षा की चर्चा हुई और बोले अब तो हमको दीक्षा लेनी है, हम घर नहीं रहेगें। तब हमने भी सोचा जब आप नहीं रहेंगे तो हम क्या करेंगे घर में रहकर हम भी दीक्षा लेंगे। और बात-बात में हमने बोला आपसे पहले हम दीक्षा ले लेंगे। और ऐसा ही निमित्त मिला की पू. गणाचार्य गुरुदेव के संघ में उदयपुर में दीक्षा होने वाली थी तो संघ से कुछ ब्र. दीदी विनौली के कार्यक्रम हेतु ललितपुर में आयी हुई थी। जब श्रीमान् जी को इस बात का पता मंदिर चला कि उदयपुर में दीक्षा होने वाली है और कुछ दीदी गोद भरायी कार्यक्रम के लिए यहाँ आयी हुई। चूकि बेटी को देखने हेतु उसी दिन मेहमान आये हुए थे और ऐसा योग मिला कि उसी दिन शादी सुनिश्चित करके गये और शादी की तारीख 22 मई 2010 निश्चित की गयी।

शादी की तैयारी हुई और 22 मई 2010 को लड़की की शादी की और दूसरे दिन बोले पू.गणाचार्य गुरुदेव के संघ में उदयपुर में दीक्षा होने वाली है और अभी आ. श्री केशरिया जी में है चलो दर्शन करने चलते है और हम दोनो 25 मई 2010 को घर से निकले और 26 मई 2010 को पू. गणाचार्य के चरणों में केशरिया जी पहुँच गये। चर्चा वार्ता हुई और 27 मई 2010 को पू. गुरुदेव के चरणों में दीक्षा का श्रीफल चढ़ा दिया। चूंकि दीक्षा कार्यक्रम में समय था तब पू. गुरुदेव ने कहा अभी समय है दीक्षा में आप लोग को

तीर्थयात्रा करने जाना हो तो जाकर के आ जाओ। घर पहुँचे दीक्षा का श्रीफल चढ़ा करके तो परिवार व रिश्तेदारों में खुशी थी, और तीर्थ यात्रा हेतु निकल गये। तीर्थ यात्रा करके वापिस लौटे तो एक दिन श्रीमान् एवं बच्चें बोले मम्मी तुम अभी दीक्षा नहीं लो पापा को ले लेने दो, मैंने बच्चों को मना कर दिया। फिर श्रीमान् बोले देखो बच्चें मना कर रहें है, तुम अभी रहने दो बाद में ले लेना। हमने कहा यदि आपको रुकना है। तो रुक जाओं मगर अब हम रुकने वाले नहीं है, हमको तो दीक्षा लेना है। तब श्रीमान् जी बोले हमें तुम्हारी परीक्षा लेनी थी और तुम परीक्षा में पास हो गयी अब तुम दीक्षा ले सकती हो। यात्रा के पश्चात् 26-27 जून को उदयपुर में पू. गुरुदेव के चरणों में पहुँच गये और 4-7-2010 को पू. आचार्य श्री का सानिध्य पाकर हम दोनों ने जोड़ी से दीक्षा ग्रहण कर अपने जीवन को सार्थक किया। अतः पू. गुरुदेव के उपकार को जन्म-जन्म तक भी नहीं भूल पायेंगे। और हे गुरुदेव आपके इस उपकार के ऋण को चुकाने की सामर्थ्य नहीं है। फिर भी आपसे प्रार्थना है कि आप ऐसा उपकार भव-भव में करते रहे, जिससे आपके उपकार से हम अपने लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके।

■ समय कीमती है, मगर जीवन उससे भी अधिक कीमती है।

गणाचार्य 108 विरागसागर जी महाराज द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा प्रकाशित साहित्य

■ **संस्कृत टीका साहित्य –**
बारसाणुवेक्खा की सर्वोदयी टीका (भाग - 1,2)
रयणसार की रत्नत्रयवर्धनी टीका (भाग-1-2)
लिंगपाहुड की श्रमणप्रबोधिनी टीका
शीलपाहुड की श्रमणसम्बोधिनी टीका

■ **शोधपूर्ण साहित्य –**
शुद्धोपयोग
सम्यग्दर्शन
आगमचक्खू साहू
सल्लेखना से समाधि
संत साधना के प्रेरक प्रसंग
परम दिगम्बर जैन मुनि
(हिन्दी, मराठी, तमिल, कन्नड, इंग्लिश)
सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म
(हिंदी, अंग्रेजी)
तीर्थंकर दिव्य दर्शन
तीर्थंकर दर्शन
व्यसन विचार
फूल नहीं, हैं कांटें
वर्षायोग
जिनेन्द्र दर्शन-जिनेन्द्र पूजन
आध्यात्मिक शंका-समाधान
आध्यात्मिक तत्त्व-चर्चा
श्रमण आहार चर्या
चूर्णि सूत्राणी
कोटिशिला
अठारह लिपियां
जैन ज्योर्तिलोक

■ **चिंतन साहित्य –**
चैतन्य चिन्मन भाग -1,2,3

■ **बालोपयोगी साहित्य –**
बाल विज्ञान भाग - 1, 2, 3, 4
कर्म विज्ञान - 1, 2, 3,
संस्कार सुरभि
(हिन्दी, गुजरात, मराठी)

■ **कथा साहित्य –**
नैतिक कथा मंजूषा भाग - 1, 2

■ **अनुवाद साहित्य –**
वारसाणुवेक्खा
परमरत्नार्चना संग्रह
सामायिक पाठ (हिन्दी, गुजराती)
पागद भत्ति संगहो (प्राकृत साहित्य)

■ **पद्य साहित्य –**
संस्कृत प्राकृत भक्ति स्तोत्र
जल विन्दु महाकाव्य
भावों के विशुद्ध क्षण
मुक्तकांज्जलि भाग - 1, 2
नवदेवता निर्वाण क्षेत्र पूजा
स्तुति- भावना

■ **संकलित –सम्पादित साहित्य**
साधना से समाधि
विमल नित्य पाठावली
आराधना (छोटी-बड़ी)
साधना
सुभाषित संग्रह
आप्त अर्चना
मनतुंग की अमर भक्ति
अनुप्रेक्षा
जिनागम दीप
सम्मेद शिखर विधान
चारित्र शुद्धि व्रत
कारुणामूर्ति संत
तपस्वी सम्राट
यज्ञोपवीत विधि
साधना के सोपान
पदम् पुराण प्रश्नोत्तरी
स्तोत्र भारती
छहढ़ाला
तत्त्वार्थसूत्र (अनुवाद)
द्रव्यसंग्रह (अनुवाद)
इष्टोपदेश (अनुवाद)

■ **एकांकी–नाटक साहित्य**
सत्यमित्र-सत्यदृ'ट
प्रद्युम्न हरण

■ **पूज्य आचार्य श्री पर आधारित साहित्य**
विरागाभिवंदन अभिनंदन भाग - 1
विरागाभिवंदन अभिनंदन भाग - 2
निस्पृही संत - भाग - 1, 2
विराग सेतु (प्राकृत महाकाव्य)
संत काव्य की परंपरा में आचार्य विरागसागर

■ मनुष्य अकेला इसलिए पड़ जाता है कि अपने चारों ओर पुल बनाने के बजाए दीवार खड़ी कर लेता है।

पी-एच. डी.
कमल से महाकमल
घटनायें ये जीवन की
दिगम्बरत्व के चितेरे
विराग सिन्धु की उर्मियां
विराग वाटिका
भक्ति की झंकार भाग - 1,2,3
विरागकाव्यांजलि
विरागादर्श
आत्मानुशासन
विभूति भक्ति
जिनके आशीर्वाद से
गणाचार्य श्री विरागसागर मण्डल विधान
गणाचार्य श्री विरागसागर विधान
विराग-थुदि

■ **प्रवचन साहित्य**

धर्म पीयूष
ऐसे चलो मिलेगी राह
दूर नहीं है मंजिल
उड़ रे पंछी
तीर्थंकर वर्धमान
पहले देव पूजा फिर काम दूजा
तीर्थंकर ऐसे बनो
तट की ओर
सिर्फ दो प्रवचन
इष्टोपदेश प्रवचन
मानतुंग की अमर भक्ति (प्रवचन)
पंकल्याणक महोत्सव
दान तीर्थ
धर्म के दश सोपान
जीवों पर दया करो, शुद्ध शाकाहार करों
बुराइयां ही जेल, अच्छाइयां ही मुक्ति
प्रवचन वर्षा
कर्तव्यमेव कर्तव्यं
श्रद्धा प्रसून
मोक्ष की राह
विरागामृत - भाग - 1,2
समाधि तंत्र (प्रवचन)
समयोचित शिक्षायें भाग - 1, 2, 3
विराग मंथन (हिन्दी, अंग्रेजी)
रजत पुष्प
कहानी सबसे सुहानी
अक्षयनिधि (हिन्दी, अंग्रेजी)
संस्कार की लहरे
चलो चलें प्रभु दर्शन को
आध्यात्मिक धर्म प्रवचन
घर घर की कहानी
वारसाणुवेक्खा प्रवचन
पर्यूषण निधि
पद्मनंदि पंचविशतिः अधिकार- 1, धर्मोपदेशामृतम्
पद्मनंदि पंचविशतिः अधिकार - 2, दानोपदेशम्
पद्मनंदि पंचविशतिः अधिकार- 3, अनित्यपंचाशत
पद्मनंदि पंचविशतिः अधिकार - 4-5, एकत्व सप्तति तथा यति भावनाष्टकम्
पद्मनंदि पंचविशतिः अधिकार - 6, उपासक संस्कार
पद्मनंदि पंचविशतिः अधिकार - 7, देशव्रतोद्योतनम्
पद्मनंदि पंचविशतिः अधिकार - 8-9, सिद्धस्तुति एवं आलोचना
आचार्य विरागसागर साहित्य दर्शन
मेरी भावना प्रवचन
फोर यूथ प्रोग्रेस - 1, 2
रत्नकरण्डक श्रावकाचार प्रवचन
सामायिकपाठ प्रवचन
विराग संध्या
विराग अर्चना
स्वर्ण पुष्प
षट्लेश्या प्रवचन अपनी-अपनी आभाएं
ऐसे बनायें घर को स्वर्ग
क्यूहतनाअभिमान है
सिद्धों का खजाना
अपना नैतिक कर्त्तव्य
श्रुत ज्ञानवर्धक विधान
अंग अंग से झरता बोध
भक्ति प्रसून
विराग देशना

■ **विविध साहित्य -**

विशाल पदयात्रा
विरागानुभूति (लोहारिया चातुर्मास स्मारिका)
विराग प्रभावना (अजमेर चातुर्मास स्मारिका)
स्वर्णिम विरागांजलि 2012
विरागोत्सव (इन्दौर चातुर्मास स्मारिका)
सम्मेदशिखर चातुर्मास स्मारिका
युगप्रतिक्रमण यतिसम्मेलन 2017
खेलना है तो खेलो
वारसाणुवेक्खा सर्वोदय टीका अनुशीलन

आ. विरागसागरजी के चातुर्मास

2022	पथरिया (मध्य प्रदेश)
2021	एटा (उत्तर प्रदेश)
2020	भिंड (मध्य प्रदेश)
2019	कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
2018	सम्मेद शिखरजी (झारखण्ड)
2017	कवि नगर गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
2016	भिंड (मध्य प्रदेश)
2015	पथरिया (मध्य प्रदेश)
2014	श्रेयांसगिरि (मध्य प्रदेश)
2013	इंदौर (मध्य प्रदेश)
2012	जयपुर (राजस्थान)
2011	अजमेर (राजस्थान)
2010	लोहारिया (राजस्थान)
2009	गांधीनगर (गुजरात)
2008	बोरीवली, मुंबई (महाराष्ट्र)
2007	कुंजवन, उदगावं (महाराष्ट्र)
2006	मेलचित्तामूर (तमिलनाडु)
2005	मूडबिद्री (कर्नाटक)
2004	कारंजा (महाराष्ट्र)
2003	भिलाई (छत्तीसगढ़)
2002	श्रेयांसगिरि (मध्यप्रदेश)
2001	गया (बिहार)
2000	सम्मेद शिखरजी (झारखण्ड)
1999	भिंड (मध्य प्रदेश)
1998	भिंड (मध्य प्रदेश)
1997	भिंड (मध्य प्रदेश)
1996	जबलपुर (मध्य प्रदेश)
1995	ललितपुर
1994	बीना (मध्य प्रदेश)
1993	श्रेयांसगिरि (मध्य प्रदेश)
1992	द्रोणागिरि (मध्य प्रदेश)
1991	श्रेयांसगिरि (मध्य प्रदेश)
1990	टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश)
1989	भिंड (मध्य प्रदेश)
1988	भिंड (मध्य प्रदेश)
1987	जयपुर (राजस्थान)
1986	निमाज (राजस्थान)
1985	पांचवा (राजस्थान)
1984	भावनगर(गुजरात)
1983	कारंजा (महाराष्ट्र)
1982	कारंजा (महाराष्ट्र)
1981	नागपुर (महाराष्ट्र)
1980	दुर्ग(छत्तीसगढ़)

■ कायर और शक्तिहीन मनुष्य भाग्य के पीछे-पीछे चलते हैं।

आचार्य विरागसागर जी महाराज की शिष्य परम्परा

■ **श्रमण विहितसागर**

आचार्य

श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी
श्रमणाचार्य श्री विशदसागर जी
श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी
श्रमणाचार्य श्री विहर्षसागर जी
श्रमणाचार्य श्री विनिश्चयसागर जी
श्रमणाचार्य श्री विमदसागर जी
श्रमणाचार्य श्री विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी

श्रमण मुनि

श्रमण श्री निर्णयसागर जी
श्रमण श्री विसर्गसागर जी
श्रमण श्री विश्वजीतसागर जी
श्रमण श्री विश्वकीर्तिसागर जी
श्रमण श्री विग्रहसागर जी
श्रमण श्री विश्वलोक सागर जी
श्रमण श्री विश्वभूतिसागर जी
श्रमण श्री विश्वशीलसागर जी
श्रमण श्री विहितसागर जी
श्रमण श्री विश्वयशसागर जी
श्रमण श्री विश्वधैर्यसागर जी
श्रमण श्री विश्ववीरसागर जी
श्रमण श्री विश्वपूज्यसागर जी
श्रमण श्री विक्रमसागर जी
श्रमण श्री विश्वशान्तिसागर जी
श्रमण श्री विश्वधर्मसागर जी
श्रमण श्री विनर्घ्यसागर जी
श्रमण श्री विश्रान्तसागर जी
श्रमण श्री विश्वज्योतिसागर जी
श्रमण श्री विजयसागर जी
श्रमण श्री विशोकसागर जी
श्रमण श्री विनिश्चलसागर जी
श्रमण श्री विश्वरत्नसागर जी
श्रमण श्री विश्वेशसागर जी
श्रमण श्री विश्वतसागर जी
श्रमण श्री विवर्धनसागर जी
श्रमण श्री विशेषसागर जी
श्रमण श्री विवर्जनसागर जी
श्रमण श्री विश्वदृष्टासागर जी
श्रमण श्री विश्वविद्सागर जी

श्रमण श्री विनेयसागर जी
श्रमण श्री विशारदसागर जी
श्रमण श्री विश्रुतसागर जी
श्रमण श्री विलसंतसागर जी
श्रमण श्री विकसंतसागर जी
श्रमण श्री विश्वप्रियसागर जी
श्रमण श्री विश्वविभूसागर जी
श्रमण श्री विदम्बरसागर जी
श्रमण श्री विभास्वरसागर जी
श्रमण श्री विश्वलोकेशसागर जी
श्रमण श्री विश्वतीर्थसागर जी
श्रमण श्री विश्वमित्रसागर जी
श्रमण श्री विश्वाससागर जी
श्रमण श्री विश्वदृढ़सागर जी
श्रमण श्री विधेयसागर जी

श्रमण श्री विश्वाक्षरसागर जी
श्रमण श्री विज्ञेयसागर जी
श्रमण श्री विश्रेयसागर जी
श्रमण श्री विहसंतसागर जी
श्रमण श्री विभजनसागर जी
श्रमण श्री विजयेशसागर जी
श्रमण श्री विश्रान्तसागर जी
श्रमण श्री विशौर्यसागर जी
श्रमण श्री विश्वेश्वरसागर जी
श्रमण श्री विश्वयोगसागर जी
श्रमण श्री विश्वनाथसागर जी
श्रमण श्री विश्वभूतेशसागर जी
श्रमण श्री विश्वाक्षसागर जी
श्रमण श्री विकसंतसागर जी
श्रमण श्री विश्वभूर्तिसागर जी

श्रमण श्री विश्वपदसागर जी
श्रमण श्री विश्वदृगसागर जी
श्रमण श्री विश्वनायकसागर जी
श्रमण श्री विकौशलसागर जी
श्रमण श्री विश्वसूर्यसागर जी
श्रमण श्री विरंजनसागर जी
श्रमण श्री विश्वजिनसागर जी
श्रमण श्री विश्वसिद्धिसागर जी
श्रमण श्री विश्वपदमसागर जी
श्रमण श्री विश्वरुचिसागर जी
श्रमण श्री विश्वकुन्दसागर जी
श्रमण श्री विश्वविज्ञसागर जी
श्रमण श्री विश्वबंधसागर जी
श्रमण श्री विनयधरसागर जी
श्रमण श्री विश्वदक्षसागर जी
श्रमण श्री विश्वभानुसागर जी
श्रमण श्री विश्वहितसागर जी
श्रमण श्री विश्वधीरसागर जी
श्रमण श्री विश्वभद्रसागर जी
श्रमण श्री विनिवेषसागर जी
श्रमण श्री विश्वादर्शसागर जी
श्रमण श्री विश्वविजयसागर जी
श्रमण श्री विश्वामनसागर जी
श्रमण श्री विश्वनुत्तरसागर जी
श्रमण श्री विश्वध्येयसागर जी
श्रमण श्री विश्वपुण्यसागर जी
श्रमण श्री विशल्यसागर जी
श्रमण श्री विनिबोधसागर जी
श्रमण श्री विनिशोधसागर जी
श्रमण श्री विश्वज्ञेयसागर जी
श्रमण श्री विश्वज्ञेशसागर जी
श्रमण श्री विश्वार्जवसागर जी

गणिनी आर्यिका -

गणिनी आर्यिका विशा श्री माताजी
गणिनी आर्यिका विभा श्री माताजी
गणिनी आर्यिका विन्ध्य श्री माताजी
गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी

आर्यिका

श्रमणी आ. विद्याश्री माताजी
श्रमणी आ. विधाश्री माताजी

श्रमणी आ. विधिश्री माताजी
श्रमणी आ. विशिष्टश्री माताजी
श्रमणी आ. विकासश्री माताजी
श्रमणी आ. विदुषीश्री माताजी
श्रमणी आ. विभूतिश्री माताजी
श्रमणी आ. विजयश्री माताजी
श्रमणी आ. विरक्तश्री माताजी
श्रमणी आ. विनीतश्री माताजी
श्रमणी आ. विनतश्री माताजी
श्रमणी आ. विपश्यनाश्री माताजी
श्रमणी आ. विवोधश्री माताजी
श्रमणी आ. विमोहश्री माताजी
श्रमणी आ. विविक्तश्री माताजी
श्रमणी आ. वियुक्तश्री माताजी
श्रमणी आ. विजेताश्री माताजी
श्रमणी आ. विनेताश्री माताजी
श्रमणी आ. विद्वतश्री माताजी
श्रमणी आ. विशोधश्री माताजी
श्रमणी आ. विश्वासश्री माताजी
श्रमणी आ. वियोगश्री माताजी
श्रमणी आ. विधाताश्री माताजी
श्रमणी आ. विशाखाश्री माताजी
श्रमणी आ. विदीक्षाश्री माताजी
श्रमणी आ. विकक्षाश्री माताजी
श्रमणी आ. विमुक्तश्री माताजी
श्रमणी आ. विमानश्री माताजी
श्रमणी आ. विधानश्री माताजी
श्रमणी आ. विवक्षाश्री माताजी
श्रमणी आ. विदक्षाश्री माताजी
श्रमणी आ. विरम्याश्री माताजी
श्रमणी आ. विकाम्याश्री माताजी
श्रमणी आ. विकम्पाश्री माताजी
श्रमणी आ. विप्राश्री माताजी
श्रमणी आ. विप्रभाश्री माताजी
श्रमणी आ. वियोजनाश्री माताजी
श्रमणी आ. विशान्तश्री माताजी
श्रमणी आ. विसंयोजनाश्री माताजी
श्रमणी आ. विचक्षणाश्री माताजी
श्रमणी आ. विरक्षणाश्री माताजी
श्रमणी आ. विदर्शनाश्री माताजी
श्रमणी आ. वीरश्री माताजी
श्रमणी आ. विभालश्री माताजी
श्रमणी आ. विदितश्री माताजी
श्रमणी आ. विदिताश्री माताजी

श्रमणी आ. विरतश्री माताजी
श्रमणी आ. विरदश्री माताजी
श्रमणी आ. विभक्तश्री माताजी
श्रमणी आ. विनोदश्री माताजी
श्रमणी आ. विनिवृताश्री माताजी
श्रमणी आ. विसुव्रताश्री माताजी
श्रमणी आ. विप्रमुक्ताश्री माताजी
श्रमणी आ. विहंसश्री माताजी
श्रमणी आ. विगतश्री माताजी
श्रमणी आ. विशुभ्राश्री माताजी

श्रमणी आ. विमोक्षाश्री माताजी
श्रमणी आ. विहारश्री माताजी
श्रमणी आ. विकलश्री माताजी
श्रमणी आ. विजितश्री माताजी
श्रमणी आ. विमोचनाश्री माताजी
श्रमणी आ. विकुन्दनश्री माताजी
श्रमणी आ. विगुन्जनश्री माताजी
श्रमणी आ. विजिगिसाश्री माताजी
श्रमणी आ. विजिज्ञासाश्री माताजी
श्रमणी आ. विशालश्री माताजी
श्रमणी आ. विशोहीश्री माताजी
श्रमणी आ. विदर्भश्री माताजी
श्रमणी आ. विश्वधर्मश्री माताजी
श्रमणी आ. विनिग्रहश्री माताजी
श्रमणी आ. विक्षमाश्री माताजी

श्रमणी आ. विश्वसिहिश्री माताजी
श्रमणी आ. विर्निगतश्री माताजी
श्रमणी आ. विभूषाश्री माताजी
श्रमणी आ. विरजश्री माताजी

ऐलक

ऐलक विज्ञानसागर जी
ऐलक विमुक्तसागर जी
ऐलक विलोकसागर जी
ऐलक विस्तीर्णसागर जी
ऐलक विनियोगसागर जी

क्षुल्लक

क्षुल्लक विशंक सागर जी
क्षुल्लक विलोचन सागर जी
क्षुल्लक विभद्र सागर जी
क्षुल्लक विमार्गण सागर जी
क्षुल्लक विनय सागर जी
क्षुल्लक विनिर्भय सागर जी
क्षुल्लक विवेक सागर जी
क्षुल्लक विश्वात्म सागर जी
क्षुल्लक विजितेन्द्र सागर जी
क्षुल्लक विश्वचक्षु सागर जी
क्षुल्लक विश्वप्रभु सागर जी
क्षुल्लक विश्वबन्धु सागर जी
क्षुल्लक विदेह सागर जी
क्षुल्लक विमोक्ष सागर जी

क्षुल्लक विश्वोक्षम सागर जी
क्षुल्लक विश्वमैत्रेय सागर जी
क्षुल्लक विसौम्य सागर जी
क्षुल्लक विनिमेष सागर जी
क्षुल्लक विश्वोक्षर सागर जी
क्षुल्लक विश्वरक्ष सागर जी
क्षुल्लक विवक्षित सागर जी
क्षुल्लक विश्वमार्दव सागर जी
क्षुल्लक विश्वसाम्य सागर जी
क्षुल्लक विक्षोभ सागर जी
क्षुल्लक विश्वतथ्य सागर जी

क्षुल्लिका

क्षुल्लिका विसर्जन श्री माता जी
क्षुल्लिका विलक्षणा श्री माता जी
क्षुल्लिका विनर्गता श्री माता जी
क्षुल्लिका विजिता श्री माता जी
क्षुल्लिका विस्मिता श्री माता जी
क्षुल्लिका विभाषा श्री माता जी
क्षुल्लिका विभूषणा श्री माता जी
क्षुल्लिका विव्रता श्री माता जी
क्षुल्लिका विप्रदा श्री माता जी
क्षुल्लिका विभद्रा श्री माता जी
क्षुल्लिका विसुदृढ श्री माता जी
क्षुल्लिका विक्रमा श्री माता जी
क्षुल्लिका विश्व पुष्पा श्री माता जी
क्षुल्लिका विप्रयाण श्री माता जी
क्षुल्लिका विश्वशान्ता श्री माता जी
क्षुल्लिका विरोचना श्री माता जी
क्षुल्लिका विशोभना श्री माता जी
क्षुल्लिका विरजा श्री माता जी
क्षुल्लिका विपदमा श्री माता जी
क्षुल्लिका विक्षमा श्री माता जी
क्षुल्लिका विकण्ठ श्री माता जी
क्षुल्लिका विगम्या श्री माता जी
क्षुल्लिका विप्रशत्र श्री माता जी
क्षुल्लिका विशीला श्री माता जी
क्षुल्लिका विज्ञप्ति श्री माता जी
क्षुल्लिका विश्वनेहा श्री माता जी
क्षुल्लिका विनति श्री माता जी
क्षुल्लिका विनीता श्री माता जी
क्षुल्लिका विश्वनीता श्री माता जी
क्षुल्लिका विश्वासाम श्री माता जी
क्षुल्लिका विशीला श्री माता जी
क्षुल्लिका विशीला श्री माता जी

पथरिया प्रकाश पुंज

■ **श्रमण विश्व नायक सागर**

भारत वर्ष की इस पुण्यधरा पर अनादि काल से समय-समय पर ऐसे अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया जिन्होंने इस धरा के ग्राम नगर देश-विदेश के नाम को अपने महान कार्यों से गौरवान्वित किया उनसे उन स्थानों की विश्व में पहचान बनी। वर्तमान में एक ऐसे ही महापुरूष भारत गौरव चारित्र चूड़ामणि दिगम्बराचार्य प. पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज हैं जिन्होंने मध्यप्रदेश के दमोह जिले के पथरिया नगर में श्रीमान् श्रेष्ठी श्री कपूरचन्द जी जैन श्रीमती श्यामा देवी जैन के यहां 2 मई 1963 को जन्म लेकर अपने महान कार्यों से पथरिया के नाम को विश्व में गौरवान्वित किया है। जन्म तो अनेकों जीव लेते हैं पर महापुरूषों का जन्म लोक कल्याणकारी होता है सभी को खुशी और आनन्द देने वाला होता है। पुण्यात्मा जीव तो माँ के गर्भ में आते ही माँ को खुशी देने वाले, हर्षित करने वाले, स्वप्न देकर अपने गर्भ में आने की सूचना दे देते हैं। जब आप माँ श्यामा देवी के गर्भ में आये तब माँ श्यामा देवी के लिए निर्ग्रन्थ मुनि के दर्शन व उनका पड़गाहन करने के दोहले हुए थे। जब आपका 2 मई 1963 वैशाख शुक्ल 9 सं. 2020 को जन्म हुआ तो उसी दिन पथरिया में लाईट आई थी। तब मोहल्ले में चर्चा थी कि यह बालक तो प्रकाश (लाइट) लेकर आया है। सचमुच ही आज आपने पथरिया के नाम को प्रकाशित तो किया ही है पर अपने ज्ञान के प्रकाश से अनेकों भव्यों को ज्ञान का प्रकाश देकर उन्हें सद्मार्ग पर लगाया है। शैशव काल की आपकी सुन्दर सलौनी छवि सभी को मोहित कर लेती थी। हर कोई आपको गोद में खिलाने को लालायित रहता था। आपका नाम अरविन्द रखा गया था पर प्यार से सभी आपकों टिन्नू कहकर पुकारते थे। राधा नाम की एक महिला तो आपको बाग में खिलाने ले जाती थी वहां आपके सिर पर मोर पंख बांधकर, कृष्ण का रूप बनाकर भक्ति करती थी। शायद उसे आपके अन्दर के भगवत स्वरूप का अहसास हो गया था।

दो-तीन वर्ष की उम्र में आपने बिच्छू के साथ क्रीड़ा की जिसे देख लोगों को आपके साहस एवं निडरता का बोध हो गया। सभी को लगा कि आप कठिन से कठिन परिस्थितियों में दृढ़ रहेंगे अर्थात् खेल की तरह उन पर विजय प्राप्त करेंगे और हुआ भी कुछ ऐसा कि चाहे गृहस्थ जीवन हो या संयमी जीवन, आपने कठिन से कठिन परिस्थितियों का धैर्यता के साथ सामना कर उन पर विजय प्राप्त की।

चार-पाँच वर्ष की आयु में नग्न अवस्था में हाथ में लोटा बुहारू लेकर मुनि मुद्रा में अपनी माँ को कहते, माँ मुझे पड़गाहो मैं मुनि हूँ। जब आपकी मुनि दीक्षा हुई तब माँ ने कहा था कि मैंने तो बचपन में ही ऐसा देखा था। भवों-भवों के संस्कार इस जीव के साथ आते हैं और फलीभूत होते हैं।

जब आपकी माँ लकवा से पीड़ित हुई तो उस समय आपकी आयु 9 वर्ष की थी। माँ खाना बनाते समय काफी जल गई आपके पिता श्री उनके इलाज में व्यस्त रहते तब आप अपने छोटे-छोटे भाई-बहिनों को भोजन तैयार कर खिलाते थे। उनका पूरा ध्यान रखते थे। उस समय आप पथरिया के प्राइमरी विद्यालय में ही अध्ययनरत् थे तो वहां भी आप अपने सहपाठियों को पढ़ने में उनका स्कूल का गृह कार्य कराने में सहयोग करते थे, आपस में छात्रों में यदि कोई विवाद भी हो जाता तो उस समय मध्यस्थता कर उनका समझौता करा देते थे इसलिए सभी आपको आदर सम्मान देते थे और सभी आपको 'दाऊ भैया' कहकर पुकारते थे।

प्राइमरी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आगे शिक्षा प्राप्त करने हेतु 10-11 वर्ष की उम्र में जैन धर्म शिक्षा हेतु श्री शान्ति निकेतन दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय कटनी में आपने प्रवेश लिया। जहां देश के ख्याति प्राप्त पं. जगमोहनलाल जी शास्त्री, पं. श्री धन्यकुमार जी दर्शनाचार्य, पं. श्री पदमचन्द्र जी शास्त्री आदि विद्वानों द्वारा चार भाग, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पुरूषार्थ सिद्धिउपाय, तत्वार्थसूत्र, गोम्मटसार तथा सर्वार्थसिद्धि आदि ग्रन्थों के साथ व्याकरण, न्याय, साहित्य आदि की परीक्षा उत्तीर्ण की। अपनी अल्प आयु में अध्ययन के साथ आपने अध्यापन कार्य भी किया बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाया। श्री शान्ति निकेतन दिग. जैन संस्कृत विद्यालय में मात्र अध्ययन ही नहीं किया अपितु पं. श्री जगमोहन लाल जी शास्त्री आदि गुरुजनों की सत्संगति से आपके जीवन में धार्मिक संस्कार भी वृद्धि को प्राप्त हुए, अल्प आयु में सामायिक करना, पर्व के दिनों में एकाशन करना या मौन पूर्वक भोजन करना आपकी चर्या में आ गया। आपकी इस चर्या का अनुकरण

■ बिखरी हुई पंखुड़ियाँ अपनी अनाथ अवस्था का ही परिचय देती है।

आपके छोटे भाई-बहिन व अन्य छात्रगण भी करने का प्रयास करते थे। कटनी विद्यालय में अध्ययन काल में वहां आने वाले मुनि संघों की सेवा, वैय्यावृत्ति आदि का आपको सौभाग्य मिला।

कटनी विद्यालय से छुट्टियों में जब भी आप पथरिया आते तो आप अपने छोटे भाई-बहिनों के लिए कुछ न कुछ अवश्य लाते। और घर आते ही पूरे घर को साफ सुथरा कर व्यवस्थित करते। पिताजी की दुकान का सामान भी व्यवस्थित करते थे। स्वच्छता एवं प्रमाद रहित व्यवस्थित जीवन आपकी चर्या में आ चुका था। दूसरों को सहयोग करने की उदार भावना आपके जीवन का अंग बन गई थी।

सन् 1979 में आप अपने मामाजी के यहां एक विवाहोत्सव में सम्मिलित होने बांसा गये, वहां कुछ लड़कियों के माता-पिता ने अपनी पुत्रियों के संबंध के लिए आपके माता-पिता के पास प्रस्ताव रखे। जब इसकी आपको जानकारी मिली तो आपने सभी को स्पष्ट कर दिया कि मैं कभी शादी नहीं करूँगा। आपके इस निर्णय से सभी आश्चर्य में पड़ गये, साथ ही माता-पिता भी चिंतित हो गए और उन्होंने आपकी आगे की पढ़ाई बंद कर शीघ्र ही आपकी शादी करने का निर्णय लिया, किंतु परीक्षा का समय निकट था इसलिए आपको परिवार से शांति निकेतन दिग. जैन संस्कृत विद्यालय कटनी आने की अनुमति मिल गई। उन्हीं दिनों तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज ससंघ का कटनी में आगमन हुआ। पू. आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज का संघ शूद्रजल त्यागी श्रावकों से आहार लेता था अतः आहार देने हेतु आपने मात्र 16 वर्ष की आयु में शूद्रजल का त्याग कर मौन पूर्वक स्थिर आसन में भोजन करने का नियम लिया। जब आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज ससंघ का कटनी से बिहार हुआ तो विद्यालय के सभी छात्रों के साथ आप भी नगर की सीमा तक विहार कराने के लिए गए। जब सभी छात्र लौटने लगे तब संघस्थ किसी मुनिराज ने आपसे संघ के शाम के विश्राम स्थान तक चलने को कहा, अतः आप अपने 4-5 साथियों के साथ उस दिन के गंतव्य स्थान तक चलने को राजी हो गये। फिर वहां पहुंच कर संघपति श्री सि. रतन चन्द जी ने आपसे कहा कि देखो कल शनिवार है परसों रविवार है आपकी छुट्टी है अतः आप सभी विहार में चलें क्योंकि आगे समाज नहीं है और संघ को आहार देने वाले शूद्रजल के त्यागी नहीं मिलते आप का शूद्रजल का त्याग अतः संघ की आहार व्यवस्था में आपका सहयोग मिल जायेगा। आपको स्कूल से अनुमति दिलवा देंगे तथा आप जो साइकिल साथ लाये हैं यह भी भेज देंगे। उनके आग्रह पर आप रूक गये। कटनी से बुहार तक के बुढ़ार तक के विहार में लगभग 15 दिना लगे। विहार में पू. आचार्य श्री सन्मतिसागर जी ने जब आपसे अपने आगे के लक्ष्य के बारे में पूछा तो आपने आगे इसी मोक्षमार्ग पर चलने की भावना प्रकट की। बस फिर तो ऐसी स्थिति बनी कि आप विहार कराने गये तो फिर लौट कर नहीं आये। आपकी प्रबल भावना को देख पू. आचार्य श्री ने जब आपसे दीक्षा लेने की पूछा तो आपने शीघ्र ही स्वीकृति दे अपना अहोभाग्य माना। जब पू. आचार्य श्री ने पूछा कि क्या आपके माता-पिता, परिवारजन दीक्षा की अनुमति दे देंगे, तो आपने स्पष्ट कहा कि अनुमति नहीं देंगे। फिर पू. आचार्य श्री ने कहा कि क्या तुम मजबूत हो - उपवास, केशलोंच कर लोगे, तो आपने अपनी स्वीकृति दे दीक्षा की प्रार्थना की। बुढ़ार पहुंचने पर पू. आचार्य श्री ने ज्योतिषी से दीक्षा का मुहूर्त निकलवाया तो उसने अगले दिन का शुभ मुहूर्त बताया और मात्र 20 घंटे ब्रह्मचारी वेश में रह मात्र 16 वर्ष 6 माह की उम्र में आपने प. पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी से फाल्गुन शुक्ल 5 दिनांक 20 फरवरी 1980 को क्षुल्लक दीक्षा ले क्षुल्लक पूर्णसागर जी नाम प्राप्त किया। जब आपकी दीक्षा लेने का समाचार आपके परिवार वालों को ज्ञात हुआ तो आपके पिता श्री कपूरचंद जी अपने कुछ लोगों के साथ आये। आपने उनसे कोई बात नहीं की। उन्होंने पुलिस थाने में रिपोर्ट करना चाहा तो थानेदार ने कहा कि यहां तो अपराध की रिपोर्ट लिखी जाती है पर आपके बालक ने दीक्षा लेकर महान कार्य किया है आप धन्य हैं उसने उनके चरण स्पर्श कर उनका स्वागत किया। आपके पिताजी के साथ आये आपके फूफाजी श्री हजारीलाल जी ने आपके समक्ष नोटों से भरी अटेची रख दी और कहा यह सब आपके लिए ही है आप घर चलो। पर आपने कहा मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। जब आपके पिताजी को आपको वापस ले जाने का कोई रास्ता नहीं दिखा तो जब आप पू. आचार्य श्री के साथ चल रहे थे तो उन्होंने आपसे कहा कि अभी दो दिन भी दीक्षा लिए नहीं हुए और गुरु की बराबरी से चल रहे हो तब आपको भी लगा कि ठीक ही कह रहे हैं इसलिए जैसे ही आप पू. आचार्य श्री से जरा से पीछे हुए तो उन्होंने आपका हाथ पकड़ लिया और कहा कि चलते हो या नहीं या हम गाड़ी में डालकर ले जायेंगे तो आपने कहा कि आप जबरदस्ती ले तो जा सकते हैं पर मैं अन्न जल का त्याग कर दूंगा। आपकी ऐसी प्रतिज्ञा सुन उन्होंने तुरंत हाथ छोड़ दिया तब आपने वैराग्य की दृढ़ता एवं परिवार से मोह ममत्व के त्याग का परिचय दिया। क्षुल्लक अवस्था में आपने गुरुमुख से बृहदद्रव्य संग्रह, परीक्षा मुखसूत्र, भगवती आराधना आदि ग्रन्थ पढ़े। सन् 1980-81 के चातुर्मास आपने पू. गुरुदेव सन्मतिसागर जी के साथ में ही किये जहां पर आपको पू. गुरुदेव का अपूर्व वात्सल्य प्राप्त हुआ, यहां तक कि आप पू. गुरुदेव के साथ ही आहारार्थ जाते थे तथा विहार में भी पू. गुरूदेव की छायावत चलते थे। 1981 में जब आप पू. आचार्य श्री के साथ विहार कर रहे थे तब अचानक मार्ग में जंगली भैंसे मिले पर आप डरे नहीं। 1983 में क्षुल्लक अवस्था में फण फैलाए एक सर्प आपके चरणों के पास आ गया था उस समय भी आप घबराये नहीं।

1982-83 के चातुर्मास मुनि श्री हेमसागर जी के साथ कारंजालाड़ में हुए। जहां आपने सिद्धांत प्रवेशिका, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, पंचाध्यायी, गुण स्थान दर्पण आदि ग्रंथों का अध्ययन किया। कारंजा में आपको तपेदिक रोग हो गया, डॉक्टर वैद्यों ने उपचार में एलोपैथिक दवा लेने का आग्रह किया, तब आपने भगवान चन्द्रप्रभ के सन्मुख भीषण प्रतिज्ञा ली कि यदि मैं ठीक हो गया तो मैं शीघ्र ही निर्ग्रंथ दीक्षा लूंगा अन्यथा समाधिमरण करूंगा, किन्तु एलोपैथिक दवा नहीं लूंगा। आपकी इस प्रतिज्ञा का ऐसा प्रभाव हुआ कि आप शीघ्र ही स्वस्थ हो गए। और उसी समय कारंजा समाज के आग्रह पर आपने शाश्वत तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी वंदना की जहां विराजित आ. इन्दुमति, आ. पार्श्वमति माताजी आ. विद्युतमति माताजी, आ. निर्मलमति माताजी, आचार्य श्री सन्मतिसागर जी (भिण्ड वाले), मुनि श्री जम्मूसागर जी, आ. इलायचीमति माताजी, मुनि श्री स्वर्णभद्र सागर जी, क्षु. आदि सागर जी आपकी सहजता, सरलता, सौम्यता, विनयशीलता और विद्वता से प्रभावित हुए। उनका आपको बहुत वात्सल्य मिला। वहां से लौटकर आपकी भावना अपने पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री सन्मतिसागर जी के गुरु प. पू. आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के दर्शन की हुई और आप ब्रह्मचारी श्री प्रकाश जी के साथ कचनेर

पू. आ. विमल सागर जी के दर्शन के लिए पहुंचे। वहां आपको देखते ही पू. आचार्य श्री विमल सागर जी ने घोषणा कर दी कि इन दोनों की दीक्षा मेरे द्वारा ही होगी और यह मेरे से भी अधिक दीक्षाएँ देगा और सत्य हुई उनकी घोषणा। मात्र 20 वर्ष की आयु में 9 दिसंबर 1983 मगसर कृष्ण 5 को औरंगाबाद में प. पू. आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के कर कमलों से आपकी मुनि दीक्षा हो गई तब आपका नाम मुनि विरागसागर रखा गया। आपने भावनगर, पांचवा, निमाज, जयपुर, भिण्ड, टीकमगढ़, श्रेयांसगिरि, द्रोणगिरि मुनि अवस्था में चातुर्मास किये। मुनि अवस्था में आपने ग्रन्थाधिराज षट्खण्डागम की धवला जी की 16 सिद्धांत वाचनाएं की। आचार्य कल्प श्री विवेक सागर जी, आचार्य श्री धर्मसागर जी, आचार्य श्री विद्यासागर जी आदि आचार्यों से मुनि अवस्था में मिलन हुआ। आपने पांचवा, चूलगिरि, निमाज, सम्मेदशिखर, शाहगढ़, द्रोणागिरि, नैनागिरि, कुण्डलपुर, श्रेयांसगिरि आदि पर्वतों एवं दुर्गो पर कठोर साधना की। आपने ज्येष्ठ वैशाख की कड़ी धूप में खड़े होकर घंटो-घंटो की साधना की। भावनगर (गुज.), नवागढ़ (महा.), चूलगिरि (राज.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.) आदि स्थानों पर तो आपने 5-5 घंटों तक साधना की। 1987 में पांचवा में एक गुहेरा प्रायः आपके पाटे के नीचे ही बैठता था। 1988 में मुरैना में आपको बिच्छू ने डसा फिर भी आप अविचल रहे। श्रेयांसगिरि आदि स्थानों में सैंकड़ों बार पीले बिच्छू व अनेक सर्प मिले। 1991 के श्रेयांसगिरि के वर्षायोग में तो बसतिका में ही लगभग 30 सर्प निकले। एक दिन वहां शिला पर जब आप नैतिक कथा मंजूषा का लेखन कर रहे थे तब आपकी पुस्तक पर ही एक सर्प आ गया था। सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि, नैनागिरि, बांसा तारखेड़ा, श्रेयांसगिरि, सियरमाउ आदि के जंगलों में तथा अचानक मार्ग में हिरण, खरगोश आदि अनेक जानवर मिले। बरासो, टीकमगढ़ आदि जंगलों में नील गायों के झुण्ड मिले। लाउन के खेत में रात्री विश्राम के समय लगभग 30-40 नील गायें रातभर रहीं। 2020 में बांसा तारखेड़ा से गढ़ाकोटा के लिए बिहार में मार्ग पर एक हिरण अटकिलोलियां करता हुआ 7-8 किलोमीटर तक साथ-साथ ही चला। सन् 2003 में भिलाई में आप पर घोर उपसर्ग हुआ आपका अपहरण कर लिया गया, तब उस उपसर्ग काल में आप 36 घंटे तक ध्यानस्थ रहे। हर आपत्ति-विपत्ति को आपने समता और धैर्यता के साथ सहन किया।

आपने अभी तक कर्म दहन, णमोकार मंत्र व चारित्रशुद्धि व्रत के लगभग 700 उपवास किये हैं और आगे भी कर रहे हैं। लगभग 35 व्रतों के 541 नीरस किये हैं। आपका दही, तेल, कद्दू, भिण्डी, सम्पूर्ण हरी पत्ती, फली, सीताफल, रामफल, आलुबुखारा, बेर, फालसा, सिंघड़ा, बरबटी, नासपाती आदि का आजीवन त्याग है। प्रत्येक अष्टमी चतुर्दशी को मौन के साथ आहार भी नीरस करते हैं। आपने विभिन्न मंत्रों की लगभग 3841600 जापें की हैं।

आपके अन्दर आचार्यत्व को गुण देख समय-समय पर आपके लिए लगभग 10 आचार्यों पद की घोषणाएं की पर आपने आचार्य पद नहीं लिया, 1988 में भिण्ड में तो आचार्य श्री वीरसागर जी ने आपको आचार्य पद की घोषणा के साथ सभी को आचार्य विरागसागर जी के नाम से संबोधन करने के लिए कायोत्सर्ग कराया। तभी से आपको आचार्य पद न होते हुए भी तथा आपके मना करने पर भी आपकी आचार्य विरागसागर जी के नाम से प्रसिद्धि हुई। 1992 में सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिरि में प. पू. आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के आदेश पर 8 नवंबर कार्तिक शुक्ल 13 सं. 2049 में आपको बलात् उठाकर आचार्य पद के सिंहासन पर बैठाकर आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित किया गया। उस समय आपको प. पू. आचार्य श्री सुमतिसागर जी द्वारा भेजी गई नूतन पिच्छी भेंट की गई। तथा पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी का भी शुभाशीष प्राप्त हुआ। उस समय तक बुन्देलखण्ड की पुण्यधरा के अनेक मुमुक्षुओं ने जैनेश्वरी दीक्षा धारण की थी, परंतु 1992 में आचार्य पद को प्राप्त करने वाले प्रथम साधक थे अतः आपको बुन्देलखण्ड के प्रथम आचार्य होने का गौरव प्राप्त हुआ।

आपने अपने आचार्यत्व में 9 आचार्य, 93 मुनि, 4 गणिनी आर्यिकाएं, 71 आर्यिकायें, 5 ऐलक, 25 क्षुल्लक, 31 क्षुल्लिकाओं सहित कुल 241 दीक्षायें प्रदान की हैं। आप केवल युवा या केवल बृद्धों को ही दीक्षा नहीं देते अपितु आप हर मोक्षमार्गी को दीक्षा प्रदान करते हैं चाहे वह युवा हो या बृद्ध, चाहे बाल ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ 112 वाल ब्रह्मचारी एवं 129 गृहस्थ मोक्षभिलाषिओं को दीक्षा प्रदान की है। आप एक कुशल निर्यापकाचार्य हैं आपने सर्वाधिक 133 सल्लेखना समाधियाँ कराई हैं जिनमें 53 मुनि, 2 गणिनी आर्यिका, 32 आर्यिका, 5 क्षुल्लक, 6 क्षुल्लिकायें, 13 श्रावक, 22 श्राविकायें हैं इनके अलावा अनेक पशु-पक्षियों को संबोधन दे समाधि मरण कराया। वर्तमान आचार्यों में इतनी सल्लेखना समाधियां कराने वाले प्रथम आचार्य हैं। समाधि मरण कराके अनेकों की यह मनुष्य पर्याय को तो आपने सार्थक किया ही है साथ ही अपनी माँ श्रीमती श्यामादेवी को आर्यिका दीक्षा दे श्रमणी आ. विशान्तश्री माताजी व पिता श्री कपूरचंद जी को मुनि दीक्षा दे श्रमण श्री विश्ववंघ सागर को सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण कराकर उनकी मनुष्य पर्याय को सार्थक बना दिया है, तथा मोक्षमार्ग पर लगा कर पुत्र होने के दायित्व का सफल निर्वाहन किया है धन्य हैं आप।

आपको अभी तक लगभग अनेक आचार्यों, गणिनी आर्यिका माताजीओं, भट्टारकों, विद्वानों, शासन, प्रशासन के अधिकारियों तथा समाज के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा लगभग 60 उपाधियों से सम्मानित किया गया है। प. पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव द्वारा रचित वारसाणुवेक्खा ग्रन्थ पर आपके द्वारा लिखी गई संस्कृत टीका सर्वोदया पर अन्तर्राष्ट्रीय ओपन यूनिवर्सिटी के ज्योराष्ट्रियन कॉलेज मुंबई ने आपको डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। आपके द्वारा जनहित में चलाये अहिंसा व्यसन मुक्ति शाकाहार बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ स्वच्छता अभियान के माध्यम से 30 लाख लोगों को संकल्पित कराने जैसे महान कार्य पर संस्कृति युवा संस्था ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में होने वाला सम्मान समारोह जो कोरोना महामारी के कारण 23 दिसंबर 2021 को दुबई के होटल अटलांटिस में अनेक राष्ट्र प्रमुखों की उपस्थिति में संपन्न हुआ वहाँ आपको 'भारत गौरव' के अवार्ड से सम्मानित

किया गया। यह सम्मान जयपुर (राज.) श्री संदीप जी सुराशाही, श्री अनिल जी सुराशाही, श्री राकेश कुमार जैन ने आपके प्रतिनिधि के रूप में ग्रहण किया। आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व एवं डॉ. श्री लोकेश खरे (शिक्षा मंत्रालय) ने संत काव्य परम्परा में आचार्य विरागसागर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन विषय पर पी-एच.डी. की है। तथा आपके जीवन वृत्त पर श्रमण श्री सुव्रतसागर जी, साहित्यकार श्री सुरेश सरल जी, श्री ज्ञानचंद जी पिड़रूआ, पं. श्री कमलचंद जी, प्रो. उदयचंद जैन, उदयपुर ने विराग सेतु एवं श्रीमती अल्पना जैन ने आत्मानुशासक, निस्पृहि संत भाग-1, विराग काव्यांजलि, विराग सेतु एवं निस्पृहि संत भाग - 2, 3 पुस्तकों का लेखन किया है। श्रमण श्री विशेष सागर जी की प्रेरणा से आपके जीवन पर आधारित - श्रमण संस्कृति उन्नायक फिल्म का निर्माण किया गया है। भारतीय डाक विभाग द्वारा आपके रजत आचार्य पदारोहण पर आपके फोटो सहित 5 रू का डाक टिकट जारी किया है। आपके लिए कर्नाटक, तमिलनाडु तथा दिल्ली राज्य सरकारों ने राजकीय अतिथि घोषित किया। देश के माननीय पूर्व राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं राज्यों के मुख्य मंत्री, अनेक मंत्री, सांसद, विधायक आदि ने आपसे शुभाशीष प्राप्तकर सौभाग्य माना।

आपके द्वारा बारसाणुवेक्खा पर 1100 पृष्ठीय, सर्वोदया टीका, रयणसार पर 1300 पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी, शीलपाहुड पर 400 पृष्ठीय श्रमण संबोधनी, लिंग पाहुड पर 400 श्रमण प्रबोधनी संस्कृत टीकायें लिखी गई हैं। शास्त्रसार समुच्चय ग्रन्थ के 203 सूत्रों पर लगभग तीन हजार से अधिक संस्कृत चूर्णि की रचना की गई। आपके द्वारा शोधात्मक ग्रन्थ शुद्धोपयोग, सम्यक्दर्शन, सल्लेखना से समाधि, आगम चक्खू साहू, आगमिक चर्या, पाइप भक्ति, श्रमण आहारचार्या, परम दिगम्बर जैन मुनि, सर्वोदयी जैन धर्म, तीर्थंकर दिव्य दर्शन, व्यसन विचार, जिनेन्द्र दर्शन विधि, जिनेन्द्र पूजन, जैन भूगोल, जैन ज्योतिलोंक, कर्म विज्ञान, कहानी सबसे सुहानी, नैतिक कथा मंजूषा, उदयगिरि खण्डगिरि-खारबेल शिलालेख, कोटिशिला, श्री सम्मेद शिखर जी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आदि अनेक कृतियां विद्वत् जगत में लगभग 1300 कविताओं की रचना की गई है। आपके द्वारा अनेक वैज्ञानिकों को विस्मृत करने वाली अठारह प्रकार की लिपियों का सृजन राष्ट्र के लिए अनुपम देन है। आपने किसी भी शांतिधाराओं को काट छांट किए बिना लगभग 5 प्रकार की नूतन शान्तिधाराओं का सृजन किया है। ग्रन्थों पर आपके प्रवचन ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है। अनेक बालोपयोगी साहित्य आपके द्वारा लिखा गया है। आपने वर्षों-वर्ष प्राचीन यति सम्मेलन और युग प्रतिक्रमण की परंपरा को पुनर्जीवित किया है। जयपुर यति सम्मेलन प्राचीन काल में दिगंबर संतों को संबोधित करने वाले विलुप्त प्रायः आगमिक शब्द श्रमण-श्रमणी शब्द को लिखने एवं बोलने का शंखनाद किया। करगुवांजी झांसी (उ.प्र.) में हुए महायति सम्मेलन में णमो लोए सव्व साहूणं की परंपरा यथावत जीवित रहने का शंखनाद किया।

आपके द्वारा अभी तक लगभग 90 पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में लगभग आठ हजार जिन बिम्बों को सूरिमंत्र प्रदान पूज्यता प्रदान (प्रतिष्ठा)की गई है। आपके पावन सानिध्य में देश के प्रमुख ख्याति प्राप्त विद्वानों की राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठियां एवं अनेक सर्व धर्म सम्मेलन संपन्न हुए।

आपके द्वारा अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों, न्यायालयों, जेलों तथा सार्वजनिक स्थानों चौराहों आदि पर प्रभावी प्रवचन हुए।

देश के ख्याति प्राप्त संगीतकारों ने आपकी भक्ति में सौ से अधिक भजन बनायें हैं व गाये हैं। आपने देश के 14 प्रांतों में लगभग 1 लाख किलोमीटर से अधिक विहार कर धर्म प्रभावना की है तथा आपके संघ में भी 14 प्रांतों के आपसे दीक्षित शिष्य हैं।

आप अपने चतुर्विध संघ के साथ विहार करते हैं ऐसा लगता है कि साक्षात भगवान महावीर का ही समवशरण आ गया है।

आपके 75 उपसंघ देश तथा विदेश में भी धर्म प्रभावना कर रहे हैं। आप एक अति पुण्यशाली है कि आपके क्षुल्लक दीक्षा गुरु प. पू. आचार्य श्री सन्मति सागर जी एवं मुनि दीक्षा गुरु प. पू. आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज का आपको आसीम प्रेम वात्सल्य प्राप्त हुआ। पू. आचार्य श्री विमल सागर जी ने तो आपको वीतरागी संत, निस्पृही संत, मुनिराज, श्रमण रत्न एवं आदरणीय आचार्य आदि शब्दों से संबोधा। आचार्य श्री सन्मति सागर जी ने तो आपको अपने साथ ही अपने ही आसन पर बिठाया। नगर प्रवेश पर अपने साथ ही पाद प्रक्षालन कराते, साथ ही आहार हेतु पड़गाहन कराते एवं परिक्रमा लगवाते थे। आपके रजत दीक्षा महोत्सव पर उन्होंने अपनी पिच्छी कमण्डल, शास्त्र व माला भी आपको भरी सभा मंच पर प्रदान की तथा आपको विमलकीर्ति की उपाधि से सम्मानित किया। उन्होंने तो स्वयं ही आपको अपना उत्तराधिकारी चयन कर पट्टाचार्य की बात की तब आपने कहा था कि पूज्य श्री दोनों संघ विशाल हैं मैं निर्बल कैसे सम्हाल सकूंगा। फिर भी उन्होंने अपने होते हुए अपने शिष्यों को आप से ही प्रायश्चित दिलाया शायद उन्होंने मन से तो आपको अपना उत्तराधिकारी चयनित कर लिया था। पू. आचार्य सन्मतिसागर जी की समाधि के पश्चात् भी सर्वाधिक आचार्यों ने आपको ही उनके पट्ट हेतु प्रस्तावित किया था पर आपने उसे अंगीकार नहीं किया। प. पू. आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज के पट्ट शिष्य श्री भरत सागर जी की समाधि के पश्चात् भी गणिनी आर्यिका स्याद्वादमती माताजी ने भी उनके पट् पर आपको विराजमान करने का प्रस्ताव रखा था तब भी आपने उसे स्वीकार नहीं किया। धन्य हैं आपकी यह पद अलिप्तता निस्पृहता।

आपके द्वारा अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार कर उनका विकास कराया गया। जिनमें वरांसों, सिहांनिया, श्रेयांसगिरि, रत्नत्रयगिरि, चन्द्रगिरि आदि प्रमुख हैं अनेकों जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार कराया अनेक नवीन जिन मंदिरों के निर्माण की प्रेरणा दी वर्तमान का में सबसे प्राचीन क्षेत्र श्रेयांसगिरि जहां चौथी शताब्दी की भगवान श्री आदिनाथ जी एवं श्री महावीर स्वामी जी की मूर्तियाँ पत्थरों की गुफाओं में विराजमान हैं जो कभी सीरा पहाड़ से जाना जाता था आज उसे आपने श्रेयांसगिरि के नाम से विश्व विख्यात किया है। आपकी जन्म स्थली पथरिया में आपके मंगल आशीर्वाद से विशाल दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र विरागोदय धर्मधाम बनाया गया है जिसमें 31 फुट की भगवान धर्मनाथ जी की एवं 27-27 फुट की भगवान आदिनाथ एवं महावीर स्वामी जी के खड़गासन जिनबिम्ब, त्रिकाल चौबीसी, दो कलश व दो कमल मंदिरों व तीस चौबीसी के दर्शनों से जन्म के पापों का क्षय होकर आत्मा शांति व हर्ष को प्राप्त होगी। आपकी प्रेरणा से अनेक संतभवन व विद्यालय पाठशालाओं का निर्माण हुआ है।

आपके द्वारा लिखित साहित्य विरागवाणी फेसबुक पर एवं प्रवचन विरागवाणी यू ट्यूब लाइव चैनल पर तथा विरागवाणी मासिक पत्रिका भोपाल में उपलब्ध होते हैं। विशेष जानकारी www.gancharyaviragsagar.com पर प्राप्त करें।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा

आप सभी समाजजनों को सूचित करते हुये अति हर्ष हो रहा है, कि अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा के मार्गदर्शन, परामर्श एवं सानिध्य में सक्रिय व सारगर्वित कार्य करने का एक प्रयास हमारी तकनीकी टीम द्वारा किया जा रहा है। दिगंबर जैन गोलापूर्व समाज की अति महत्वपूर्ण एवं महत्वाकांक्षी योजना को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए समग्र भारत तथा विश्व के अन्य देशों में निवासरत प्रत्येक दिगंबर जैन गोलापूर्व व्यक्ति एवं परिवार का एक डेटाबेस तैयार करना तथा इस डेटाबेस को व्यक्ति, परिवार एवं समाज हित में उपयोगी बनाना। इसके अंतर्गत महासभा की तकनीकी टीम द्वारा वेबसाइट. www.golapurvajainsamaj.com का निर्माण किया गया है, जिसका अवलोकन समस्त समाजजनो द्वारा सरलता से इन्टरनेट पर किया जा सकता है। परिवारों से विभिन्न माध्यमों से संपर्क किया जा रहा है और इस वेबसाइट के माध्यम से समाज के समस्त परिवारों की सूची, उनकी संक्षिप्त जानकारी, व्यवसाय, नौकरीपेशे से जुड़े लोगों के बारे में एकत्रित की जा रही है। वेबसाइट के माध्यम से युवाओं के मेट्रीमोनियल डेटाबेस की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी। , समाज के समस्त परिवार ऑन लाइन या ऑफ़ लाइन फॉर्म भरकर अपने परिवार की जानकारी वेबसाइट में समाविष्ट कर सकते हैं। समस्त सम्माननीय सक्रिय समाज जनो से अपेक्षा है, कि जनगणना से संबंधित जानकारी समस्त परिवारों तक पहुचाने एवं उनके ऑन लाइन फॉर्म भरने मे अपना अतुलनीय एवं महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे ,आपके समर्पित सहयोग से ही वर्ष 2023 के अंत तक इस वेबसाइट द्वारा दिगंबर जैन गोलापूर्व समाज की जनगणना की सम्पूर्ण जानकारियों को उपलब्ध कराने प्रयास हमारी टीम द्वारा किया जा सकेगा।

उद्देश्य

1. समाज को नेतृत्व प्रदान करने वाले अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा के महत्वपूर्ण संगठन की सुदृढ़ता।
2. समग्र दिगंबर गोलापूर्व जैन समाज के मास्टर डेटाबेस/ डिजिटल डायरेक्ट्री का निर्माण।
3. धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों की समस्त महत्वपूर्ण गतिविधियों की सूचना एवं खबरों का त्वरित प्रसारण।
4. समाज के विवाह योग्य युवक-युवती के डेटाबेस का निर्माण।
5. अल्पसंख्यक एवं आरक्षण संबंधी शासन द्वारा संचालित समस्त योजनाओं की सधर्मी बंधुओं को समुचित जानकारी उपलब्ध कराना।
6. किसी भी राष्ट्रीय ,क्षेत्रीय एवं परिवारिक आपदा के समय सधार्मि बंधुओं से संपर्क स्थापित करना एवं यथासंभव सहायता उपलब्ध कराना।
7. वंशवृक्ष के रूप में परिवार के समस्त सदस्यों की जानकारी की उपलब्धता।
8. धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन में कार्यकर्ता शक्ति का समुचित सदुपयोग।
9. समाज की प्रतिभाओं को समाजोपयोगी कार्यों के लिए प्रेरित करना।
10. डिजिटल संचार माध्यमों का अधिकाधिक उपयोग कर समय, संसाधन एवं खर्च बचाना।
11. समाज के व्यवसायियों की नेटवर्किंग करना तथा आपस में व्यापार के अवसर उपलब्ध करवाना।
12. प्लेसमेंट सर्विसेज की तरह समाज के प्रतिष्ठानों में उपलब्ध जोब्स की जानकारी।
13. समय-समय पर आने वाली सरकारी/गैर सरकारी योजनाओं की सूचना समाज तक पहुंचाना।
14. प्रत्येक दिगंबर जैन गोलापूर्व सदस्य एवं परिवारों को महासभा के महत्वपूर्ण संगठन से आत्मीय जुड़ाव।
15. प्रत्येक सदस्य की रुचि के अनुरूप महासभा में होने वाली गतिविधियों की जानकारी उपलब्ध करवाना।
16. भावीपीढ़ी का समाज एवं अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा से जुड़ाव एवं पारस्परिक सौहार्द की अभिवृद्धि।

दिगम्बर जैन गोलापूर्व समाज के समस्त परिवारो लिये, एक मंच पर , साथ मे लाने के लिए, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा ने जो महायज्ञ ऑनलाइन जनगणना के माध्यम से प्रारम्भ किया है , उसमें समाज की समस्त सामाजिक संस्थाओ के पदाधिकारीगण, सम्मनीय विद्वानो, वरिष्ठजनो, कार्यकर्ताओ ,मातृशक्ति एवं युवाओ से विशेष आग्रह है कि अपनी ओर से इसमे छोटी सी आहुति का योगदान अवश्य करें अर्थात ऑनलाइन जनगणना के इस विश्वस्तरीय अभियान मे हम सभी का सामाजिक दायित्व है कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अपने परिवार के साथ साथ, समाज का कोई भी परिवार जो की देश अथवा विदेश मे कही भी निवासरत है उनका रजिस्ट्रेशन, ऑनलाइन जनगणना मे किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति के कारण कही छूट तो नही रहा है , यह कार्य आप सभी के विशिष्ठ सहयोग से ही संपन्न किया सकता है , हमारी जनगणना टीम के समस्त सक्रिय सदस्य निस्वार्थ सेवा भाव से विभिन्न माध्यमों से आप तक जानकारी पहुंचाने का प्रयास कर रहे है, जिसके अब सुखद परिणाम दिखाई देने लगे हैं जिसके अंतर्गत छिंदवाड़ा जिला, अहमदाबाद, ग्वालियर, रजवास, दलपतपुर आदि कई नगरों की संपूर्ण जनगणना का कार्य संपन्न हो चुका है इसके साथ ही अब तक 7300 से अधिक समाज के सम्मानीय सदस्यों का. डेटाबेस वेबसाइट मे समाविष्ट

किया चुका है, अर्थात जनगणना अभिलेख के लिए महासभा के लिए प्राप्त हो चुका है इसके लिए हमारी जनगणना टीम के समस्त साथियों ने महती भूमिका का निर्वहन किया है इसके लिए सभी साथी बधाई के पात्र हैं।

वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन करके आप निम्न जानकारी प्राप्त कर सकेंगे-

1. हमारी अपनी समाज का गौरवशाली इतिहास की अति दुर्लभ जानकारियां,
2. समाज के होने वाले आगामी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम के आयोजन की त्वरित जानकारी,
3. समाज में होने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी,
4. आपके , निज वंश के सुदूर परिवारों से जुड़ाव हो सकेगा,
5. विदेश, देश ,राज्य, जिला, तहसील, गांव में निवासरत समाज जन की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी,
6. मेट्रोमोनियल से संबंधित जानकारी ले सकेंगे,
7. स्मृति शेष के माध्यम से जो व्यक्ति अब हमारे बीच नहीं रहे उनकी मेमोरी को आगे सहेज कर रखना,

और भी बहुत सारी जानकारियां आपको इस वेबसाइट के माध्यम से समय-समय पर मिलती रहेंगी
अति शीघ्र अपनी जानकारी/जनगणना वेबसाइट पर समाविष्ट करें।

ऑनलाइन जनगणना में रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार भी समझी जा सकती है

1 कंप्यूटर, लेपटॉप या मोबाइल पर वेबसाइट ओपन करे www.golapurvajainsamaj.com

2 ओपन करने के पश्चात आपको दो ऑप्शन दिखेंगे LOGIN और REGISTER

3 REGISTER पर क्लिक करे एवं अपना नाम, मोबाइल नम्बर तथा स्वयं के द्वारा पासवर्ड बना कर डाले इसके बाद Create Account पर क्लिक करे

4 आपको एक OTP प्राप्त होगा, OTP अपने मोबाइल पर डाले, इसके बाद आपको एक फार्म प्राप्त होगा, उसमे परिवार के मुखिया की जानकारी भरना है, फार्म सफलतापूर्वक सम्मिट होने के बाद घर के अन्य सदस्यों की जानकारी भरने के लिए साइट में ही Copy ऑप्शन पर चुन कर परिवार के प्रत्येक सदस्यों के अलग अलग फॉर्म द्वारा जानकारी भरी जाएगी।

5. परिवार के मुखिया एवं सभी सदस्यों की अलग अलग फोटो प्रत्येक फॉर्म के साथ जोड़ना आवश्यक है वरना आपका फॉर्म APROOVE नहीं किया जा सकेगा, यह कार्य आपके डाटा की सुरक्षा के लिए किया जा रहा है।

6. सभी संयुक्त परिवारों के लिए, एक महत्वपूर्ण बात का ध्यान रखना होगा है कि एक संयुक्त परिवार में जितने भी विवाहित जोडे होंगे, उनके परिवार की एंट्री अलग से डाली जाए एवं जितने भी अविवाहित बेटा - बेटियां हैं, उनकी एंट्री अपने माता-पिता के साथ ही डालेगी अर्थात संयुक्त परिवार में जितने भी कपल हैं उनकी अलग अलग परिवार आईडी बनेगी

7 किसी कारणवश आपके मोबाइल नम्बर पर OTP नहीं आता है, तो अपने शहर के जनगणना संयोजक टीम के सदस्य से संपर्क करे, जिसकी जानकारी website पर जनगणना वाले ऑप्शन में संयोजक टीम के द्वारा प्राप्त हो सकेगी।

सहयोग के लिए हमेशा तत्पर हमारी टीम के स्थानीय सदस्य जो कि आप के लिए सहयोग प्रदान करेंगे इन सभी की जानकारी वेबसाइट पर संयोजक टीम मे, जनगणना टीम के द्वारा प्राप्त हो सकेगी।

यदि किसी भी महानुभाव को ऑनलाइन एंट्री करने में कोई भी समस्या आ रही है तो इसके लिए ऑफलाइन फॉर्म भी साथ में संलग्न है यदि कोई परिवार चाहे तो, यह फॉर्म भर कर किसी भी जनगणना संयोजक टीम के सदस्य के पास भेज सकते हैं।

वेबसाइट की टेक्निकल से संबंधित किसी भी महत्वपूर्ण जानकारी के लिए

राजेश जैन 9303270923, दीपेश जैन 9993818201, विवेक जैन 9754340315

एवं हमारी जनगणना संयोजक टीम के किसी भी सदस्य से संपर्क किया जा सकता है
जिनकी जानकारी वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है।

महासभा कार्यालय में संपर्क करने के लिए हेल्पलाइन नंबर : 9977888089

कार्यकारिणी की सूची

1.	श्री भागचंद भास्कर (नागपुर)	अध्यक्ष	
2.	श्री चक्रेश कुमार शास्त्री (भोपाल)	महामंत्री	
3.	श्री प्रेमचंद जैन बमनौरा वाले (सागर)	कोषाध्यक्ष	
4.	श्री देवेन्द्र लुहारी (सागर)	कार्यकारी महामंत्री	
5.	श्री महेन्द्र कुमार चौधरी (जबलपुर)	उपाध्यक्ष	
6.	श्री महेन्द्र जैन बड़ागॉव (टीकमगढ़)	उपाध्यक्ष	
7.	श्री सुरेश जैन मारोरा (इन्दौर)	उपाध्यक्ष	
8.	डॉ. सचीन्द्र मोदी (तेंदूखेड़ा)	उपाध्यक्ष	
9.	श्री प्रदीप कुमार जैन खाद वाले (सागर)	उपाध्यक्ष	
10.	चौधरी सुनील कुमार जैन (जयपुर)	उपाध्यक्ष	
11.	श्री प्रेमचंद जैन बरेठी (बंडा)	उपाध्यक्ष,सहसंयो. बुंदे.भ.	
12.	श्री अभय कुमार जैन (छिंदवाड़ा)	उपाध्यक्ष	
13.	विजय जैन बाबाजी (सागर)	उपाध्यक्ष	
13.	श्री शिव प्रसाद जैन अमरमउ वाले (शाहगढ़)	मंत्री	
14.	श्री दीपचंद जैन शिक्षक (दमोह)	मंत्री	
15.	श्री जिनेश जैन बहरोल वाले (सागर)	मंत्री	
16.	श्री सुभाष सिंघई पीएनबी (कटनी)	मंत्री	
17.	श्री महेन्द्र जैन बहरोल वाले (सागर)	मंत्री	
18.	श्री अमित चौधरी (सागर)	मंत्री	
19.	श्री राकेश जैन चच्चा (सागर)	मंत्री	
20.	श्री राजेश जैन (भिलाई)	मंत्री	
21.	श्री सुबोध कुमार जैन हीरापुर (सागर)	कार्यालय मंत्री	
22.	श्री चन्द्रभान जैन डूडा (टीकमगढ़)	संगठन मंत्री	
23.	श्री सुधेश कुमार जैन (राजनांदगॉव)	संगठन मंत्री	
24.	श्री मनीष जैन कम्प्यूटर (गढ़ाकोटा)	संगठन मंत्री	
25.	श्री अनिल जैन (दुर्ग)	संगठन मंत्री	
26.	श्री प्रमोद कुमार जैन पाटन (बड़ामलहरा)	संगठन मंत्री	
27.	एडव्होकेट श्रेणिक जैन (सागर)	संगठन मंत्री	
28.	श्री महेन्द्र कुमार जैन मड़देवरा (नागपुर)	संगठन मंत्री	
29.	श्री सुरेन्द्र सिंघई (दिल्ली एनसीआर)	संगठन मंत्री	
30.	श्री ऋषभनाथ आदित्य (मुम्बई)	संगठन मंत्री	
31.	श्री नरेन्द्र कुमार दिवाकर (कुरवाई)	संयुक्त मंत्री	
32.	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन निमानी (बक्सवाहा)	संयुक्त मंत्री	
33.	श्री पवन कुमार जैन (ग्वालियर)	संयुक्त मंत्री	
34.	श्री पारस जैन (दमोह)	संयुक्त मंत्री	
35.	श्री संतोष कुमार जैन (मनेन्द्रगढ़)	संयुक्त मंत्री	
36.	श्री राजेन्द्र जैन शाहगढ़ (भोपाल)	संयुक्त मंत्री	
37.	श्री विनोद जैन, एल.आई.सी. (सागर)	संयुक्त मंत्री	
38.	श्री जय कुमार जैन पुरा वाले (दमोह)	संयुक्त मंत्री	
39.	श्री संजय सेठ रहबर (जबलपुर)	संयुक्त मंत्री	
40.	श्री मनोज कुमार जैन बंगेला (सागर)	संयुक्त मंत्री	
41.	श्री कैलाश चौधरी, घुवारा	संयुक्त मंत्री	
42.	श्री अंकुर जैन महावीर	संयुक्त मंत्री	
43.	श्री वीरेन्द्र जैन ष्सत्कारष् (कोतमा)	संयुक्त मंत्री	
44.	श्री नरेन्द्र सिंघई (बीना)	संयुक्त मंत्री	
45.	सुनील जैन (जबलपुर)	संयुक्त मंत्री	
45.	श्री अवनीश संघी (सागर)	प्रचार मंत्री	
46	श्री सौरभ जैन बूंद (सागर)	संयोजक बुंदेलखंड भवन मधुवन	
47.	श्रीयांस जैन संग सेल्स (सागर)	संयोजक संस्कार पत्रिका	
48.	पं. विनोद कुमार जैन रजवांस (इन्दौर)	संयोजक समाज गौरव सम्मान समिति	
49.	श्री विनोद कुमार जैन (कोतमा)	संयोजक चेतना सम्मान	
50.	श्री डी.के.जैन पूर्व आयकर अधिकारी सागर	संयोजक वर्णी चिकित्सा निधि	
51.	श्री सुरेन्द्र खुर्देलीय (सागर)	संयोजक आई.टी.	
52.	डॉ. अरविन्द जैन प्राचार्य (सागर)	संयोजक केरियर काउन्सिलिंग एवं सह संयोजक चेतना	
53.	डॉ. अशोक जैन प्राचार्य (सागर)	सह संयोजक केरियर काउन्सिलिंग	
54.	श्री राजेन्द्र जैन महावीर (सनावद)	सम्पादक गोलापूर्व जैन	
55.	श्रीमती रंजना पटौरिया (कटनी)	सह संपादक गोलापूर्व जैन	
56.	राहुल जैन (बरायठा)	प्रबंध संपादक	
56.	श्री कमल चौधरी (सागर)	संरक्षक बुंदेलखण्ड भवन मधुवन	
57.	श्री पी.सी.जैन (सागर)	सदस्य बुंदेलखण्ड भवन मधुवन	
58.	श्री देवेन्द्र जैन कुडीला	सदस्य बुंदेलखण्ड भवन मधुवन	
59.	श्री निर्मल जैन बारो	सदस्य बुंदेलखण्ड भवन मधुवन	
60.	श्री राजेश जैन नवकार (इन्दौर)	संयोजक तकनीकी टीम	
61.	श्री विवेक जैन (इन्दौर)	सह संयो.तकनीकी टीम	
62.	श्री दीपेश जैन (बम्होरी)	सह संयो.तकनीकी टीम	
63.	श्री सम्यक लुहारी	सह संयो.तकनीकी टीम	

नोट :- कुछ पदों पर बाद में मनोनयन किया जायेगा।

■ बादल पानी बरसाते समय यह नहीं सोचता कि उसे कहाँ बरसना है।

पंचकल्याणक की प्रथम वर्षगांठ पर त्रिदिवसीय कलशारोहण, यागमण्डल विधान और महामस्तकाभिषेक संपन्न

सागर। झारखंड राज्य के गिरीडीह जिले मे स्थित शाश्वत तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर मधुबन मे चन्द्रप्रभ जिनालय बुन्देलखण्ड भवन के शिखर पर कलशारोहण, यागमण्डल व भक्तामर विधान महामस्तकाभिषेक का त्रिदिवसीय कार्यक्रम मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज के सानिध्य मे सम्पन्न हुए। 16 से 18 दिसंबर तक आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम पंडित विनोद कुमार सनत कुमार रजवांस और डाक्टर भरत शात्री द्वारा विधान संपन्न कराया गया। मुनि श्री के पाद प्रच्छालन का सौभाग्य सौरभ जैन बूंद परिवार और शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य ऋषभ जैन चंदेरिया कोतमा, डाक्टर शचीन्द्र मोदी तेंदुखेडा तथा चित्र अनावरण का सौभाग्य संतोष कुमार जैन बैटरी परिवार, डाक्टर भागचंद जैन भास्कर नागपुर, संतोष जैन घडी, चौधरी सुभाष जैन, देवेंद्र जैन लुहारी, को प्राप्त हुआ।

अखिल भारत वर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम के प्रथम दिन ध्वजारोहण मंदिर जी के सम्मुख सौरभ जैन बूँद परिवार सागर और प्रेमचंद बरेठी, अमित चौधरी, एडवोकेट श्रेणिक जैन, अंकुर जैन सहित बुन्देलखण्ड भवन के सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ता तथा कार्यक्रम स्थल के सम्मुख ध्वजारोहण महासभा के समस्त निर्देशक, और पदाधिकारियों ने किया. प्रथम दिन यागमंडल विधान का आयोजन किया गया।

शिखर पर मुख्य कलशारोहण राजकुमार- श्रीमती सीमा, रजनीश- श्रीमती यश कीर्ति, सरल- श्रीमती आयुषी, सफल (सीए),संयम, चिंतन जैन समस्त अरिहंतो परिवार छिंदवाड़ा ने किया। हेमन्त कुमार, बसंत कुमार, दिनेश कुमार, अशोक कुमार जैन नरवां वाले सागर , हर्ष, विहान सिंघई रुचि लाइफ स्केप भोपाल परिवार ने मंदिर जी के शिखर पर पताका स्थापित की। कार्यक्रम के अंतिम दिन भक्तामर विधान के बाद चंदप्रभु भगवान का महामस्तकाभिषेक हुआ। सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य ऋषभ कुमार चंदेरिया कोतमा, महायज्ञ नायक डाक्टर शचीन्द्र मोदी तेंदखेडा यज्ञनायक श्रीकांत जैन भोपाल, , कुबेर इन्द्र राजेन्द्र जैन शाहगढ भोपाल, सानत इन्द्र डाक्टर भागचंद जैन भास्कर नागपुर, माहेन्द्र इन्द्र नीरज जैन राजमार्ग, ईशान इन्द्र विनोद जैन बिलाई सागर, स्वर्ण सौभाग्यवती ऋचा जैन बैटरी, सुविधा जैन बैटरी, रेखा भरत शास्त्री इंदौर, प्रणीता जैन राजमार्ग, सविता पवन जैन भगवान, सुनील कुमार जैन मडावरा इंदौर को प्राप्त हुआ। चंद्रप्रभ जिनालय मे प्रतिदिन होने वाले श्रीजी के अभिषेक हेतु चांदी के कलश प्रदान करने का सौभाग्य महेंद्र जैन को प्राप्त हुआ। साथ ही चार अन्य कलश का सौभाग्य श्रीमती दीप्ती अवनीश जैन संघी सागर और अन्य को प्राप्त हुआ। याज्ञ मंडल विद्यान घटयात्रा मे मंजू जिनेश जैन बहरोल सागर, चंदा श्रीकांत जैन भोपाल, निर्मला जैन जबलपुर, सुनीता जैन भोपाल, सुनीता वसंत जैन सागर, सरोज अशोक जैन भगवां,सुनीता चंदेरिया सागर, मीना राकेश जैन चच्चा जी सागर, बाबूलाल, विकास, विजय जैन कटंगी जबलपुर, संतोष कुमार जैन बैटरी परिवार सागर को प्राप्त हुआ। शिखर पर कलशारोहण का सौभाग्य अभय कुमार जैन छिंदवाडा, महेंद्र जैन इंदौर, श्रीकांत जैन भोपाल, गुलाब चंद संध्या जैन सतना, ब्रम्हचारिणी सुनीता दीदी बांसा , अशोक कुमार जैन नरवां सागर, डाक्टर पवन जैन भगवा, प्रेमचंद जैन बमनोरा सागर को मिला।

जिनेश जैन बहरोल, सुरेंद्र खुर्देलिया सागर, सुनील सिंघई जबलपुर, चक्रेश शास्त्री भोपाल, भरत जैन सागर, राकेश जैन सागर, ऋषभ जैन भोपाल, रमेश जैन सागर, सुनील जैन मडावरा इंदौर, अनेकांत जैन रजवांस, डाक्टर पवन जैन इंदौर, बाबूलाल जैन सतना, कमलकांत अमित कुमार चौधरी सागर, मुन्नालाल जैन ग्वालियर, नरेंद्र जैन कुरवाई, डाक्टर संयोग जैन चंडीगढ, अंकित जैन सागर को प्राप्त हुआ। भक्तामर विधान के पूर्व श्री जी के अभिषेक के उपरांत शांतिधारा का सौभाग्य सुरेंद्र खुर्देलिया, पिंकेश कुमार पटौरिया परासिया छिंदवाडा, श्रेयांश जैन संग सेल्स सागर, संयोग जैन चंडीगढ को प्राप्त हुआ। कलश परिस्कृत करने का सौभाग्य श्रीमती गुणमाला संतोष जैन घडी परिवार सागर, समता प्रेमचंद बमनौरा, चंदा श्रीकांत जैन भोपाल, संध्या जैन सागर, अंकुर जैन महावीर कम्प्यूटर सागर को प्राप्त हुआ।

महासभा का दो दिवसीय परिचय सम्मेलन का आयोजन सागर में संपन्न

सागर। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा के तत्वाधान मे दो दिवसीय दिगंबर जैन युवक युवती परिचय सम्मेलन, चेतना सम्मान, गौरव सम्मान, महिला अधिवेशन और राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सागर मे आयोजित किया गया। ध्वजारोहण के साथ शुरू सम्मेलन का अतिथियो ने फीता काटकर उद्घाटन किया। सम्मेलन के दौरान संस्कार पत्रिका का विमोचन मंचासीन अतिथियो द्वारा किया गया।

विवाह योग्य दिगंबर जैन युवक युवतियो पर केंद्रित सचित्र जानकारी संस्कार पत्रिका मे दी गई। कार्यक्रम मे महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष जैन घडी, ऋषभ चंदेरिया, भागचंद जैन भास्कर नागपुर, देवेन्द्र जैन लुहारी,चौधरी सुभाष जैन, संतोष जैन बैटरी, चक्रेश शास्त्री भोपाल, राकेश जैन चच्चा जी, प्रेमचंद जैन बमनोरा, सुरेंद्र खुर्देलीय, श्रेयांश जैन संग सेल्स, जिनेश जैन बहरोल,सौरभ जैन बूंद, प्रेमचंद जैन बरेठी,महेन्द्र जैन बहरोल, सुबोध जैन, जय कुमार जैन, परमेष्ठी जैन, अंकुर जैन महावीर कम्प्यूटर सागर, अवनीश जैन संघी, सहित बड़ी संख्या मे महासभा के पदाधिकारीगण मौजूद रहे। चेतना सम्मान मे हाई स्कूल, हायर सेकेंडरी सहित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओ के मेधावी छात्र छात्राओ को मंच से स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। सम्मेलन के दौरान बुंदेलखंड के सागर संभाग सहित मध्य प्रदेश और देश के अन्य स्थानो से विवाह योग्य दिगंबर जैन युवक युवतियो के अभिभावक सागर आये। मंच से युवक युवतियो द्वारा परिचय दिये गए। प्रथम दस परिचय देने वाले युवक युवतियो को महासभा द्वारा सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय कार्यकारणी की बैठक हुई जिसमें देश भर से आये पाधिकारियों ने भाग लिया। सर्व सम्मति से नवीन पदाधिकारियो की घोषणा की गई। महासभा के नये अध्यक्ष भागचंद जैन भास्कर नागपुर,महामंत्री चक्रेश शास्त्री भोपाल, कोषाध्यक्ष प्रेमचंद जैन बमनौरा, बुंदेलखंड भवन संयोजक सौरभ सिंघई बूंद को ब्रम्हचारी जय कुमार निशांत टीकमगढ ने पद की शपथ दिलाई। इस अवसर पर महासभा के द्वारा युवा उद्योगपति कपिल मलैया को गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। साथ ही महासभा के पूर्व पदाधिकारियो को सम्मानित किया गया। महिला अधिवेशन मे महासभा की समस्त इकाइयों की सदस्याओं ने भाग लिया अधिवेशन में मुख्य अतिथि के रुप में श्रीमती निधि जैन, तथा विशिष्ट वक्ता के रूप में श्रीमती डॉ ज्योति जैन जबलपुर, श्रीमती रश्मि जैन ऋषु, सहित अन्य वक्ताओं ने अपने विचार रखें। दो दिवसीय सम्मेलन का संचालन डाक्टर अरविंद जैन प्राचार्य, श्रीमती आरती जैन, आशा अजय, रश्मि जैन ने किया।

शिरोमणि संरक्षक

श्री संतोष कुमार जैन
(बैटरी वाले, सागर)

श्री संतोष जैन
(घड़ी साबुन, सागर)

धर्मराज श्री बाबूलालजी
(मेनवार वाले, टीकमगढ़)

श्री राजेन्द्र चंदेरिया
(कोतमा)

श्री महेन्द्र चौधरी
(जबलपुर)

डॉ. श्रेयांसजी बड़कुल
(जबलपुर)

श्री बाबूलालजी
(पनवारी वाले, घुवारा)

श्री सुरेश जैन (IAS)
(भोपाल)

श्री ऋषभजी चंदेरिया
(कोतमा)

श्री कंछेदीलाल जैन
(सहजपुर)

श्री महेन्द्र कुमार जैन
(एस.ई., इंदौर)

श्री अरुण कुमार जैन
(टायर वाले, सागर)

श्री नवलचंदजी गोदरे
(मुंबई)

डॉ. संजीव सिंघई (MD)
(संचालक : संजीवनी अस्पताल, दमोह)

परम संरक्षक

श्री विनोद कुमार जैन
(कोतमा)

श्री इंदरचंदजी
(सागर)

श्री सनत कुमार जैन
(सागर)

श्रीमती मैनारानी जैन
(सागर)

श्री राजकुमारजी जैन
(सतना)

श्री पवन कुमार चंदेरिया
(कोतमा)

श्री अजय कुमार जैन
(जबलपुर)

श्री महेश कुमार मलैया
(सागर)

श्री दिनेश जैन (दिलीप)
(आयकर अधिकारी, जबलपुर)

श्री लालचंद-श्रीमती कस्तूरी शास्त्री
(सागर)

श्री वीरेन्द्र कुमार-मनोज कुमार जैन
(खुरई)

श्री विनोद सराफ-श्रीमती सुधा सराफ
(सागर)

श्री सुबोध चंदेरिया
(सागर)

इंजी. रघुवर प्रसाद
(शहडोल)

श्री मुकेश प्रेमचंद जैन
(ग्वालियर)

विशिष्ट संरक्षक

श्री विमलचंद जैन
(बुढार)

श्री पन्नालाल जैन
(इलाहाबाद)

इंजी. कैलाश जैन
(सागर)

डॉ. नारायण फौजदार
(भगवां)

डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन
(गाजियाबाद)

डॉ. भागचंद भास्कर
(नागपुर)

श्री सिं. बाबूलाल जैन
(खडेरी)

श्री भागचंद जैन
(भिवार)

श्री महेन्द्र सिंघई
(पड़वार वाले, सागर)

श्री अभय कुमारजी
(जैतहरी)

श्री संतोषजी
(मनेन्द्रगढ़)

इंजी. बी.एल. जैन-स्नेहलता जैन
(मुरैना)

श्री रूपेश सिंघई
(नायब तहसीलदार, रहली)

श्री संजय कुमार जैन
(सहजपुर, जबलपुर)

श्री सं.सिं. भागचंद-शशिकला जैन
(पूनावाले, टीकमगढ़)

एड. आलोक जैन
(कटनी)

स्व. सिं. कालूरामजी-स्व. श्रीमती नन्हीदेवीजी
(बाकल वाले, सिहोरा)

श्री पन्नालालजी-श्रीमती अंगूरीबाई जैन
(टोपी वाले, कटनी)

श्री प्रकाश पटौरिया
(कटनी)

श्रीमती सुनीता जैन
(इंदौर)

श्री ऋषभ-श्रीमती सुनीता जैन
(कटनी)

श्री बसंत जैन (बड़वानी)
(नेहा नगर, सागर)

पू. श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माता जी

पूर्व नाम : कु. निशा जैन
ग्राम : हरदुआ म.प्र.
जन्म : 11.12.1979
शिक्षा : मैट्रिक
ब्रह्मचर्य व्रत : 11.02.1995 जतारा (म.प्र)
आर्यिका दीक्षा : 09.04.98. भिण्ड (म.प्र.)
(महावीर जयंती के अवसर पर)
दीक्षा गुरु : प. पू. ग. विरागसागर जी

पू. श्रमणी आर्यिका विदुषीश्री माता जी

पूर्व नाम : कु. सुमन जैन
ग्राम : टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म : 15.10.1972
शिक्षा : एम. एस. सी., एल. एल. बी.
ब्रह्मचर्य व्रत : 8.11.1997 भिण्ड (म.प्र.)
आर्यिका दीक्षा : 09.04.98. भिण्ड (म.प्र.)
(महावीर जयंती के अवसर पर)
दीक्षा गुरु : प. पू. ग. विरागसागर जी

श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माताजी एवं श्रमणी आर्यिका विदुषीश्री माता जी के रजत आर्यिका दीक्षा दिवस एवं गुरु उपकार दिवस के उपलक्ष्य में माता जी के चरणों में सादर वंदामि...

पुण्यार्जक परिवार

श्रीमान् सुनील कुमार जैन - श्रीमती आशा जैन रारा

डाल्टनगंज (झारखण्ड)

मुद्रक : अरिहंत ऑफसेट, बताशा गली, सागर (मो. 9424437632)